Springboard
ACADEMY

AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

RAS PRELIMS

2024 - 2025

राजस्थान का इतिहास

प्रारम्भिक परीक्षा

राजवीर सर

पाठ्यक्रम

- राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल- पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक।
- ऐतिहासिक राजस्थानः प्रारम्भिक ईस्वी काल के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केन्द्र।
- प्रचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति।
- प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-गुहिल, प्रतिहार, चौहान, परमार, राठौड़, सिसोदिया और कच्छावा।
- मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था।
- आधुनिक राजस्थान का उदय : 19वीं-20वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में सामाजिक जागृति के कारक। राजनीतिक जागरण : समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका। 20वीं शताब्दी में जनजाति तथा किसान आन्दोलन, 20वीं शताब्दी के दौरान विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आन्दोलन। राजस्थान का एकीकरण।
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व।

Springboard ACADEMY

राजस्थान का प्राचीन इतिहास

1.	परिचय	1
2.	पाषाणकाल	2
3.	ताम्र पाषाणकाल	3-4
4.	कांस्य युग	5-6
5.	लौह युग	6
6.	महाजनपद काल	7-8
7.	मौर्यकाल	9-10
8.	गुप्तकाल	11-15

राजस्थान का मध्यकालीन इतिहास

	गुहिल राजवंश	16
9.	मेवाड़ का इतिहास	17-35
10.	डूंगरपुर का इतिहास	36-37
11.	बांसवाड़ा का इतिहास	38
12.	प्रतापगढ़ का इतिहास	39
13.	शाहपुरा का इतिहास	40
	राठौड़ राजवंश	41
14.	मारवाड़/जोधपुर का इतिहास	41-48
15.	बीकानेर का इतिहास	49-52
16.	किशनगढ़ का इतिहास	53
	कच्छावा राजवंश	54
17.	आमेर का इतिहास	54-62
18.	अलवर का इतिहास	63
	चौहान राजवंश	64
19.	सांभर/अजमेर का इतिहास	65-70
20.	रणथम्भौर का इतिहास	71-72

21.	नाडोल का इतिहास	73
22.	जालौर का इतिहास	74-75
23.	सिरोही का इतिहास	76
24.	बूंदी का इतिहास	77
25.	कोटा का इतिहास	78
	परमार राजवंश	79
26.	आबू के परमार	79-80
27.	मालवा के परमार	81
28.	वागड़ के परमार	82
	प्रतिहार राजवंश	83
29.	मण्डोर के प्रतिहार	83-84
	यदु वंश	85
30.	जैसलमेर का इतिहास	85-86
31.	करौली का इतिहास	87
32.	**जाट राजवंश**	88-89
33.	मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था	90-93

आधुनिक राजस्थान का इतिहास

34.	1857 ई. की क्रांति	94-99
35.	राजस्थान के किसान आन्दोलन	100-106
36.	राजस्थान के जनजाति आन्दोलन	107-108
37.	प्रजामण्डल आन्दोलन	109-116
38.	राजस्थान का एकीकरण	117-121
39.	राजस्थान के सामाजिक एवं राजनीतिक संगठन	122-125
40.	राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी	126-131
41.	राजस्थान के मुख्य समाचार पत्र	132-134

राजस्थान का प्राचीन इतिहास

- अलेक्जेंडर कनिंघम को भारत में पुरातत्व का जनक कहा जाता हैं।
- आर्चीबाल्ड कैम्पबेल कार्लाइल को राजस्थान में पुरातत्व का जनक कहा जाता है।
  - ❖ पाषाण काल
  - ❖ ताम्रपाषाण काल
  - ❖ कांस्य युग
  - ❖ लौह युग
  - ❖ महाजनपद काल
  - ❖ मौर्य काल
  - ❖ मौर्योत्तरकाल
  - ❖ गुप्तकाल
  - ❖ गुप्तोतर काल

पाषाणकाल

क्रम. संख्या	पुरापाषाण काल		मध्यपाषाण काल	नव पाषाण काल
1.	डीडवाना	1.	बागौर	
2.	जायल	2.	तिलवाड़ा	
3.	बूढ़ा पुष्कर	3.	पचपदरा	
4.	भानगढ़	4.	सोजत	
		5.	धनेरी	

पाषाण काल

- 1870 में C.A. Hacket को जयपुर तथा इन्द्रगढ़ से हस्त कुठार प्राप्त हुई थी।
- सेटनकार को ऐसे पाषाण उपकरण झालावाड़ से प्राप्त हुए। तथा बी.आल्चिन को ऐसी वस्तुएं जालौर से प्राप्त हुई।

❖ केन्द्र

1. बागोरः

- यह कोठारी नदी के किनारे स्थित हैं।
- **उत्खननकर्ताः**
    - वीरेन्द्र नाथ मिश्र (पुणे university.)
- यहाँ पर महासतियां नामक स्थान का उत्खनन किया गया था।
- राजस्थान की प्राचीन सभ्यताओं का 'पालना' कहा जाता है।
- L.S leshni ने बागोर की खोज की।

साक्ष्य-

- ➢ लघु पाषाण उपकरण
- ➢ पशुपालन
- ➢ कृषि
- ➢ तांबे की छेद वाली सुई
- ➢ लौहे के उपकरण
- ➢ शव के साथ खाद्य सामग्री व बर्तन
- ➢ कंकाल के गले में हड्डियों तथा पत्थरों से बना हुआ हार मिला।

2. तिलवाड़ा (बालोतरा):-

- यह लूणी नदी के किनारे स्थित है।
- उत्खननकर्त्ता-'वीरेन्द्रनाथ मिश्र'

साक्ष्यः

- ➢ लघु पाषाण उपकरण
- ➢ पशुपालन
- ➢ अग्निकुण्ड

❖ **वीरेन्द्र नाथ मिश्र** की पुस्तक -"Bagor & Tilwara late mesolithic cultures of North-west India"

3. **पचपदरा** - बालोतरा
4. **बूढ़ा पुष्कर** - अजमेर
5. **जायल** - नागौर
6. **डीडवाना** - डीडवाना
7. **सोजत** - पाली
8. **धनेरी** - पाली

ताम्रपाषाण काल

❖ बनास व आहड़ सभ्यताः-

- इस काल के अधिकतर केन्द्र बनास नदी के किनारे स्थित है। अतः इसे बनास सभ्यता कहा जाता है।
- आहड़ इस सभ्यता का प्रमुख केन्द्र था। अतः इसे आहड़ सभ्यता भी कहा जाता है।

1. आहड़-

- यह बेड़च नदी के किनारे स्थित है।
- प्राचीन नाम-आघाटपुर/ आटपुर
- आहड़ का स्थानीय नाम-धूलकोट
- **उत्खननकर्ताः**
    - अक्षय कीर्ति व्यास
    - रतन चन्द्र अग्रवाल
    - हसमुख धीरज सांकलिया

साक्ष्यः-

- ➢ तांबे की भट्टियां- इसे ताम्रवती नगरी कहा जाता है।
- ➢ मृद्भांड-काले व लाल मृदभांड-मृद्भांडों को गोरे/कोठे कहा जाता हैं।
- ➢ रंगाई-छपाई उद्योग
- ➢ बांट (आहड़ एक व्यापारिक केन्द्र था)
- ➢ लाजवर्द (अफगानिस्तान)
- ➢ बिना हत्थे का जल पात्र (ईरान)
- ➢ अपोलो के चित्र वाला सिक्का (यूनान का)
- ➢ 6 चुल्हे मिले- यह संयुक्त परिवार या सामूहिक भोजन की जानकारी देता है।
- ➢ दो मुँह वाला चुल्हा
- ➢ सिलबट्टा
- ➢ गेहूँ, चावल, ज्वार
- ➢ शव के साथ आभूषण
- ➢ बैल की मृणमूर्ति-बनास का बैल कहा जाता है।
- ➢ पत्थर की नींव
- ➢ कच्ची ईंटे प्राप्त होती हैं।
- ➢ क्वार्ट्ज-ईंटों में मजबूती के लिए यह मिलाया जाता है।

2. गिलुण्डः

- **उत्खननकर्ताः-**
    - बी. बी. लाल
    - वी. आर. शिन्दे
    - ग्रेगरी पोशल
- 'मोडिया मगरी' नामक स्थान का उत्खनन किया गया था।

साक्ष्यः-

- ➢ पक्की ईंटे
- ➢ पांच प्रकार के मृद्भांड
- ➢ पत्थर की गोलियां
- ➢ मिट्टी के खिलोने
- ➢ हाथीदांत की चुड़ियाँ

3. बालाथल (उदयपुर):-

- उत्खननकर्त्ता-
    - वीरेन्द्र नाथ मिश्र
- यह सिन्धुघाटी सभ्यता से भी जुड़ा हुआ था।

साक्ष्य-

- ➢ लौहे की भट्टियाँ
- ➢ 11 कमरों का एक भवन
- ➢ नलकूप
- ➢ हाथ से बुना हुआ कपड़ा।

4. ओझियाणाः-(भीलवाड़ा)

यह खारी नदी के किनारे स्थित है।

उत्खननकर्त्ता-

- बी. आर. मीणा
- आलोक त्रिपाठी

साक्ष्य-

- ➢ गाय व बैल की मृणमूर्तियाँ

5. भगवानपुरा- (उदयपुर)

6. रोजदी - (गुजरात)

कांस्य युग

❖ सिन्धुघाटी सभ्यता/हड़प्पा सभ्यता/ सिंधु-सरस्वती सभ्यता

- इस काल के प्रारम्भिक केन्द्र सिंधु नदी के किनारे स्थित है।
- अतः इसे सिन्धु घाटी सभ्यता कहा जाता है।
- हड़प्पा इस सभ्यता का प्रथम उत्खनित स्थल था। अतः इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है।
- कालान्तर में हमें सरस्वती नदी के किनारे भी सभ्यता के स्थल प्राप्त हुए। अतः इसे सिंधु सरस्वती सभ्यता भी कहा जाता है।

1. कालीबंगा (हनुमानगढ़)

- शाब्दिक अर्थ- काली चुड़िया
- कालखंड-2600 ई.पू.-1900 ई.पू.
- यह घग्घर नदी के किनारे स्थित
- ऑरेलस्टाईन ने घग्घर नदी का सर्वेक्षण किया था।
- ऑरेल स्टाईन की Book:'A survey work of Ancient sites along lost saraswati River'
- L.P. टेस्सीटोरी (इटली) ने सबसे पहले कालीबंगा की जानकारी दी थी।
- 1953 - अमलानन्द घोष ने कालीबंगा की खोज की थी।

> नोटः- अमलानन्द घोष के अनुसार कालीबंगा का उद्गम सोंथी सभ्यता से हुआ था। यह सभ्यता बीकानेर क्षेत्र में स्थित थी। सावणिया तथा पूगल इस सभ्यता के प्रमुख केन्द्र था।

- **उत्खननकर्त्ता-**
  - बी.बी. लाल
  - बी. के थापर
  - एम.डी खरे
  - के. एम.श्रीवास्तव
  - एस.पी. जैन
- यहां पर 5 स्तरों का उत्खनन किया गया था।

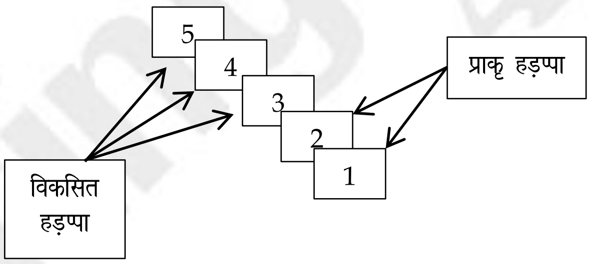

- पाकिस्तान का कोटदीजी कालीबंगा के समान है।
- दशरथ शर्मा के अनुसार कालीबंगा हड़प्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी थी।
- नगर दो भागों में विभाजित था।

पश्चिमी भाग	पूर्वी भाग
दुर्ग (प्रशासनिक भवन)	निचला नगर (सामान्य भवन)

(दोनों भाग अलग-अलग परकोटे से घिरे हुए थे।)

साक्ष्य–

- तांबे की चूड़ियाँ
- हाथी दाँत का कंघा
- अण्डाकार कुएँ
- कांस्य दर्पण
- लाल रंग के मृदभांड जिन पर काली व सफेद धारियां बनी हुई हैं।
- ऊँट की हड्डियाँ मिलती है।
- गेहूँ, बाजरा, जौ, चना, सरसों
- द्वारपाल कक्ष
- जुता हुआ खेत (दक्षिणी पूर्वी दिशा)
- एक साथ दो फसलें उगाया करते थे।
- विकसित हड़प्पा से 7 अग्निकुण्ड प्राप्त हुए ।
- कच्ची ईटें (कालीबंगा एक गरीब/दीन हीन बस्ती थी।
- स्पष्ट जल निकासी प्रणाली का अभाव
- लकड़ी की नालिया
- युग्मित शवाधान (दो लोगों को एक साथ दफनाना)
- छः छेद वाली खोपड़ी
- शल्य चिकित्सा या मस्तिष्क शोध की जानकारी मिलती है।
- बेलनाकार मुहर-यह मेसोपोटामिया सभ्यता की जानकारी देती है।
- भूकम्प के साक्ष्य (मकानों में दरारे मिली)
- कालीबंगा का उत्खनन A.S.I.(Arceologycal Survey of India) के निर्देशन में किया गया।
- 1985 ई. में यहाँ पर संग्राहलय स्थापित किया गया था।

लौह काल

- वैदों से इस काल की जानकारी प्राप्त होती है। अतः इसे वैदिक सभ्यता कहा जाता है।

1. अनूपगढ़
2. तरखान वाला डेरा
3. चक-64

} श्रीगंगानगर

महाजनपद काल

1. मत्स्य महाजनपद

- ऋग्वेद से इस महाजनपद की जानकारी मिलती है।
- क्षेत्र-जयपुर, कोटपुतली, अलवर, भरतपुर तथा डीग
- राजधानी-विराटनगर (कोटपुतली)
- महाभारत से विराटनगर की जानकारी मिलती है।
- गोपीनाथ शर्मा के अनुसार महाभारत युद्ध के बाद मत्स्य महाजनपद शक्तिशाली हो गया था।
- चेदि महाजनपद ने मत्स्य महाजनपद को हरा दिया था।
- कालान्तर में मत्स्य महाजनपद का विलय मगध महाजनपद में हो गया था।

2. शूरसेन महाजनपद :

- क्षेत्र- भरतपुर, अलवर का पूर्वी भाग, डीग, धौलपुर, करौली
- राजधानी-मथुरा

3. कुरू महाजनपद-

- क्षेत्र-अलवर का उत्तरी भाग
- राजधानी-इन्द्रप्रस्थ

4. शिवि जनपदः

- क्षेत्र-उदयपुर, चित्तौडगढ़
- राजधानी-माध्यमिका/नगर (चित्तौड़गढ़)
- **माध्यमिका** की जानकारी के स्त्रोतः-
    1. महाभारत
    2. अष्टाध्यायी (पाणिनी)
    3. महाभाष्य (पतंजलि)
    4. बड़ली अभिलेख
- कार्लाइल ने माध्यमिका की खोज की थी।

उत्खननकर्त्ता-

- डी. आर. भंडारकर (1920 ई.में)
- के.बी. सौन्दरराजन

- माध्यमिका राजस्थान का प्रथम उत्खनित स्थल हैं।

साक्ष्य-

- शिवि जनपद के सिक्कें
- खुला विष्णु मंदिर
- चक्रदार कुएं।
- नहर
- गुप्तकालीन शिव मंदिर
- बौद्ध साक्ष्य।

❖ बड़ली अभिलेख-अजमेर (443 ई.पू.)

- 1912 ई. में गौरीशंकर हीराचंद ओझा को भिलोट माता मंदिर से यह अभिलेख प्राप्त हुआ था।
- यह अभिलेख वीर निर्वाण संम्वत-84 में लिखा गया था
- भाषा-प्राकृत-
- लिपि-ब्राह्मी
- यह राजस्थान का प्राचीनतम अभिलेख है
- इस अभिलेख के अनुसार माध्यमिका एक जैन केन्द्र था।

5. मालव जनपदः

- क्षेत्र- टोंक तथा जयपुर
- राजधानी-नगर (टोंक)
- इस जनपद की सभ्यता को खेड़ा सभ्यता कहा जाता है।
- **उत्खननकर्त्ता**- कृष्णदेव

साक्ष्य-

- ➢ 6000 सिक्के-मालव जनपद के प्राप्त हुए। (ये सिक्के कार्लाइल को प्राप्त हुए)
- ➢ **मूर्तियाँः-**
  1. महिषासुर मर्दिनी
  2. लक्ष्मी
  3. दुर्गा
  4. गणेश
  5. शिवलिंग

6. अर्जुनायन जनपद-

- क्षेत्र- अलवर, भरतपुर, नीम का थाना

7. यौद्धेय जनपद-

- ➢ इस जनपद ने कुषाणों को हराया था।
- ➢ 'यौध्देय वीर' की उपाधि धारण करते थे।
- ➢ शक राजा रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से यह जानकारी प्राप्त होती है।

8. शाल्व जनपद-

क्षेत्र- अलवर

- इस जनपद का मत्स्य महाजनपद से सीमा विवाद था।

9. राजन्य जनपद-

क्षेत्र- भरतपुर

मौर्यकाल

❖ **बैराठ–** यहां से अशोक के दो अभिलेख प्राप्त होते है।

A. 1837 ई. में केप्टन बर्ट को बीजक पहाड़ी से अभिलेख प्राप्त हुआ।

- इसे भाब्रू अभिलेख भी कहा जाता है।
- इस अभिलेख में अशोक को मगध का राजा बताया गया है।
- अशोक बुद्ध, संघ तथा धम्म पर विश्वास व्यक्त करता है।
- इस अभिलेख में अशोक को देवनामप्रियदर्शी कहा गया है।
- यह अभिलेख 7 बुद्ध पुस्तकों की जानकारी देता है।

B. 1871 ई. कार्लाइल को भीम पहाड़ी से यह अभिलेख प्राप्त हुआ है।

उत्खननकर्त्ता–

- दयाराम साहनी (1936)
- नीलरत्न बनर्जी
- कैलाश नाथ दीक्षित(1962-63)

साक्ष्य–

- शैल चित्र
- शंख लिपि

- महादेव पहाड़ी, गणेश पहाड़ी तथा भोमली पहाड़ी का उत्खनन किया गया था।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने बैराठ की यात्रा की थी तथा उसने इसे ‘‘पी लो यो तो लो’’ कहा था।
- उसके अनुसार बैराठ में 8 बौद्ध मठ थे। जिन्हें हूण राजा मिहिरकुल ने तोड़ दिया था।
- उसने बैराठ के बैल तथा भेड़ प्रसिद्ध बताया था।
- जयपुर महाराजा रामसिंह II के शासन काल में बैराठ की खुदाई की गई थी इस समय यहां से एक सोने की एक सन्दुक प्राप्त हुई थीं। जिसमें शायद भगवान बुध्द के अवशेष रहे होंगे।

मौर्योत्तर काल

- इण्डो-ग्रीक राजा मिंनाडर ने माध्यमिका पर आक्रमण किया था।
- यह जानकारी महाभाष्य से प्राप्त होती थी।
- हमें बैराठ से 28 इण्डो-ग्रीक सिक्के प्राप्त होते है। इनमें से 16 सिक्के मिंनाडर के है।

बैराठ से चाँदी के 8 आहत (पंचमार्क) सिक्के भी प्राप्त हुए हैं। (सूती कपड़े में)

❖ नोह (डीग)

- **उत्खननकर्त्ता–**
    - रतन चन्द्र अग्रवाल

साक्ष्य–

- ➢ कृषि के लौहे के उपकरण
- ➢ चक्रदार कुएँ
- ➢ कुषाण सिक्के (वासुदेव व हुविष्क राजा के)
- ➢ यक्ष की मूर्ति- इसे 'जाख बाबा' कहा जाता है।
- ➢ यह शुंगकाल से सम्बन्धित है।

❖ बड़वा अभिलेख -बांरा (238 ई.)

- यह मोखरि वंश के महासेनापति बल की जानकारी देता है।
- यहा से हमें 4 स्तम्भ प्राप्त हुए हैं। जिनमें से 3 लेख युक्त थे।

❖ रंगमहल – हनुमानगढ़

उत्खननकर्त्ता–

- डॉ. हन्नारिड़ (स्वीडन)

साक्ष्य–

- ➢ चावल
- ➢ मिट्टी की खिलौना गाड़ी
- ➢ लाल मृदभांड-जिन पर काले रंग की धारिया है।
- ➢ गुरु शिष्य की मूर्ति (कुषाण काल)।

गुप्तकाल

❖ बयाना -भरतपुर

- समुद्रगुप्त ने बयाना पर अधिकार किया था।
- वरीक वंश के विष्णुवर्धन ने बयाना में भीमलाट का निर्माण करवाया।
- यह समुद्रगुप्त का सामंत था।
- भीमलाट को समुद्रगुप्त का विजय स्तंभ कहा जाता है।
- यह राजस्थान का पहला विजय स्तंभ था।
- बयाना के पास नगलाछैल नामक स्थान से हमें गुप्त सिक्कों का एक ढ़ेर प्राप्त होता है। **(1921 गुप्त सिक्के 1948 ई. में)**
- प्रतिहार राजा लक्ष्मणसेन की रानी चित्रलेखा ने बयाना में ऊषा मंदिर का निर्माण करवाया।
- मध्यकाल में बयाना नील की खेती के लिए प्रसिद्ध था। (डच व्यापारी फ्रांसिस्को पेल्सर्ट के अनुसार)

❖ बाड़ोली : (चितौड़गढ़)

- हूण राजा मिहिरकुल ने यहां शिव मंदिर का निर्माण करवाया था।
- जेम्स टॉड ने इस मंदिर को प्रकाश में लाया था।

❖ चारचौमा (कोटा):

- यहां पर एक शिव मंदिर बना हुआ है।
- चतुर्मुखी शिवलिंग।

गुप्तोत्तर काल
(पूर्व मध्यकाल)/राजपूत काल/त्रिपक्षीय संघर्ष का काल

भीनमालः-

- यह चावड़ा राजपूतों की राजधानी थी।
- बसन्तगढ़ अभिलेख से चावड़ा वंश की जानकारी मिलती है।
- चावड़ा राजाओं ने माघ एवं ब्रह्मगुप्त को संरक्षण प्रदान किया।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भीनमाल की यात्रा की थी। उसने इसे ''पी लो मो लो'' कहा था।
- भीनमाल विद्या का केन्द्र था।
- कालान्तर में प्रतिहारों ने भीनमाल पर अधिकार किया था।
- **उत्खननकर्त्ताः** रतनचन्द्र अग्रवाल

साक्ष्यः

✓ 'शक' सिक्के
✓ रोमन एम्फोरा- सुरापात्र
✓ यूनानी दोहत्थी सुराही।

- **माघ की पुस्तक** - 'शिशुपाल वध'
- **ब्रह्मगुप्त की पुस्तकें** - (1) 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त', (2) 'खंड खाद्यक'।
- ब्रह्मगुप्त को 'भारत का न्यूटन' कहा जाता है।

- **"उपमा कालिदासस्य, भारवि अर्थ गौरवम्।
  पद लालित्य दंडिन, माघे सन्ति त्रयोगुणः।।"**

प्रमुख प्राचीन अभिलेख

बसन्तगढ़ अभिलेख (सिरोही)-(625 ई.)

- यह अभिलेख खीमेल माता मंदिर से प्राप्त हुआ था।
- इस अभिलेख के अनुसार चावड़ा राजा वर्मलात के काल में रज्जिल आबू का सामन्त था।
- इस प्रकार यह अभिलेख सामन्ती व्यवस्था की जानकारी देता था।

मानसरोवर (चित्तौड़गढ़) अभिलेख-(713 ई.)

- यह अभिलेख 4 मौर्य राजाओं की जानकारी देता है।
  1. महेश्वर
  2. भीम
  3. भोज
  4. मान

कणसवा (कोटा) शिवालय अभिलेख-(738 ई.)

- यह अभिलेख मौर्य राजा धवल की जानकारी देता है।
- यह राजस्थान में मौर्यो के बारे में अंतिम जानकारी है

बुचकला (जोधपुर) अभिलेख- (815 ई.)

- यह अभिलेख पावर्ती माता मंदिर से प्राप्त होता है।
- यह अभिलेख प्रतिहार राजा नागभट्ट-II की जानकारी देता है।

राजोरगढ़ अभिलेख (अलवर)-(960 ई.)

- यह मथनदेव प्रतिहार की जानकारी देता है। जो कि कन्नौज के राजा महीपाल प्रतिहार का सामंत था।

अन्य पुरातात्विक स्थल

1. **गणेश्वरः-** (नीम का थाना)

- यह कांतली नदी के किनारे स्थित है।
- **उत्खननकर्त्ता :-**
    - रतनचन्द्र अग्रवाल
- इसे ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी कहा जाता है।
- इसे ताम्रसंचयी सभ्यता भी कहा जाता है।
- यहां से तांबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ों भेजा जाता था।

साक्ष्य :-

- ➢ काले व नीले मृद्भांड
- ➢ पत्थर के मकान बनाये जाते थे।
- ➢ पत्थर का बांध- बाढ़ से बचाव के लिए।

2. **सुनारी** :-(नीम का थाना)

- यह कांतली नदी के किनारे स्थित है।
- यह एक वैदिक कालीन बस्ती थी।

साक्ष्य :-

- ➢ लौहे की भट्टियाँ (भारत में प्राचीनतम)
- ➢ घोड़े से खीचे जाने वाले रथ।
- ➢ चावल

3. **बरोर** :-(श्रीगंगानगर)

- यह प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे स्थित है।

साक्ष्य :-

- ➢ यहाँ से प्राप्त हड़प्पा और विकसित हड़प्पा की जानकारी मिलती है।
- ➢ बटन के आकार की मुहरें।
- ➢ लाजवर्द (अफगानिस्तान)
- ➢ 8000 मनके प्राप्त हुए है।

4. **रैढ़(टोंक) :-**

- **उत्खननकर्त्ता-** केदारनाथ पुरी
- यह मालवजनपद का प्रमुख केन्द्र था।

साक्ष्य :-

- ➢ लौह-इस्पात (प्राचीन भारत का टाटानगर कहा जाता था।)
- ➢ 3000 आहत (पंचमार्क)सिक्के प्राप्त हुए
    - मालव
    - मित्र
    - अपोलोडोट्स (इण्डो-ग्रीक राजा)
    - इण्डोसेसेनियन
- ➢ मातृदेवी की मूर्ति
- ➢ पगड़ी पहने महिला की मूर्ति
- ➢ 115 चक्रदार कुएँ

5. जोधपुरा :- (कोटपुतली)

- साबी नदी के किनारे स्थित है।
- **उत्खननकर्त्ता–** रतनचन्द्र अग्रवाल

➢ **साक्ष्य** :- लौहा मिलता है।

6. नलियासर:-(जयपुर)

➢ सांभर के नजदीक स्थित है।

साक्ष्य :-

➢ 105 कुषाण सिक्कें।

7. कुराडा:-(डीडवाना)

साक्ष्य :-

➢ खेती के औजार मिले।

8. ईसवाल :-उदयपुर

- प्राचीनकाल में यह एक औद्योगिक नगरी कहा जाता था।

साक्ष्य–

➢ लौहा

9. **झाडोल**	–	उदयपुर
10. **पिंड-पांडलिया**	–	चित्तौड़
11. **कोल माहोली**	–	सवाई माधोपुर
12. **मलाह**	–	भरतपुर
13. **ऐलाणा**	–	जालौर
14. **नन्दलालपुर**	–	जयपुर
15. **किराड़ोत**	–	जयपुर
16. **चीथवाड़ी**	–	जयपुर

सिक्के

गुप्त सिक्के
(गरुड़ सिक्के)

1. रेढ़ - (टोंक)
2. सायला - (टोंक)
3. मारोली - (जयपुर)
4. अहेड़ा - (अजमेर)
5. नगलाछैल - (भरतपुर)

मिहिर भोज प्रतिहार के सिक्के
(आदिवराह सिक्के)

1. मावलदेसर - (हनुमानगढ़)
2. नोहर - (हनुमानगढ़)
3. पल्लू - (हनुमानगढ़)
4. नावा - (डीडवाना)
5. डेगाना - (नागौर)
6. बघेरा - (अजमेर)

राजस्थान में मालव जनपद के सिक्के सर्वाधिक प्राप्त हुए है।
सिक्कों का अध्ययन न्यूमिस्मैटिक्स (Numismatics)
वेब की पुस्तकः- ***"The Currencies of Hindu states of Rajputana"***

शैल चित्र

- हमें छाजा नदी (बूँदी) व चम्बल नदी (कोटा) के किनारे अधिक शैलचित्र प्राप्त हुए है।
- इन शैल चित्रों में शिकार के दृश्य अधिक है।

1. डडीकर - अलवर
2. हरसौरा - अलवर
3. सोहनपुरा - सीकर
4. कन्यादह - बारां
5. गरदड़ा - बूँदी
6. आलणिया - कोटा

आलणिया के शैल चित्रों की खोज जगतनारायण ने की थी।

राजस्थान का मध्यकालीन इतिहास

प्रमुख राजवंश :-

1. गुहिल
2. राठौड़
3. कच्छावा
4. चौहान
5. परमार
6. प्रतिहार

→ राजनीतिक व्यवस्था

→ प्रशासनिक व्यवस्था

→ राजस्व व्यवस्था

→ सांस्कृतिक व्यवस्था

Springboard ACADEMY

गुहिल राजवंश

- 566 ई. में गुहिल ने गुहिल वंश की स्थापना की थी।

❖ **सामोली अभिलेख (उदयपुर)-646 ई.**
  - यह गुहिल वंश की जानकारी देने वाला प्राचीनतम अभिलेख है।
  - यह अभिलेख शिलादित्य से संबंधित था।
  - शिलादित्य गुहिल का पाँचवा वंशज था।
  - यह अभिलेख जावर माता की भी जानकारी देता है।
  - यह अभिलेख जावर के खनन उद्योग की भी जानकारी देता है।

गुहिल रियासतें-

1. मेवाड़
2. डूंगरपूर
3. बांसवाड़ा
4. प्रतापगढ़
5. शाहपुरा

मेवाड़ का इतिहास

- मेवाड़ में गुहिल वंश का शासन था।
- गुहिल वंश की 24 शाखा थी।
- मेवाड़ के प्राचीन नाम-
  - मेदपाट
  - प्राग्वाट
  - शिविजनपद

बप्पा रावल-

- वास्तविक नाम- कालभोज
- यह हारित ऋषि का शिष्य था।
- 734 ई. इसने **मानमौर्य** को हराया तथा चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।
- राजधानी-नागदा
- नागदा में एकलिंग मंदिर का निर्माण करवाया था।
- मेवाड़ के राजा स्वयं को एकलिंग जी का दीवान मानते थे।
- इसने चित्तौड़ में सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था। (कालिका माता मंदिर)
- इसने मेवाड़ मे सोने के सिक्के चलाए थें।
- गौरीशंकर हीराचंद ओझा को 115 ग्रेन का सिक्का मिला था।
- यह मुस्लिम सेना को हराते हुए गजनी तक चला गया था।
- इसने गजनी के राजा सलीम को हटा दिया तथा अपने भान्जे को राजा बना दिया।
- **उपाधियाँ-**
  - हिन्दू सूरज
  - राजगुरू
  - चक्कवै
- बप्पा रावल के सैनिक शिविर के कारण पाकिस्तान के रावलपिंडी शहर का नामकरण हुआ था।
- अपने अंतिम दिनों में यह सन्यासी बन गया था तथा इसने अपने बेटे खुमाण को राजा बना दिया था। चिन्तामणि विनायक वैद्य के अनुसार बप्पा रावल ने (चार्ल्स मार्टेल(फ्रांस) के अनुसार) मुस्लिम आक्रमणों को रोका था।

- ## अल्लट (आलुरावल) :-
- **सारणेश्वर प्रशस्ति** (953 ई.) के अनुसार इसने आहड़ को अपनी राजधानी बनाया।
- इसने यहां वराह मंदिर बनाया।
- यह प्रशस्ति कर व्यवस्था व प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी देती है।
- **शक्तिकुमार के आटपुर अभिलेख** (977 ई.) के अनुसार महालक्ष्मी राठौड़ अल्लट की माता थी तथा अल्लट ने हूण राजकुमारी हरिया देवी से विवाह किया था तथा हरिया देवी ने हर्षपुर नामक गांव बसाया था।

प्रशासनिक अधिकारी–

1. अमात्य – प्रधानमंत्री
2. संधिविग्रहक – युद्ध एवं शांति का मंत्री
3. अक्षपटलिक – आय व्यय का अधिकारी
4. भिषगाधिराज – राजवैद्य
5. बन्दिपति – राजा की प्रशंसा करने वाला

जैत्रसिंह–

भूताला का युद्ध –(1227 ई.)

↓

जैत्रसिंह v/s इल्तुतमिश (दिल्ली)

- इस युद्ध में जैत्रसिंह की जीत हुई
- **जयसिंह सूरी** की पुस्तक **हम्मीर मद मर्दन** से इस युद्ध की जानकारी मिलती है।
- इस पुस्तक में इल्लतुतमिश को हम्मीर कहा गया है।
- जैत्रसिंह के सेनापति–बालक व मदन
- इल्लतुतमिश की भागती हुई सेना ने नागदा को नष्ट कर दिया था।
- इसने चित्तौड़ को अपनी राजधानी बनाया था।
- दशरथ शर्मा के अनुसार ज़ैत्रसिंह का शासन काल मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्णकाल था।

तेजसिंह–

- 1260 ई. को आहड़ में कमलचन्द्र ने ''श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि'' नामक ग्रंथ चित्रित किया था। यह मेवाड़ का प्राचीनतम चित्रित ग्रंथ है।
- इसकी रानी जैतलदेवी ने चित्तौड़ में श्यामपार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।

रतनसिंह–(1302-03 ई.)

- **कुम्भकर्ण** –:
  - यह रतनसिंह का छोटा भाई था।
  - इसने नेपाल में गुहिल वंश की राणा शाखा का शासन स्थापित किया था।

पद्मिनी–

- यह रतनसिंह की रानी थी।
- यह सिंहल द्वीप की राजकुमारी थीं

- पिता का नाम-गन्धर्वसेन
- माता का नाम-चम्पावती
- राघव चेतन ने अलाउद्दीन खिलजी को पद्मिनी की सुंदरता के बारे में बताया था।
- 1540 ई. में मलिक मोहम्मद जायसी ने अवधी भाषा में पद्मावत नामक पुस्तक लिखी।
- 29 जनवरी,1303 ई. में अलाउदद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया था।
- 1303 ई. में चित्तौड़ का पहला साका हुआ।
- रानी पद्मिनी ने अन्य 1600 महिलाओं के साथ जौहर किया तथा रतनसिंह के नेतृत्व में केसरिया किया गया।
- रतनसिंह के दो सेनापति गोरा (चाचा) व बादल(भतीजा) थें।
- 25 अगस्त, 1303 ई. को अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।
- अलाउद्दीन ने चित्तौड़ में 30000 लोगों का नृसंहार करवाया।
- अमीर खुसरों की पुस्तक खजाईन-उल-फुतुह (तारीख-ए-अलाई) अलाउद्दीन के चित्तौड़ आक्रमण की जानकारी मिलती है।
- अलाउद्दीन ने अपने बेटे खिज्र खां को चित्तौड़ सौंप दिया तथा चित्तौड़ का नाम बदलकर 'खिज्राबाद' कर दिया।
- धाईबी पीर की दरगाह के अभिलेख में चित्तौड़ का नाम खिज्राबाद कर दिया गया।
- खिज्रखां ने गंभीरी नदी पर पूल का निर्माण करवाया था।
- खिज्रखा ने यहां पर मकबरे का निर्माण भी करवाया था।
- मकबरे के फारसी अभिलेख के अनुसार अलाउद्दीन दुसरा सिकन्दर, ईश्वर की छाया, तथा संसार का रक्षक था।
- थोड़े समय पश्चात चित्तौड़ मालदेव सोनगरा (मुँछाला मालदेव) को सौंप दिया गया था तथा मालदेव सोनगरा ने अपने पुत्र बनवीर सोनगरा को सौंप दिया था।

हम्मीर: (1326-64 ई.)

- सिसोदा के हम्मीर ने बनवीर सोनगरा को हरा कर चित्तौड़ पर पुनः अधिकार कर लिया।
- यहां से गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा का शासन प्रारम्भ होता है, इसने राणा उपाधि का प्रयोग किया था।
- इसे मेवाड़ का मुक्तिदाता कहा जाता है।
- सिंगोली के युद्ध में हम्मीर ने मोहम्मद बिन तुगलक (दिल्ली) को हराया था।
- इसने चित्तौड़ में बरवड़ी माता (अन्नपूर्णा) का मंदिर बनवाया था।
- बरवड़ी माता गुहिल वंश की इष्टदेवी हैं।
- कुलदेवी: बाण माता

उपाधियाँ-

1. विषम घाटी पंचानन - कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में
2. वीर राजा - रसिक प्रिया में
3. प्रबल हिन्दू - जेम्स टॉड ने।

लक्षसिंह (राणा लाखा)-1382-1421 ई.

- जावर में चाँदी की खान प्राप्त हुई।
- छीतर बन्जारे ने पिछोला झील का निर्माण करवाया था।
- कुम्भा हाड़ा नकली बुंदी की रक्षा करते हुए मारा गया था।

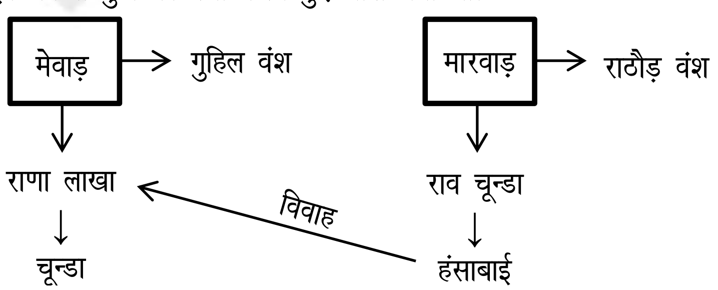

- मारवाड़ के राजा चून्डा ने अपनी राजकुमारी हंसाबाई का विवाह मेवाड़ के राणा लाखा से किया। इस समय राणा लाखा के बेटे चून्डा ने प्रतिज्ञा की। कि वह मेवाड़ का राजा नहीं बनेगा। बल्कि हंसाबाई के बेटे को मेवाड़ का राजा बनाया जाएगा।
- अतः चून्डा को मेवाड़ का भीष्म कहा जाता है।
- चून्डा को सलूम्बर ठिकाना दिया गया था।
- **चून्डा के त्याग के कारण सलूम्बर के सामंत को कई विशेषाधिकार दिए गए थे।**

जैसेः-

1. सलूम्बर का सामन्त मेवाड के राजा का राजतिलक करेगा।
2. सलूम्बर का सामंत मेवाड़ के राजा के साथ सभी कागज पत्रों पर हस्ताक्षर करेगा।
3. राजा की अनुपस्थिति में सलूम्बर का सामंत राजधानी को संभालेगा।
4. वह हमेशा मेवाड़ की सेना का सेनापति होगा।

- हरावल- सेना का अगला भाग।
- चन्दावल- सेना का पिछला भाग।

मोकल-(1427-33 ई.)

- पिता- लाखा
- माता- हंसाबाई

1. संरक्षक- चून्डा
2. संरक्षक- रणमल (हंसाबाई का भाई)

- हंसाबाई के अविश्वास के कारण चूंडा मालवा के होशंगशाह के पास चला गया था।
- 1428 ई. में रामपुरा के युद्ध में नागौर के फिरोजखान को हराया था।
- 1433 ई.गुजरात के अहमद शाह ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।
- इस समय झीलवाड़ा नामक स्थान पर चाचा, मेरा तथा महपा पंवार ने मोकल की हत्या कर दी थी।
- मोकल की रानी कमलावती ने अहमद शाह का सामना किया था।

स्थापत्यकला-

1. एकलिंग मंदिर का परकोटा बनाया।
2. द्वारिकानाथ मंदिर तथा जलाशय (चित्तौड़)-
3. समिद्धेश्वर मंदिर का पुनःनिर्माण (चित्तौड़)- पहले इसे त्रिभुवन नारायण मंदिर कहा जाता था तथा इसका निर्माण मालवा के भोज परमार ने करवाया था।
4. बाघेला तालाब
5. शृंगी ऋषि बावड़ी- श्रृंणी ऋषि अभिलेख से हम्मीर से मोकल तक की जानकारी मिलती है।

कुम्भा-(1433-68 ई.)

- पिता - मोकल
- माता - सौभाग्यवती परमार
- संरक्षक - रणमल
- रणमल की सहायता से कुम्भा ने चाचा, मेरा को मरवा दिया।
  यह जानकारी पदराड़ा अभिलेख (उदयपुर) 1433 ई. से प्राप्त होती है।
- मेवाड़ दरबार में रणमल का प्रभाव बढ़ गया था।
- रणमल ने सिसोदिया नेता राघवदेव (चूंडा का भाई) की हत्या करवा दी।
- हंसाबाई ने चूंडा को वापस बुलाया।
- भारमली की सहायता से रणमल को मार दिया गया।
- रणमल के बेटे जोधा ने कावनी (बीकानेर) नामक गांव में शरण ली।
- चूंडा ने राठौड़ों की राजधानी मंडोर पर अधिकार कर लिया।

आंवल-बांवल की संधि-(1453 ई.)

कुम्भा + जोधा

- इस संधि द्वारा जोधा को मारवाड़ वापस दे दिया गया था।
- सोजत को मेवाड़ तथा मारवाड़ की सीमा बनाया गया था।
- कुम्भा के राजकुमार रायमल का विवाह जोधा की राजकुमारी श्रृंगार कंवर से किया गया।

सांरगपुर का युद्ध-(1437 ई.)

↓

कुम्भा V/S महमूद खिलजी-I (मालवा)

- इस युद्ध में कुंभा की जीत हुई। तथा इस युद्ध की स्मृति में उसने विजयस्तम्भ का निर्माण करवाया था।

नागौर का उतराधिकार संघर्ष-

- मुजाहिद खां के खिलाफ कुम्भा ने शम्स खां की सहायता की थी। लेकिन थोड़े समय बाद शम्स खां कुम्भा के खिलाफ विद्रोह कर देता है तथा गुजरात के कुतुबुददीन शाह के पास चला जाता है।
- कुम्भा ने शम्स खां व कुतुबुद्दीन शाह को हराया था।

चम्पानेर की संधि-(1456 ई.)

↓

महमूद खिलजी-I (मालवा) + कतुबद्दीन शाह (गुजरात)

बदनौर का युद्ध-(1457 ई.)

- कुम्भा ने मालवा तथा गुजरात की संयुक्त सेना को हराया।
- कुम्भा ने सिरोही के सहसमल देवड़ा को भी हराया।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-

स्थापत्य कला-

- कुंभा को राजस्थान की स्थापत्य कला का जनक कहा जाता है

विजय स्तम्भ

- कुंभा ने विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया।
- यह एक 9 मंजिला इमारत है।

  ऊचाई= 122

  चौड़ाई =30

अन्य नाम-

  - कीर्ति स्तम्भ
  - विष्णु ध्वज
  - गरुड़ ध्वज
  - मूर्तियों का अजायबघर
  - भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष
  - इसकी 8वी मंजिल में कोई मूर्ति नहीं है।
  - 5वीं मंजिल में वास्तुकारों की मूर्तियां नाम सहित रखी गयी।

- वास्तुकार - जैता, पूँजा, पोमा, नापा,
- इसकी तीसरी मंजिल में 9 बार अरबी भाषा में अल्लाह शब्द लिखा है।
- महाराणा स्वरूप सिंह ने इसका पुनः निर्माण करवाया था।
- जेम्स टॉड ने इसकी तुलना कुतुबमीनार से की थी। तथा फर्ग्यूसन ने इसकी तुलना रोम के टार्जन टावर से की।
- यह राजस्थान की पहली इमारत हैं। जिस पर डाक टिकट जारी किया गया था।
- यह राजस्थान पुलिस तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिन्ह है।
- वीर सावरकर ने विजयस्तम्भ को अभिनव भारत का प्रतीक चिन्ह बनाया था।

कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति

लेखक-

1. अत्रि भट्ट
2. महेश भट्ट

- यह प्रशस्ति कुंभा के विजय, निर्माण, साहित्य तथा उपाधियों की जानकारी देती है।

❖ कीर्तिस्तम्भ-

- चित्तौड़गढ़ के किले में 7 मंजिला इमारत है।
- 12 वी शताब्दी में कुमारसिंह के काल में जीजाशाह बघेरवाल ने इसका निर्माण करवाया था।
- यह भगवान आदिनाथ को समर्पित हैं। अतः इसे आदिनाथ स्तम्भ भी कहा जाता है।

- कविराजा श्यामलदास जी की पुस्तक **वीर विनोद** के अनुसार कुंभा ने मेवाड़ के 84 में से 32 किलों का निर्माण करवाया था।

❖ किले

1. कुम्भलगढ़

- यह मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी थी।
- इसे मेवाड़ मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहा जाता है।
- वास्तुकारः-मंडन
- इसका सबसे ऊपरी भाग कटारगढ़ हैं। जो कि कुंभा का निजी आवास था। इसे मेवाड़ की आँख कहा जाता हैं।
- कुम्भलगढ़ प्रशस्ति का लेखकःमहेश भट्ट
- इस प्रशस्ति में कुंभा को धर्म एवं पवित्रता का अवतार तथा कर्ण एवं भोज के समान दानवीर बताया गया है।

2. अचलगढ़ः-

- 1482 ई. कुंभा ने इसका पुनः निर्माण करवाया था।
- इसमें कुभा तथा उसके बेटे उदा की मूर्तियाँ लगी हुई है जिन्हें 'सावन-भादों मूर्तियाँ' कहा जाता है।

3. **बसन्तगढ़** - सिरोही
4. **मचान** - मेरो पर नियंत्रण हेतु बनाया गया।
5. **भोमट** - उदयपुर(भीलों पर नियंत्रण हेतु)

❖ मंदिर–

1. कुंभस्वामी मंदिर–

- चित्तौड़गढ़
- कुम्भलगढ़
- अचलगढ़

2. कुंथुनाथ मंदिर–देलवाड़ा (सिरोही)

3. शांतिनाथ जैन मंदिर/श्रृंगार चंवरी मंदिर–

चित्तौड़ में वेल्का भंडारी ने इसका निर्माण करवाया यह कुंभा का कोषाध्यक्ष था।

4. रणकपुर जैन मंदिरः

- 1439 ई. जैन व्यापारी धरणकशाह ने मथाई नदी के किनारे इन मंदिरों का निर्माण करवाया।
- इनमें **चौमुखा मंदिर** सबसे प्रसिद्ध है।
  - ➢ इसमें भगवान आदिनाथ की मूर्ति है।
  - ➢ इसमें 1444 स्तम्भ है। अतः इसे स्तम्भों का अजायबघर कहा जाता है।
  - ➢ दैपाक इस मंदिर का वास्तुकार था

रणकपुर प्रशस्ति–

- यह प्रशस्ति बप्पा रावल से लेकर कुम्भा तक मेवाड़ के राजाओं की जानकारी देती है।
- इस प्रशस्ति में बप्पा तथा कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया है।
- यह प्रशस्ति वास्तुकार दैपाक की भी जानकारी देती है।
- इस प्रशस्ति में मुद्रा के लिए नाणक शब्द का प्रयोग किया गया हैं

साहित्य

- कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ था
- वह वीणा बजाया करता था।
- संगीतगुरू-सारंग व्यास

- **कुंभा की पुस्तकें–**
  1. सुधा प्रबन्ध
  2. कामराज रतिसार (7 भाग)
  3. हरिवार्तिक
  4. संगीत सुधा
  5. संगीत मीमांसा
  6. संगीत क्रम दीपिका
  7. **संगीत राज (5 भाग)–**
     1. पाठ्य रत्नकोष
     2. संगीत रत्न कोष
     3. नृत्य रत्न कोष
     4. वाद्य रत्न कोष
     5. रस रत्न कोष
- **कुंभा के नाटकः–**
  1. आतुल्य चातुरी (संस्कृत)
  2. मुरारि संगति (कन्नड़)
  3. नन्दिनी वृति (मराठी)
  4. रस नन्दिनी (मेवाड़ी)
- **कुंभा की टिकाएँ :**
  1. गीत गोविन्द (जयदेव)- रसिक प्रिया

2. संगीत रत्नाकर (सारंगधर)
3. चंडीशतक (बाणभट्ट)

- **कुंभा के दरबारी विद्वानः-**

1. **कान्ह व्यास**-एकलिंग महात्म्यः- इसका पहला भाग कुंभा द्वारा लिखा गया था। इसलिए इसे **राजवर्णन** कहा जाता है।
2. **मेहाजी**-तीर्थमालाः-120 तीर्थों की जानकारी।
3. **मंडन की पुस्तकें :-**
   1. वास्तुकार
   2. देवमूर्ति प्रकरण
   3. राजवल्लभ- इस पुस्तक में 14 अध्याय है। यह पुस्तक ग्राम, नगर, मंदिर बाजार, महल तथा किलो के निर्माण की जानकारी देती है।
   4. रूप मंडन (स्थापत्य)
   5. कोदंड मंडन- धनुष निर्माण की जानकारी।
4. **नाथा**- यह मंडन का भाई था।
   पुस्तक-'वास्तुमंजरी'
5. **गोविन्द**- यह मंडन का बेटा था।
   1. द्वार दीपिका
   2. कला निधि (मंदिरों के शिखर निर्माण की जानकारी)
   3. उद्धार धोरिणी
   4. सार समुच्चय (आयुर्वेद की जानकारी)
6. **हीरानन्द मुनिः-**
   - ➢ ये कुम्भा के गुरू थे
   - ➢ उपाधि-कविराज
7. **तिला भट्ट-**

कुंभा के जैन विद्वानः-

1. **सोमदेव सूरी**
2. **सोमशेखर सूरी**
3. **जयशेखर**
4. **भुवनकीर्ति**

- कुंभा ने जैनों का तीर्थ यात्रा कर समाप्त कर दिया था।

कुंभा की उपाधियाँ-

1. हिन्दू सुरताण
2. अभिनव भरताचार्य/नव्य भरत
3. राणा रासौ
4. हाल गुरू
5. चाप गुरू
6. आदि वराह
7. परम भागवत

- कुम्भलगढ़ किले में कुम्भा की हत्या उसके बेटे उदा द्वारा कर दी गई।

रायमल (1473-1509 ई.)

➢ जावर तथा दाड़िमपुर के युद्धों में इसने अपने भाई उदा को हराया था।

- इसने मालवा के गयासशाह को भी हराया था।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ–

- एकलिंग मंदिर का वर्तमान स्वरूप बनवाया था।
- चित्तौड़ में अद्भूत शिव (अदबदजी) मंदिर का निर्माण करवाया था।
- अपनी बहन रमाबाई को जावर परगना दिया था।
- अपने पिता की तरह संगीत में रूचि रखती थी।
- रमा बाई की उपाधि- 'वागीश्वरी'
- रमा बाई ने जावर मे रमास्वामी मंदिर का निर्माण करवाया था।
- इसकी रानी श्रृंगार कंवर ने घोसुण्डी में बांवड़ी का निर्माण करवाया था।

❖ घोसुण्डी अभिलेख–

- यह दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का एक अभिलेख है।
- इस अभिलेख के अनुसार गजवंश के राजा सर्वतात ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया था।
- यह अभिलेख वासुदेव तथा संकर्षण (कृष्ण व बलराम) की पूजा की जानकारी देता है।
- यह वैष्णव सम्प्रदाय की जानकारी देने वाला राजस्थान का पहला अभिलेख है।
- यह ब्राह्मी लिपि तथा संस्कृत भाषा में लिखा गया था।
- इसे हाथीबाड़ा भी कहा जाता है।
- इसे ऊब दीवड़ भी कहा जाता है।

पृथ्वीराज–

- यह रायमल का बेटा था।
- इसे उडना राजकुमार कहा जाता है।
- इसकी रानी तारा के कारण अजमेर किले का नाम तारागढ़ हो गया था।
- पृथ्वीराज की छतरी (12 खम्भों की) कुम्भलगढ़ किले में स्थित है।

जयमल–

- यह भी रायमल का बेटा था।
- यह सोलंकियो के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था।

सांगा/संग्राम सिंह–(1509-28 ई.)

- यह भी रायमल का बेटा था।
- सेवन्त्री नामक गांव में बीदा जैतमालोत ने सांगा की उसके भाईयों के खिलाफ रक्षा की थी।
- श्रीनगर (अजमेर) के कर्मचन्द पंवार ने सांगा को शरण दी थी।
- रायमल की मृत्यु के बाद सांगा मेवाड़ का राजा बना।
- **सांगा के राजतिलक के समय**

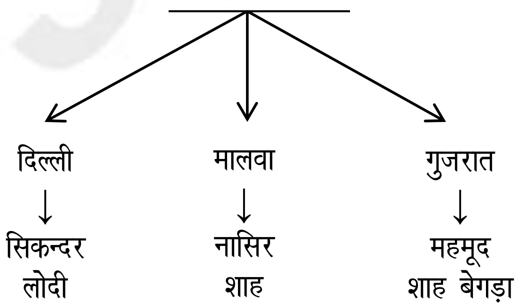

खातोली(कोटा) का युद्ध-(1517 ई.)

↓

राणा सांगा v/s इब्राहीम लोदी (दिल्ली)

- इस युद्ध में सांगा की जीत हुई है।

बाड़ी(धौलपुर) का युद्ध-(1518 ई.)

↓

राणा सांगा v/s इब्राहीम लोदी (दिल्ली)

- इस युद्ध में सांगा की जीत हुई है।

गागरौण (झालावाड़) का युद्ध-(1519 ई.)

↓

राणा सांगा v/s महमूद खिलजी-II

- कारण- सांगा ने मेदिनीराय (चंदेरी) को गागरोन का किला दे दिया था।
- इस युद्ध में भी सांगा की जीत हुई।
- हरिदास चारण ने महमूद खिलजी II को गिरफ्तार कर लिया था।
- सांगा ने हरिदास चारण को 12 गांव दिए

ईडर(गुजरात) का युद्ध-(1520 ई.)

↓

राणा सांगा v/s मुजफ्फरशाह (गुजरात)

- कारण- ईडर का उतराधिकार संघर्ष

ईडर

भारमल → मुजफ्फरशाह

रायमल → सांगा

- सांगा ने भारमल व मुजफ्फर शाह को हरा दिया।

बयाना का युद्ध-16 फरवरी 1527 ई.

↓

सांगा v/s बाबर

- इस समय बयाना का किला मेहन्दी ख्वाजा के पास था।
- सुल्तान मिर्जा बाबर का सेनापति था।
- इस युद्ध में सांगा की जीत हुई।
- सांगा ने मुगलों से 'तासा' नामक वाद्य यंत्र छीन लिया था।

खानवा का युद्ध-17 मार्च,1527 ई.

↓

सांगा v/s बाबर

- युद्ध से पहले बाबर ने जिहाद् की घोषणा की।

- उसने मुस्लिम व्यापारियों का तमंगा कर हटा दिया।
- सांगा ने राजस्थान के लगभग सभी राजाओं को पत्र लिखे तथा सहायता की मांग की।(पातीपरवन)
    - ➢ पृथ्वीराज (आमेर)
    - ➢ मालदेव (मारवाड़)
    - ➢ कल्याणमल (बीकानेर)
    - ➢ वीरमदेव (मेड़ता)
    - ➢ अखैराज देवड़ा (सिरोही)
    - ➢ मेदिनीराय (चंदेरी)
    - ➢ उदयसिंह (वागड़)
    - ➢ बाघसिंह (देवलिया)
    - ➢ झाला अज्जा (सादड़ी)
    - ➢ रतन सिंह चूंडावत (सलूम्बर)
    - ➢ हसन खाँ मेवाती (मेवात)
    - ➢ ईडर-भारमल
    - ➢ इब्राहीम लोदी के भाई महम्मूद लोदी ने भी सांगा की तरफ से भाग लिया था।
- घायल होने के कारण सांगा को युद्ध से बाहर जाना पड़ा अतः झाला अज्जा ने युद्ध का नेतृत्व किया
- सांगा के कुछ साथियों ने विश्वासघात किया। तथा युद्ध के समय बाबर से मिल गए।
- जैसे-
    - ▪ रायसीन का सलहदी तंवर
    - ▪ नागौर के खानजादे मुस्लिम
- तोपखाना तथा तुलगुमा युद्ध प्रणाली के कारण इस युद्ध में बाबर की जीत हुई। तथा उसने गाजी की उपाधि धारण की।
    - ▪ बसवा (दौसा) - यहां पर घायल सांगा का इलाज किया गया था।
    - ▪ ईरिच (U.P.) - यहां पर सांगा को जहर दे दिया गया
    - ▪ कालपी (U.P.) - यहां पर सांगा की मृत्यु हो गई थी।
    - ▪ मांडलगढ (भीलवाड़ा) - (भीलवाड़ा) यहां पर सांगा की छतरी है।

उपाधियाँ

1. हिन्दूपत
2. सैनिकों का भग्नावशेष (जेम्स टॉड ने कहा।)

- बाबरनामा के अनुसार सांगा के दरबार में 7 राजा, 9 राव तथा 104 सरदार थे।

रतनसिंह (1528-37 ई.)

- यह सांगा का पुत्र था।
- यह बूंदी के सूरजमल के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था।

विक्रमादित्य (1531-36 ई.)-

- संरक्षिका- कर्मावती
- 1533 ई.में गुजरात के बहादुरशाह ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।
- कर्मावती ने रणथम्भौर का किला देकर संधि कर ली।
- 1534-35 ई. में बहादुर शाह ने मेवाड़ पर पुनः आक्रमण कर दिया था।
- 1535 ई. में चित्तौड़ का दूसरा साका हुआ।
- कर्मावती के नेतृत्व में जौहर हुआ
- पुर ताम्रपत्र से इस जौहर की जानकारी मिलती है। (1535 ई.)

- देवलिया के बाघसिंह के नेतृत्व में केसरिया किया गया। बाघसिंह को देवलिया दीवान भी कहा जाता है।
- बाघ सिंह की छतरी- पांडुपोल (चित्तौड़)
- इस आक्रमण के दौरान रानी कर्मावती ने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेजी थी।
- बनवीर को मेवाड़ का प्रशासक बनाया गया। यह उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की दासी का बेटा था।
- बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी।
- बनवीर उदयसिंह को भी मारना चाहता था। लेकिन पन्नाधाय ने अपने बेटे चन्दन का बलिदान देकर उदयसिंह कों बचा लिया।
- आशा देवपुरा ने पन्नाधाय तथा उदयसिंह को कुम्भलगढ़ किले में शरण दी थी।

उदयसिंह-(1537-72 ई.)-

मावली का युद्ध-1540 ई.

↓

उदय सिंह v/s बनवीर

- इस युद्ध में उदयसिंह की जीत हुई।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना हुई।
- उदयसागर झील तथा मोती मगरी महल का निर्माण करवाया गया।
- 1567-68 ई. में अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया।
- उदयसिंह गिरवा की पहाड़ियों में चला गया।
- जयमल एवं पत्ता ने युद्ध का मोर्चा संभाला।

जयमल - मेड़ता का राजा था। तथा 1562 ई. में अकबर ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया था।
पत्ता - आमेट का सामंत था तथा आमेट मेवाड़ का प्रथम श्रेणी ठिकाना

- 1568 ई. चित्तौड़ का तीसरा साका हुआ।
- फुल कंवर ने जौहर किया। यह जयमल की बहन व पत्ता की पत्नी थी।
- जयमल व पत्ता के नेतृत्व में केसरिया किया गया।
- जयमल ने कल्ला राठौड़ के कंधों पर बैठ कर युद्ध किया था। अतः कल्ला राठौड़ को चार हाथों का देवता कहा जाता था।
- ➢ पत्ता की छत्तरी -रामपोल
- जयमल व कल्ला राठौड़ की छत्तरियां :- हनुमानपोल व भैरवपोल
- 25 फरवरी 1568 ई. अकबर ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया था।
- अकबर ने चित्तौड़ में 30000 लोगों का नृसंहार करवाया था।
- अकबर ने यहाँ पर एल.ची. नामक सिक्का चलवाया था।
- अकबर ने जयमल व पता की मूर्तियां आगरा के किले में लगाई थी।
- फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने इन मूर्तियों की जानकारी दी थी।
- (पुस्तक-*Travels in mughal Empire*.)
- अकबर की बन्दूक- संग्राम
- 28 फरवरी,1572 ई.को गोगुन्दा में होली के दिन उदयसिंह की मृत्यु हो गई।
- उदयसिंह की छत्तरी-गोगुन्दा

महाराणा प्रताप-(1572-97 ई. (25 वर्ष तक शासन))

- जन्म - 9 मई,1540 कुम्भलगढ़
- पिता - उदयसिंह
- माता - जयवन्ता बाई सोनगरा
- रानी - अजबदे पंवार
- बचपन का नाम - कीका
- उदयसिंह ने अपने बड़े बेटे प्रताप को राजा नहीं बनाया था। बल्कि छोटे बेटे जगमाल को राजा बना दिया था।
- सलूम्बर के कृष्णदास चूंडावत ने गोगून्दा में प्रताप का राजतिलक किया।
- कुम्भलगढ़ में प्रताप का राजतिलक समारोह मनाया गया।
- मारवाड़ का चन्द्रसेन इस राजतिलक समारोह में उपस्थित था।
- जगमाल अकबर के पास चला गया। अकबर ने उसे जहाजपुर परगना दे दिया।
- कालान्तर में अकबर ने जगमाल को सिरोही का आधा भाग दिया था।
- प्रताप को समझाने के लिए अकबर ने 4 दूत भेजे थे।

4 दूतः-

1. जलाल खां कोरची - 1572
2. मानसिंह - 1573
3. भगवन्तदास - 1573
4. टोडरमल - 1573

हल्दीघाटी का युद्ध-18 जून-1576 ई.

↓

प्रताप v/s अकबर

प्रताप

1. कृष्णदास चूंडावत (सलूम्बर)
2. रामशाह तोमर (ग्वालियर)
3. हाकिम खां सूर (अफगान सेना)
4. राणा पूंजा (भील सेना)

अकबर

1. मानसिंह
2. आसफ खां

- चेतक के घायल होने के कारण प्रताप को युद्ध भूमि से बाहर जाना पड़ा अतः झाला बीदा (झाला मान) ने युद्ध का नेतृत्व किया।
- मिहतर खां नामक मुगल सैनिक ने युद्ध में अकबर के आने की झूठी सूचना दी थी।
- मानसिंह प्रताप को अकबर की अधीनता स्वीकार करने में असफल रहा। अतः अकबर ने मानसिंह तथा आसफ खां का अपने दरबार में आना बंद कर दिया।
- **1576** ई. अकबर स्वयं मेवाड़ पर आक्रमण कर देता है।
- अकबर ने उदयपुर पर अधिकार किया तथा इसका नाम बदलकर मुहम्मदाबाद कर दिया तथा इसे जगन्नाथ कच्छावा तथा फखरुद्दीन को सौंप दिया।
- मुगल सेनापति शाहबाज खान ने कुम्भलगढ़ पर 3 (1577,1578, 1579) आक्रमण किए।

शेरपुर घटना-1580 ई.

- अमर सिंह ने अब्दुल रहीम की बेगमों को गिरफ्तार कर लिया था। लेकिन प्रताप ने उन्हें ससम्मान वापस पहुँचाया था।

दिवेर का युद्ध 1582 ई.

- इस युद्ध में प्रताप ने मुगल सेना को हरा दिया।
- अमरसिंह ने मुगल सेनापति सुल्तान खान को मार दिया था।
- जेम्स टॉड ने इस युद्ध को ''मेवाड़ का मेराथन'' कहा था।
- 1585 ई.में मुगल सेनापति जगन्नाथ कच्छावा ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।
- यह अकबर का प्रताप पर अंतिम आक्रमण था।
- प्रताप ने चावंड को अपनी राजधानी बनाया।
- 19 जनवरी 1597 ई. को चावंड में प्रताप की मृत्यु हो गई।
- प्रताप की छतरी(8 खम्भों की)-बांडोली (उदयपुर)
- चित्तौड़गढ़ तथा मांडलगढ़ को छोड़कर प्रताप ने सम्पूर्ण मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लिया था।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-

- मालपुरा (टोंक) नीलकंठ महादेव मंदिर का निर्माण करवाया था।
- चावंड में चामुण्डा माता मंदिर, महल तथा बावड़ी का निर्माण करवाया गया।
- चावंड से मेवाड़ चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारंभ हुआ था।
- चित्रकार-निसारदीन/नासीरुद्दीन
- चेतक की छत्तरी-बलीचा (राजसंमद)
- **दरबारी विद्वान-**
  1. चक्रपाणि मिश्र
     - राज्याभिषेक
     - मुहूर्तमाला
     - विश्व वल्लभ (तालाब तथा उद्यान निर्माण के बारे में जानकारी)
  2. हेमरत्न सूरी - गौरा, बादल पद्मिनी चौपाई
  3. सादुलनाथ त्रिवेदी - प्रताप ने इन्हें मंडेर जागीर दी थी। यह जानकारी उदयपुर अभिलेख-(1588 ई.) से मिलती है।
  4. माला सांदू
  5. रामा सांदू

- ➢ **आवरगढ़-** प्रताप की अस्थायी राजधानी
- ➢ **मायरा की गुफा-** मेवाड़ का शस्त्रागार

भामाशाह तथा ताराचन्दः-

- चूलिया नामक गांव में इन्होंने प्रताप से मुलाकात की तथा प्रताप की आर्थिक सहायता की।
- अब प्रताप 25000 सैनिक 12 वर्षो तक रख सकते थे।
- प्रताप ने भामाशाह को अपना प्रधानमंत्री बनाया।
- भामाशाह को मेवाड़ का उध्दारक कहा जाता है।

हल्दीघाटी का युद्ध

- अबूल फजल के अनुसार - खमनौर का युद्ध
- बंदायूँनी के अनुसार - गोगुन्दा का युद्ध
- आदर्शी लाल श्रीवास्तव - बादशाह बाग का युद्ध

- जेम्स टॉड - मेवाड़ की थर्मोपल्ली
- बंदायूँनी ने इस युद्ध में भाग लिया था।

मुगल	-	**मेवाड़**
सैनिक शिविर मोलेला	-	लोसिंग
बदायूंनी के अनुसार-5000,	-	3000
श्यामलदास जी 80,000	-	20, 000
हाथी		
1.मरदाना		1.लूणा
2. गजमुक्ता		2.रामप्रसाद (पीर प्रसाद)

अमरसिंह-(1597-1620 ई.)

मुगल-मेवाड़ संधि (5 फरवरी-1615 ई.)

↓

जहाँगीर + अमर सिंह-I

संधि की शर्तें-

1. मेवाड़ का राणा मुगल दरबार में नहीं जाएगा।
2. मेवाड़ का युवराज मुगल दरबार में जाएगा।
3. मेवाड़ मुगलों को 1000 घुड़सवार सैनिकों की सहायता देगा।
4. चित्तौड़ का किला मेवाड़ को वापस दिया जाएगा। लेकिन इसका पुनर्निर्माण नहीं करवाया जा सकता है।
5. वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं किए जाएंगे ।

- मेवाड़ की तरफ से शुभकरण तथा हरिदास संधि का प्रस्ताव लेकर गए थे।
- मुगलों की तरफ से खुर्रम (शाहजहाँ) ने संधि की।
- अमरसिंह ने यह संधि युवराज कर्णसिंह के दरबार में की थी।
- वह इस संधि से निराश था तथा नौचौकी नामक स्थान पर जाकर रहने लगा।
- कालान्तर में यहां राजसमन्द झील का निर्माण करवाया गया।
- युवराज कर्णसिंह मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में गया।
- जहाँगीर ने उसे 5000 का मनसबदार बनाया।
- सर टॉमस रो के अनुसार **मुगल बादशाह जहाँगीर ने मेवाड़ के राणा को बुद्धि से अधीन किया था बल से नहीं।**

संधि की जानकारी के स्रोतः-

1. जहांगीर का पुष्कर महल अभिलेखः 1615 ई.
2. शाहजहाँनी मस्जिद (अजमेर) अभिलेख-1637 ई.

- जहाँगीर ने अमरसिंह तथा कर्णसिंह की मूर्तिया आगरा के किले में लगाई थी।

कर्णसिंह (1620-28 ई.)

- चावण्ड मेवाड़ की राजधानी-28 साल तक रही।
- उदयपुर में कर्णविलास तथा दिलखुश महलों का निर्माण करवाया था।
- जगमंदिर महल (पिछोला झील के किनारे) का निर्माण शुरू करवाया था।
- अपने विद्रोह के दिनों में खुर्रम इस महल में रूका था।

जगतसिंह-I(1628-52 ई.)

- जगमंदिर का निर्माण पूर्ण करवाया था।
- उदयपुर में जगन्नाथ मंदिर (जगदीश मंदिर) का निर्माण करवाया था।
- इसे सपने में बना मंदिर कहा जाता है।
- यह मंदिर पंचायतन स्थापत्य शैली में बना हुआ है।
- **वास्तुकार-**
  - अर्जुन
  - भाणा
  - मुकुन्द
- जगन्नाथ राय प्रशसित के लेखक- कृष्णभट्ट
  - यह प्रशस्ति हल्दीघाटी युद्ध की जानकारी देती है।
  - अपनी धाय माँ नौजू बाई के लिए जगतसिंह ने विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया था।
  - इसे नौजू बाई का मंदिर भी कहा जाता है।
- **जगत सिंह अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध था।**

राजसिंह-(1652-80 ई.)

- इसने शाहजहाँ के खिलाफ आक्रामक नीति अपनायी तथा चित्तौड़गढ़ किले का पुनः निर्माण शुरू करवा दिया।
- मुगल सेनापति 'सादुल्ला खां' ने इसे रूकवाया।
- शाहजहां ने चन्द्रभान को राजसिंह से बातचीत के लिए भेजा।
- मुगल उत्तराधिकार संघर्ष में इसने औरंगजेब का साथ दिया था।
- इस समय इसने टीका दौड़ का आयोजन करवाया तथा कई मुगल क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।
- औरंगजेब के जजिया कर का विरोध किया था।
- जोधपुर के अजीत सिंह को औरंगजेब के खिलाफ सहायता दी।
- इसे राठौड़-सिसोदिया गठबंधन कहा जाता है।
- औरंगजेब के खिलाफ हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियों की रक्षा की थी।
- औरंगजेब के खिलाफ हिंदू राजकुमारियों की रक्षा की थी।
- जैसे-रूपनगढ़ (किशनगढ़) की राजकुमारी चारुमती

- **सहल कंवरः-**
  (बूंदी की हाड़ी रानी)
- यह सलूम्बर के सामन्त रतन सिंह चूंडावत की हाड़ी रानी थी।
- अपने पति के निशानी मांगने पर इसने अपना सिर काट कर दे दिया था।
- मेघराज मुकुल की कविता सैनाणी सहल कंवर पर लिखी गई।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-

1. श्री नाथ मंदिर - सिहाड़/नाथद्वारा (राजसमंद)
2. द्वारिकाधीश मंदिर - कांकरोली (राजसमंद)
3. अम्बा माता मंदिर - उदयपुर

- 1672 ई. में गोविन्द दास तथा दामोदार दास श्रीनाथ जी की मूर्ति मथुरा से लेकर आए थे।

जल स्त्रोतों का निर्माण -

1. त्रिमुख बावड़ी/ जया बावड़ी(उदयपुर)- रानी रामरसदे ने इसका निर्माण करवाया था।
2. जाना सागर तालाब(उदयपुर)-माता जानादे राठौड़ ने इसका निर्माण करवाया था।
3. राजसमन्द झील- राजसिंह ने इसका निर्माण करवाया ।

दरबारी विद्वान-

1. किशोरदास - राज प्रकाश
2. सदाशिव भट्ट - राज रत्नाकर
3. मान - राजविलास
4. गिरधर आसियां - सगत सिंघ रासौ (महराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह की जानकारी)
5. कल्याणदास - गुण गोविन्द
6. रणछोड़ भट्ट तैलंग -
    - राज प्रशस्ति
    - अमर काव्य वंशावली

राज प्रशस्तिः-

- नौचौकी नामक स्थान पर यह राजसमंद झील के पास स्थित है।
- यह संस्कृत भाषा में 25 पत्थरों पर लिखी गई।
- यह प्रशस्ति निम्नलिखित जानकारियाँ प्रदान करती है।
    1. बप्पा रावल से राज सिंह तक
    2. हल्दी घाटी का युद्ध
    3. प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह
    4. मुगल मेवाड़ संधि की जानकारी
    5. अकाल राहत कार्य (1662-76 ई.)

अमर काव्य वंशावली-

- यह महाराणा अमर सिंह II के समय लिखी गई थी।
- यह प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह तथा चेतक की जानकारी देती है।

राजसिंह की उपाधियाँ-

1. विजयकटकातु
2. हाइड्रोलिक रुलर

जयसिंह-(1680-98 ई.)

- यह राठौड़ सिसोदिया गठबंधन से अलग हो गया था।
- 1681 ई. में इसने औरंगजेब से संधि कर ली थी।
- जजिया कर के बदले में औरंगजेब को पुर, मांडल तथा बदनौर के परगने दिए थे।
- जयसमन्द झील का निर्माण करवाया।
- अपनी परमार रानी कोमलादेवी के लिए झील के पास महल का निर्माण करवाया था। इसे रूठीरानी का महल कहा जाता हैं
- झील के पास नर्मदेश्वर मंदिर बना हुआ है।

अमरसिंह-II (1698-1710 ई.)

देबारी समझौता (1708 ई.)

- अमरसिंह-II (मेवाड़)
- अजीतसिंह (मारवाड़)
- सवाई जयसिंह (आमेर)

} V/S बहादुर शाह-I (मुगल बादशाह)

समझौते की शर्तेः-

1. अजीतसिंह तथा सवाई जयसिंह को उनके राज्य वापस दिलाने में सहायता की जाएगी।
2. अमरसिंह-II ने अपनी राजकुमारी चन्द्रकंवर का विवाह सवाई जयसिंह से किया तथा यह निर्धारित किया गया। कि चन्द्रकंवर का बेटा आमेर का अगला राजा होगा।

- 1709 ई. में अमरसिंह II ने पुर, मांडल तथा बदनौर पर पुनः अधिकार कर लिया था।

संग्रामसिंह–II (1710-34 ई.)

बांदनवाड़ा का युद्ध-(1711 ई.)

↓

संग्रामसिंह-II v/s बहादुर शाह-I

- इस युद्ध में संग्राम सिंह-द्वितीय की जीत हुई थी।
- मुगल सेनापति रणबाज खां लड़ता हुआ मारा गया।
- सीसारमा में इसने वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- वैद्यनाथ प्रशस्ति का लेखकः रूप भट्ट
- यह प्रशस्ति बांदनवाड़ा युद्ध की जानकारी देती है।
- उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी का निर्माण करवाया।
- मराठो ने मेवाड़ से चौथ वसूल किया।

जगतसिंह–II (1734- 51 ई.)

हुरड़ा सम्मेलन-17 July 1734 ई.

1. यह राजस्थान के राजपूत राजाओं का मराठों के खिलाफ सम्मेलन था।
2. जगतसिंह (मेवाड़)
3. सवाई जयसिंह (जयपुर)
4. अभयसिंह (जोधपुर)
5. बख्तसिंह (नागौर)
6. जोरावरसिंह (बीकानेर)
7. राजसिंह (किशनगढ़)
8. दुर्जनसाल (कोटा)
9. दलेलसिंह (बून्दी)
10. गोपालपाल (करौली)

- हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता जगतसिंह- II ने की।
- **सम्मेलन के निर्णय-**
    - सभी राजा मराठों के खिलाफ एक दूसरे की सहायता करेंगे।
    - वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद रामपुरा (मालवा) में मराठों के खिलाफ युद्ध किया जाएगा।
- राजाओं के आपसी मतभेदों के कारण यह सम्मेलन असफल हो गया था।
- जगतनिवास महल का निर्माण करवाया था।

दरबारी विद्वान-

1. नेकराम-

1. जगत विलास
2. सेकार भाव

2. देवकर्ण-

1. वाराणसी विलास
    - यह जगतसिंह-II का दीवान था।

भीमसिंह–(1778- 1828 ई.)

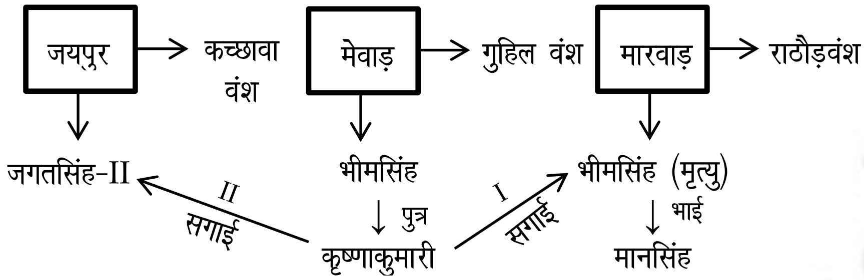

गिंगोली/परबतसर-(डीडवाना) का युद्ध-(1807 ई.)

↓

जगतसिंह-II v/s मानसिंह

- इस युद्ध में जगतसिंह द्वितीय की जीत हुई।
- अमीर खाँ पिंडारी तथा अजीत सिंह चुण्डावत के कहने पर कृष्णा कुमारी को जहर दे दिया गया था।
- 13 जनवरी,1818 ई. को भीमसिंह अंग्रेजों से संधि कर लेता है।

दरबारी विद्वान : – किसना जी आढ़ा– 'भीम विलास'

डूंगरपुर का इतिहास

- डूंगरपुर में गुहिल वंश का शासन था।

सामन्त सिंह–
- यह जालौर के कीर्तिपाल सोनगरा से हार गया था। अतः यह वागड़ चला गया था।
- इसने परमारों को हराकर वागड़ में गुहिल राज्य की स्थापना की।
- इसने बड़ौदा (डूंगरपूर) को अपनी राजधानी बनाया।
- इसका छोटा भाई कुमार सिंह, कीर्तिपाल सोनगरा को हरा कर मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लेता है।
- गुजरात के भीम-द्वितीय चालुक्य ने सामंत सिंह को हराया था तथा वागड़ पर अधिकार कर लिया।
- तराईन के दूसरे युद्ध(1192 ई.) में यह पृथ्वीराज चौहान की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया था।

जयत सिंह–
- इसने चालुक्यों को हराकर वागड़ में पुनः गुहिल राज्य की स्थापना की।

डुंगर सिंह–
- 1358 ई. इसने डूंगरपुर को अपनी राजधानी बनाया था।

गोपीनाथ–
- इसने डूंगरपूर में सोमनाथ मंदिर तथा गैब सागर तालाब का निर्माण करवाया था।
- गुजरात के अहमद शाह ने इसे हराया था।
- कुम्भलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार कुम्भा ने वागड़ को गुजरात के आधिपत्य से मुक्त करवाया था।

उदयसिंह–
- यह खानवा के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया।
- इसने वागड़ राज्य का विभाजन किया था।

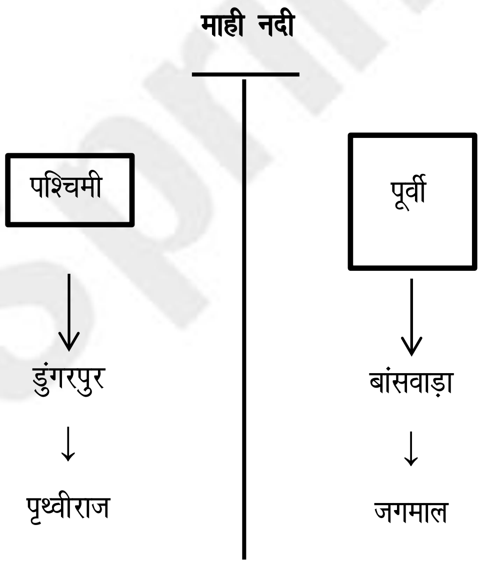

Springboard ACADEMY

आसकरणः-

- इसने अकबर के खिलाफ मारवाड़ के चन्द्रसेन को शरण दी थी।
- यह 1576 ई. में अकबर से संधि कर लेता है। लेकिन यह कभी भी मुगलों की तरफ से लड़ने नहीं गया था।
- इसकी रानी प्रेमल देवी ने डूंगरपूर में नवलखा बावड़ी का निर्माण करवाया था।

जसवन्त सिंह-II

- 1818 ई. में इसने अंग्रेजों से संधि कर ली थी।
- 1845 ई. में अंग्रेजों ने इसे हटा दिया था तथा यह वृंदावन चला गया था।

बांसवाड़ा का इतिहास

- बांसवाड़ा में गुहिल वंश का शासन था।

जगमाल–

- इसने अपने पिता उदयसिंह के साथ खानवा के युद्ध में भाग लिया था।
- यह इस युद्ध में घायल हो गया था।
- इसने बांसवाड़ा में स्वतंत्र गुहिल राज्य की स्थापना की थी।

प्रताप सिंह–

- यह महाराणा प्रताप का समकालीन था।
- 1576 ई. में यह अकबर से संधि कर लेता है।

उम्मेदसिंह–

- 1818 ई. में यह अंग्रेजों के साथ संधि कर लेता है।

प्रतापगढ़ का इतिहास

- प्रतापगढ़ में गुहिल वंश का शासन था।

क्षेमकर्ण-

- यह मेवाड़ के राणा कुंभा का छोटा भाई था।
- इसे सादड़ी की जागीर दी गई थी।
- इसने कुंभा के खिलाफ विद्रोह कर दिया तथा सहायता के लिए मालवा चला गया।

सूरजमल-

- यह मालवा की सहायता से देवलिया का राजा बना।

बाघसिंह-

- इसने खानवा के युद्ध में भाग लिया था।
- चित्तौड़ के दूसरे साके में इसने केसरिया का नेतृत्व किया था।

सामन्तसिंह-

- 1818 ई. में इसने अंग्रेजों से संधि कर ली थी।

उदयसिंह-

- इसने प्रतापगढ़ को अपनी राजधानी बनाया था।

शाहपुरा का इतिहास

- शाहपुरा में गुहिल वंश का शासन था।

सुजान सिंह–

- मेवाड़ महाराणा जगतसिंह-प्रथम ने इसे फूलिया परगना दिया था।
- 1631 ई. में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने इसे स्वतंत्र राजा घोषित कर दिया था।
- इसने शाहपुरा की स्थापना की तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।
- शाहपुरा राजस्थान की सबसे छोटी रियासत थी।

राठौड़ वंश का इतिहास

राठौड़ वंश की उत्पत्ति

कन्नौज (U.P.) → गहड़वाल वंश

दक्षिण भारत → राष्ट्रकूट वंश

राठौड़ रियासतें :-

1. मारवाड़/जोधपुर
2. बीकानेर
3. किशनगढ़

मारवाड़ /जोधपुर का इतिहास

- मारवाड़ में राठौड़ वंश का शासन था।
- मारवाड़ राजस्थान की सबसे बड़ी रियासत थी।

राव सीहा :-

- 1240 ई. में पालीवाल ब्राह्मणों की सहायता हेतु यह बदायूं (कन्नौज) से मारवाड़ आया था।
- राजधानी - खेड़ (बालोतरा)
- छतरी - बीठू (पाली)।

धूहड़ :-

- कर्नाटक से अपनी कुलदेवी नागणेची माता की मूर्ति लेकर आया।
- इसे नागाणा (बालोतरा) में स्थापित किया।

राव मल्लीनाथ :-

- राजधानी - मेवानगर (बालोतरा)
- अपनी रानी रूपादे के प्रभाव में ये सन्त बन गए थे।
- 1399 ई. में इन्होंने मारवाड़ में हरिकीर्तन का आयोजन करवाया था।
- इनके कारण बाड़मेर क्षेत्र का नाम मालाणी पड़ गया था।
- इन्होंने मालवा की 13 सैनिक टुकड़ियों को पराजित किया था।

गणगौर पर गिंदोली के गीत गाए जाते है।

राव चुण्डा :-

- ईन्दा प्रतिहारों ने अपनी राजकुमारी का विवाह चुण्डा से किया तथा मण्डोर दहेज में दिया।
- अब राठौडों की राजधानी मण्डोर बन गई थी।
- इसकी रानी चाँद कंवर ने जोधपुर में चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया।
- यह पुंगल (बीकानेर) के भाटियों के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।
- इसने अपने बड़े बेटे रणमल को राजा ना बनाकर छोटे बेटे कान्हा को राजा बनाया। (रानी किशोर कंवर के प्रभाव में)
- कालांतर में मेवाड़ की सेना की सहायता से रणमल मारवाड़ का राजा बना।

राव जोधा (1438-89 ई.)

- 1459 ई. में इसने जोधपुर की स्थापना की तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।
- इसने मेहरानगढ़ का निर्माण करवाया था तथा करणी माता ने मेहरानगढ़ किले की नींव रखी थी।
- रानी जसमादे ने रानीसर तालाब का निर्माण करवाया था।
- जोधा ने दिल्ली के सुल्तान बहलोल लोदी की सेना को हराया।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार- राव जोधा मारवाड़ का पहला प्रतापी शासक था।
- जोधपुर में चामुण्डा माता तथा नागणेची माता का मंदिर बनवाया था।
- चामुंडा माता मंडोर के प्रतिहारों की देवी थी। पर जोधा इस मूर्ति को जोधपुर ले गया था।
- इसके बेटों बीका व दूदा ने बीकानेर तथा मेड़ता में राठौड़ राज्यों की स्थापना की।

राव मालदेव (1531-62 ई.)

- पिता- गांगा
- माता - पदमा कुमारी (सिरोही के जगमाल देवड़ा की पुत्री)
- अपने युवराज काल में इसने खानवा के युद्ध में भाग लिया था।
- मालदेव अपने पिता की हत्या कर मारवाड़ का शासक बना।
- राजतिलक के समय मालदेव के पास केवल 2 परगने थे-
  - (i) जोधपुर
  - (ii) सोजत (पाली) - राजतिलक हुआ।
- कालांतर में इसने 52 युद्ध तथा 58 परगने जीते थे।

जैसे :-

1. पोकरण - जैसलमेर के भाटियों से छीन लिया था।
2. बिलाड़ा - सिरवियों से
3. सिवाणा - डुंगरसिंह से
4. रायपुर/भाद्राजूण - वीरा सींधल से
5. नागौर - दौलत खाँ से
6. जालौर - सिकन्दर खाँ से

पाहेबा/साहेबा का युद्ध -1541 ई.

↓

मालदेव v/s जैतसी (बीकानेर)

- जैतसी लड़ता हुआ मारा गया।
- मालदेव जीत गया तथा बीकानेर पर अधिकार कर 'कूम्पा' को बीकानेर का प्रशासक बना दिया।
- जैतसी के बेटे कल्याणमल ने दिल्ली के सुल्तान शेरशाह सूरी से सहायता मांगी।
- दरियाजोश हाथी को लेकर मालदेव तथा वीरमदेव (मेड़ता) के बीच विवाद था।

अतः मालदेव ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया तथा वीरमदेव भी शेरशाह सूरी के पास चला गया।

मालदेव-हुमायूँ सम्बन्ध :-

- शेरशाह सूरी से हारने के बाद हुमायूँ मारवाड़ से होकर जा रहा था
- जोगीतीर्थ नामक स्थान से इसने मालदेव के पास सहायता हेतु 3 दूत भेजे।

3 दूतः-

1. अतका खां
2. मीर समंद
3. रायमल सोनी

- मालदेव ने हुमायूँ को बीकानेर तथा सैनिक सहायता देने का वादा किया लेकिन हुमायूं मालदेव पर विश्वास नहीं कर सका तथा अपने पुस्तकालयाध्यक्ष 'मूल्ला सूर्ख' के कहने पर वह सिंध की तरफ चला गया।

अमरकोट के राजा वीरसाल सोढ़ा ने हुमायूँ को शरण दी।

शेरशाह सूरी व मालदेव सम्बन्ध :-

जैतारण/गिरि-सुमेल का युद्ध (ब्यावर):-5 जनवरी 1544 ई.

↓

मालदेव v/s **शेरशाह सूरी**

↓ ↓

जैता **कल्याणमल (बीकानेर)**

कूम्पा **वीरमदेव (मेड़ता)**

- शेरशाह सूरी की चालाकी के कारण मालदेव जोधपुर चला गया।
- जैता एवं कूम्पा ने शेरशाह के खिलाफ युद्ध किया।
- शेरशाह युद्ध जीत गया था।
- लेकिन जीतने के बाद शेरशाह सूरी ने कहा था कि-

''मैं मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता''

- शेरशाह जोधपुर पर अधिकार कर लेता है तथा उसने ख्वास खाँ को जोधपुर सौंप दिया।
- मालदेव सिवाणा (बाड़मेर) चला गया।

(मारवाड़ के राठौड़ों की शरणस्थली - सिवाणा)

- शेरशाह ने ख्वास खाँ को जोधपुर सौंप दिया।
- थोडे दिनों बाद मालदेव ने जोधपुर पर पुनः अधिकार कर लिया।

उमादे :-

- मालदेव की रानी थी।
- जैसलमेर के लूणकरण भाटी की राजकुमारी थी ।
- भारमली नामक दासी के कारण यह मालदेव से नाराज हो गई थी। अतः इसे ''रूठी रानी'' कहा जाता है।
- इसने अपना कुछ समय अजमेर के तारागढ़ किले में बिताया था। लेकिन बाद में केलवा (राजसमंद) चली गयी थी।

दरबारी विद्वान :-

1. **आशानन्द जी**- इन्होने पाहेबा के युद्ध में भाग लिया।

    पुस्तकें :-

    1. उमादे भटियाणी रा कवित्त
    2. बाघा-भारमली रा दूहा
    3. गोगाजी री पेड़ी।

2. **ईसरदास जी** :-पश्चिमी राजस्थान के लोकदेवता :-

    पुस्तकें :-

    1. हाला झाला री कुण्डलिया (सूर सतसई)
    2. देवीयाण
    3. हरिरस

स्थापत्य कला :-

- मालदेव ने जोधपुर का परकोटा बनवाया।
- मालदेव ने कई किलों का निर्माण करवाया था।
    - सोजत - पाली
    - पोकरण - जैसलमेर
    - रीयां - नागौर
    - मेड़ता - नागौर
- रानी स्वरूपदे ने स्वरूप सागर तालाब का जोधपुर में निर्माण करवाया जिसे ''बहू जी रो तालाब'' भी कहते हैं।

मालदेव की उपाधियाँ :-

- हिन्दू बादशाह
- हशमत वाला राजा (अबुल फजल तथा निजामुद्दीन द्वारा)।

- मालदेव ने अपने बड़े बेटों राम व उदयसिंह को राजा ना बनाकर अपने छोटे बेटे चन्द्रसेन को राजा बनाया।

चन्द्रसेन-(1562-82 ई.):-

- इसने अपने भाई राम को नाडौल (पाली) तथा उदयसिंह को लोहावट के युद्ध में हराया।
- राम अकबर के पास चला गया। 1564 ई.में मुगल सेनापति हुसैनकुली बेग ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया था तथा चन्द्रसेन भाद्राजूण चला गया।
- 1570 ई. में चन्द्रसेन अकबर के नागौर दरबार में गया लेकिन अकबर का झुकाव उदयसिंह की तरफ देख वह अकबर से बिना मिले ही वापस आ गया।
- अकबर ने भाद्राजूण पर आक्रमण किया।
- 1574 ई. अकबर ने बीकानेर के रायसिंह को आक्रमण हेतु भेजा।
  रायसिंह ने कल्ला राठौड़ से सोजत (पाली) छीन लिया। लेकिन वह पत्ता राठौड़ से सिवाणा नहीं जीत पाया।
- 1576 ई. मुगल सेनापति शाहबाज खान ने सिवाणा पर अधिकार कर लिया।
- 1576 ई. चन्द्रसेन ने पोकरण का किला जैसलमेर के हरराज को बेचा।
- इसने रामपुरा क्षेत्र में मुगल सेनापति जलाल खान को मार दिया।
- 1581 ई. में सारंग की पहाड़ियों (पाली) में सिंचियाई नामक गाँव में चन्द्रसेन की मृत्यु हो गई। (बेरिसाल द्वारा)
- उसने आजीवन अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की थी।

चन्द्रसेन की उपाधियाँ :-

- मारवाड़ का प्रताप (विश्वेश्वर नाथ रेऊ द्वारा)
- प्रताप का अग्रगामी
- मारवाड़ का भूला बिसरा राजा।

नागौर दरबार:-(1570 ई.)

- मुगल बादशाह अकबर द्वारा इसका आयोजन करवाया था ।
- घोषित उद्देश्य- अकाल राहत कार्य।
  वास्तविक उद्देश्य- राजस्थान के राजाओं को अधीनता स्वीकार करवाना।
- राजस्थान के कई राजाओं ने इस दरबार में अधीनता स्वीकार कर ली थी।

  जैसे-
  - कल्याणमल (बीकानेर)
  - हरराज (जैसलमेर)
  - उदयसिंह (चन्द्रसेन का भाई)
- इस दौरान अकबर ने नागौर में शुक्र तालाब का निर्माण करवाया।
- अकबर ने बीकानेर के राजकुमार रायसिंह को जोधपुर का प्रशासक बनाया था। (1572-74 ई.)

मोटा राजा उदयसिंह-(1583-95 ई.)

- मारवाड़ का प्रथम राजा जिसने मुगल अधीनता स्वीकार की।
- अपनी राजकुमारी मानीबाई (जोधाबाई) का विवाह जहाँगीर से किया था।
- मानीबाई का बेटा खुर्रम (शाहजहाँ) था।
- मानीबाई की उपाधि - जगत गौंसाई।

कल्ला रायमलोत

- यह मोटा राजा उदयसिंह के भाई रायमल का बेटा तथा सिवाणा का सामंत।
- 1589 ई. में अकबर ने सिवाणा पर आक्रमण किया। इस समय सिवाणा का दूसरा साका हुआ।
    - केसरिया – कल्ला रायमलोत
    - जौहर – भान कंवर (राव सुरजन की बेटी)
- बीकानेर के पृथ्वीराज राठौड़ ने कल्ला रायमलोत के **'मरसिये'** लिखे थे।

मरसिये- मरणोपरान्त वीरता पर लिखे गये दोहे।

गजसिंह–(1615-38 ई.):-

- जहांगीर ने इसे 'दलथम्भन' की उपाधि दी थी।
- अपनी प्रेमिका अनारा बेगम के कहने पर अपने छोटे बेटे जसवन्त सिंह को राजा बनाया था
- बड़े बेटे अमर सिंह राठौड़ को नागौर दे दिया गया।
- बेटे
    - बड़ा :- अमरसिंह - नागौर
    - छोटा :- जसवंतसिंह को राजा बनाया (प्रेमिका अनारा बेगम के कहने पर)

अमरसिंह राठौड़:-

- यह नागौर का राजा था।

मतीरे री राड़ (1644 ई.)

↓

अमरसिंह (नागौर) v/s कर्णसिंह (बीकानेर)

- इस युद्ध में कर्णसिंह की जीत हुई
- काशी छंगाणी की पुस्तक **छत्रपति रासौ** से इस युद्ध की जानकारी मिलती है।
- शाहजहाँ के दरबार में मीरबक्शी सलावत खाँ को मार दिया था।
- अमरसिंह को "कटार का धणी" कहा जाता है।
- अर्जुनसिंह गौड़ ने अमरसिंह की हत्या कर दी थी ।
- छतरी-नागौर (16 खम्भों की)
- आगरा किलेका बुखारा दरवाजे को अमरसिंह दरवाजा कहलाता है।
- शाहजहाँ ने इस दरवाजे को बंद करवा दिया था।
- 1809 ई. में अंग्रेज अधिकारी जॉर्ज स्टील ने इस दरवाजे को खुलवाया था।
- कालांतर में अमरसिंह राजस्थान के लोकगीतों एवं कहानियों का नायक बन गया।

जसवंतसिंह–(1638-78 ई.)

- संरक्षक- राजसिंह कूम्पावत
- इसने मुगल उत्तराधिकारी संघर्ष में भाग लिया था।

धरमत का युद्ध-(1658 ई.)

↓

- दारा
- जसवंत सिंह v/s औरंगजेब + मुराद
- कासिम खाँ

- युद्ध से पहले कासिम खाँ औरंगजेब से मिल गया था। तथा इस युद्ध में औरंगजेब की जीत हुई।
- घायल होने के कारण जसवंत सिंह वापस जोधपुर चला गया।
- इस समय इसकी हाड़ी रानी जसवंतदे ने किले के दरवाजे बंद कर दिये थे।

- 1659 ई.में खजुआ के युद्ध (आगरा) से पहले जसवंत सिंह शुजा से मिल गया तथा उसने औरंगजेब का सैनिक शिविर लूट लिया था।
- इस युद्ध में भी औरंगजेब की जीत हुई।
- 1662 ई.में शाइस्ता खाँ की सहायता के लिए औरंगजेब ने जसवन्त सिंह को दक्षिण भारत भेज दिया था।
- 1673 ई. में औरंगजेब ने इसे काबुल भेज दिया था।(काबुल का गवर्नर)
- 1678 ई. में अफगानिस्तान में जमरूद का थाना नामक स्थान पर मृत्यु हो गई।
- इसकी मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा था कि **"आज कूफ्र का दरवाजा टूट गया।"**

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ :-

जसवंत सिह की पुस्तकें -

1. आनन्द विलास
2. भाषा भूषण
3. प्रबोध चन्द्रोदय
4. अपरोक्ष सिद्धान्तसार।

दरबारी विद्वानः-

1. मुहणौत नैणसीः-

पुस्तकेंः-

1. नैणसी री ख्यात (राजस्थान की प्रथम ख्यात)।
2. मारवाड़ रा परगना री विगत
   - मारवाड़ का प्रशासनिक ग्रंथ
   - मारवाड़ की सामाजिक-आर्थिक जानकारी
   - जनगणना की जानकारी
   - इसे मारवाड़ का गजट भी कहते है।

➢ नैणसी तथा इसके भाई सुंदरदास को गबन के आरोप में गिरफ्तार कर लिया था। अतः इन्होंने जेल में आत्महत्या कर ली थी ।

➢ मुंशी देवीप्रसाद ने नैणसी को **"राजपूताने का अबुल फजल"** कहा है।

2. नरहरिदास - अवतार चरित्र।

3. नवीन - नेह निधान

- जसवंत सिंह ने महाराष्ट्र में जसवंतपुरा नामक नगर की स्थापना की थी।
- इसने जोधपुर में अनार के बगीचे लगवाये थे ।
- हाड़ी रानी जसवंतदे ने जोधपुर में 'राईका बाग महल' का निर्माण करवाया था।
- रानी अतिरंगदे ने जानासागर तालाब (शेखावत जी का तालाब) का निर्माण करवाया था।

पृथ्वीसिंह

- यह जसवंत सिंह का बेटा था।
- इसने शेर के साथ लड़ाई की थी।
- औरंगजेब ने इसे जहरीले वस्त्र देकर मरवा दिया था।

अजीतसिंह व दलथम्भन

- ये जसवंतसिंह के बेटे थे।
- औरंगजेब ने इन्हें 'रूपसिंह राठौड़ (किशनगढ़) की हवेली' (दिल्ली) में नजरबंद कर दिया था।

अजीतसिंह–(1679-1724 ई.)

- दुर्गादास राठौड़, मुकुन्ददास खींची तथा गौरा की सहायता से अजीत सिंह को मारवाड़ लेकर आया।
- गौरा को मारवाड़ की पन्नाधाय कहा जाता है।
- मारवाड़ के राष्ट्रगान धूसों में गौरा का नाम लिया जाता है।
- गौरा की छतरी-जोधपुर
- अजीतसिंह को कालन्द्री (सिरोही) नामक गाँव में जयदेव पुरोहित के घर मुकुन्ददास खींची की देखरेख में रखा गया था।
- मेवाड़ महाराणा राजसिंह ने अजीत सिंह को समर्थन दिया था।
- औरंगजेब ने नकली अजीतसिंह का नाम 'मुहम्मदीराज' रखा तथा अपनी बेटी जेबुन्निसा को सौंप दिया।

देबारी (उदयपुर) का युद्ध- (1680 ई.)

- औरंगजेब ने मेवाड़ मारवाड़ की संयुक्त सेना को हराया था।

> इसी समय मुगल सेना ने उदयपुर का जगदीश मंदिर तोड़ा था तथा नरुजी बारहठ इसकी रक्षा करते हुए मारे गए थे।

- दुर्गादास राठौड़ की चालाकी से औरंगजेब के बेटे अकबर ने औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह कर दिया।
- 1 जनवरी 1681 ई. में नाडोल में अकबर को मुगल बादशाह घोषित कर दिया।
- औरंगजेब की कूटनीति के कारण दुर्गादास तथा अकबर को दक्षिण भारत में शम्भाजी (शिवाजी के बेटे) के पास जाना पड़ा।

बुलन्द अख्तर व सफीयुतनिस्सा :-

- ये अकबर के पुत्र-पुत्री थे।
- दुर्गादास राठौड़ ने इनका पालन-पोषण किया था।
- ईश्वरदास नागर के कहने पर दुर्गादास ने इन्हे औरंगजेब को सौंप दिया था।
- 1708 ई. में देबारी समझौते के बाद अजीत सिंह ने जोधपुर पर अधिकार किया।
- इस समय अजीतसिंह ने मुगल सेना पति/जफर कुली को हराया था।
- अजीत सिंह ने दुर्गादास राठौड़ को देश निकाला दे दिया था।
- अजीत सिंह ने अपनी राजकुमारी इन्द्रकंवर का विवाह मुगल बादशाह फर्रूखसियर से किया था।
- यह अंतिम हिंदू राजकुमारी थी। जिसका विवाह किसी मुगल बादशाह से किया गया था।
- अजीत सिंह की हत्या उसके बेटे बख्त सिंह ने कर दी थी।
- अजीत सिंह के अंतिम संस्कार में कई पशु-पक्षी जल कर मर गये थे।

अजीत सिंह की पुस्तकें

1. गज उद्धार
2. गुण सार
3. भाव विरही

दुर्गादास राठौड़–

- जन्म स्थान-सालवा (जोधपुर)
- पिता - आसकरण
- माता - नेत कंवर
- आसकरण ने दुर्गादास को लुणेवा की जागीर दी थी।
- दुर्गादास राठौड़ ने अजीत सिंह को राजा बनाने के लिए मुगलों के खिलाफ 30 वर्षों (1678 ई.-1708 ई.) तक संघर्ष किया। इसे मारवाड़ के **'राठौड़ों का 30 वर्षीय संघर्ष'** कहते है।
- कालान्तर में दुर्गादास मेवाड़ चला गया था।
- मेवाड़ महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने दुर्गादास राठौड़ को रामपुरा का हकीम बनाया था।
- उज्जैन में दुर्गादास राठौड़ की मृत्यु हो गई थी।
- दुर्गादास राठौड़ की छत्तरी उज्जैन (क्षिप्रा नदी के किनारे)

दुर्गादास राठौड़ की उपाधियाँ

- राठौड़ों का यूलीसेस (जेम्स टॉड के अनुसार)
- राजपूताने का गैरीबाल्डी
- मारवाड़ का अणबिन्धियाँ मोती

अभयसिंह-(1724-49 ई.)

- खेजड़ली घटना- भाद्रपद शुक्ल दशमी विक्रमी सम्वत 1787 (12 सितम्बर 1730 ई.)
- अमृता देवी विश्नोई के नेतृत्व में 363 लोग पेड़ पौधों को बचाने क लिए शहीद हो गए।
- पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार दिया जाता है।
- खेजड़ली में वृक्ष मेले का आयोजन किया जाता हैं

दरबारी विद्वानः-

1. **करणीदान-** सूरज प्रकास (बिड़द सिणगार)
2. **वीरभाण**- राजरूपक

- इन पुस्तकों से अहमदाबाद युद्ध की जानकारी मिलती है।
- इस युद्ध में अभयसिंह ने गुजरात के सर बुलन्द खान को हराया था।

3. **खेतसी सांदू**-
    1. भासा भारथ
    2. महाभारत का डिंगल अनुवाद
4. **जगजीवन भट्ट**-
    1. अजीतोदय
    2. अभयोदय

मानसिंह-(1803-43 ई.)

- जब मानसिंह जालौर में था। तब देवनाथ ने उसके राजा बनने की भविष्यवाणी की थी।
- नाथ सम्प्रदाय के लिए उसने जोधपुर में महामंदिर तथा उदयमंदिर का निर्माण करवाया था।
- इसने नाथ चरित्र नामक पुस्तक लिखी थी।
- इसे मारवाड़ का सन्यासी राजा कहा जाता है।
- इसने मान पुस्तक प्रकास नामक पुस्तकालय की स्थापना की थी।
- इसकी रानी प्रताप कुंवरि ने जोधपुर में तीन मंदिरों का निर्माण करवाया।
- 1818 ई. में यह अंग्रेजों से संधि कर लेता है।
- 1827 ई. नागपुर के आपा साहिब भौंसले को अंग्रेजों के खिलाफ शरण दी थी।
- 1832 ई. गर्वनर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक के अजमेर दरबार का बहिष्कार किया था।

दरबारी विद्वान-

1. **कविराजा बांकीदास जी की पुस्तकें -**
    1. बांकीदास री ख्यात
    2. मान जसो मंडन
    3. कुकवि बत्तीसी
    4. दातार बावनी
    5. 'आयो अंग्रेज मुल्क रे ऊपर' इस गीत में अंग्रेजों का साथ देने वाले राजाओं की आलोचना की गई।
2. **मंछाराम -**
    1. रघुनाथ रुपक

बीकानेर का इतिहास

- बीकानेर में राठौड़ वंश का शासन था।

राव बीका-(1465-1504 ई.)

- 1465 ई. करणी माता के आर्शीवाद से बीकानेर ने अपने काका कांधल व छोटे भाई बीदा के सहयोग से बीकानेर क्षेत्र जीता।
- करणी माता बीकानेर के राठौड़ों की ईष्टदेवी है।
- 1472 ई. में कोडमदेसर में बीका को राजा घोषित किया गया था।
- 1488 ई. में बीकानेर की स्थापना की।
- बीकानेर की स्थापना अक्षय तृतीया (आखा तीज) को की गई थी।
- बीकानेर में अक्षय तृतीया पर पतंगें उड़ाई जाती है।
- जोधपुर के राजा सूजा पर आक्रमण किया था तथा वहाँ से राजचिह्न लेकर आया था।
- कई मंदिरों का निर्माण करवाया था।
    1. भैरव मंदिर- कोडमदेसर
    2. नागणेची माता मंदिर बीकानेर

राव लूणकरण-(1505-26 ई.)

- जसनाथ जी के आर्शीवाद से यह बीकानेर का राजा बना था।
- लूणकरणसर झील का निर्माण किया था।
- नागौर के मुहम्मद खां तथा जैसलमेर के रावल जैतसी को हराया था।

ढोसी का युद्ध (1526 ई.)
↓
लूणकरण v/s अबीमीरा खाँ (नारनौल)

- इस युद्ध में लूणकरण लड़ते हुए मारे गए थे।
- बीठू सूजा ने लूणकरण को कलयूग का कर्ण कहा था।

राव जैतसी-(1527-41 ई.)

खानवा के युद्ध में इसने अपने बेटे कल्याणमल को भेजा था।

रातीघाटी का युद्ध (1534 ई.)
↓
जैतसी v/s कामरान (हूमायुँ का भाई)

- इस युद्ध में जैतसी की जीत हुई
- इस युद्ध की जानकारी बीठू सूजा की पुस्तक"राव जैतसी रो छन्द" से मिलती है।
- इस युद्ध से पहले कामरान ने भटनेर पर अधिकार कर लिया था।

कल्याणमल-(1541-74 ई.)

दरबारी विद्वानः

1. **सदाशिव भट्ट**
    1. 'राजविनोद'

रायसिंह-(1574-1612 ई.)

- यह अकबर तथा जहाँगीर का मनसबदार था।
- अकबर ने इसे 4000 का मनसबदार बनाया था।
- यह सिरोही के सुरताण तथा जालौर के ताज खाँ को अकबर के पक्ष में लेकर आया था।

कठौली का युद्ध

↓

रायसिंह v/s इब्राहीम मिर्जा

- रायसिंह ने इब्राहीम मिर्जा को हराया तथा हुसैन मिर्जा को मार दिया था।
- 1577 ई. में अकबर ने इसे 51 परगने दिए थे।
- जहाँगीर ने इसे 5000 का मनसबदार बनाया।
- खुसरों के विद्रोह के दौरान जहाँगीर ने इसे राजधानी आगरा की जिम्मेदारी सौपी थी।
- जब रायसिंह बुरहानपुर (MP) में था। तब कर्मचन्द की देख रेख में बीकानेर में जूनागढ़ किले का निर्माण किया गया। (1589-94 ई.)
- इस किले में जयमल पत्ता की मूर्तियां लगी हुई है।
- इस किले में रायसिंह प्रशस्ति लगी हुई हैं। जिसकी रचना जंइता ने की थी।
- जयसोम ने कर्मचन्द पर बुक लिखी थी। (कर्मचन्दवंशोत्कीर्णकमृकाव्यम्)
- इस पुस्तक में रायसिंह को राजेन्द्र कहा गया है।
- मुंशी देवी प्रसाद ने रायसिंह को राजपूताने का कर्ण कहा था।

रायसिंह की पुस्तकें :-

1. रायसिंह महोत्सव
2. ज्योतिष रत्नमाला
3. वैद्यक वंशावली
4. बाद्य बोधिनी (ज्योतिष ग्रंथों पर टीका)

कर्णसिंह-(1631-69 ई.)

- उपाधि- जांगलधर बादशाह (शुक सप्तति के राजस्थानी अनुवाद से इस उपाधि की जानकारी मिलती है।)
- शुक सप्तति चिंतामणि भट्ट द्वारा लिखी गई थी।
- कर्णसिंह की पुस्तक-'साहित्य कल्पद्रुम'

दरबारी विद्वान-

गंगाधर मैथिल

1. कर्णभूषण
2. काव्य डाकिनी

अनूपसिंह-(1669-98 ई.)

- औरंगजेब ने इसे औरंगाबाद तथा आधूणी का प्रशासक बनाया था।
- इस समय आधूणी को दूसरा बीकानेर कहा जाता हैं
- दक्षिण भारत में जीत के कारण औरंगजेब ने इसे माही मरातिब की उपाधि दी थी।
- दक्षिण भारत से हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियाँ लेकर आया।
- इन मुर्तियों को बीकानेर के 33 करोड़ देवी देवताओं के मंदिर में रखवाया गया।
- यहां पर हेरम्ब गणपति की मूर्ति भी है।(शेर पर सवार गणेश जी)
- दक्षिण भारत से संस्कृत पुस्तकें लेकर आया था। तथा इन्हें सरस्वती भण्डार पुस्तकालय में रखवाया था। (अनुप संस्कृत पुस्तकालय)

- कुंभा के संगीत ग्रंथों का संकलन करवाया था।
- संस्कृत पुस्तकों का राजस्थानी में अनुवाद करवाया था।

  जैसे-
  1. शुक कारिका
  2. वैताल पचीसी
  3. गीता- आनन्दराम ने गीता का अनुवाद किया था।
- अनूपसिंह की पुस्तकें :-
  1. अनूप विवेक
  2. काम प्रबोध
  3. श्राद्ध प्रयोग चिन्तामणि
  4. अनूपोदय (गीत गोविन्द पर टीका)

दरबारी विद्वानः

1. **भाव भट्ट :-**
   1. संगीत अनूप अंकुश
   2. अनूप संगीत विलास
   3. अनूप संगीत रत्नाकर
2. **अनन्त भट्ट-** तीर्थ रत्नाकर
3. **उदयचन्द्र-** पांडित्य दर्पण

सूरतसिंह-(1787-1828 ई.)

- 1805 ई. इसने भटनेर पर अधिकार किया था। उस दिन मगलवार था। अतः भटनेर का नाम बदलकर हनुमानगढ़ कर दिया गया था।
- 1814 ई. में इसने चुरू पर आक्रमण किया था।
- इस समय चुरू के सामन्त स्योजी सिंह ने चुरू के किले से चांदी के गोले चलाए थे।
- मराठा सेनापति जॉर्ज थॉमस ने बीकानेर पर 2 आक्रमण किया था।
- 1818 ई. यह अंग्रेजों से संधि कर लेता है।
- जॉर्ज थॉमस ने सबसे पहले राजस्थान के लिए राजपूताना शब्द का इस्तेमाल किया था।
- देशनोक में करणीमाता का मंदिर बनवाया था।

रतनसिंह-(1828-51 ई.)

बासनपीर का युद्ध 1829 ई.

↓

रतन सिंह v/s गज सिंह (जैसलमेर)

- इस युद्ध में गज सिंह की जीत हुई
- यह राजस्थान की किन्ही दो रियासतों के बीच अंतिम युद्ध था।
- 1837 ई. में गया (बिहार) में इसने कन्या वध पर रोक लगा थी।
- बीकानेर में रतन बिहारी मंदिर का निर्माण करवाया था।

दरबारी विद्वान-

1. **दयालदास**
   1. बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात
   2. यह पुस्तक बीका से लेकर सरदार सिंह तक बीकानेर के राजाओं की जानकारी देती है।
   3. यह राजस्थान की अंतिम ख्यात है।

गंगासिंह- (1887-1943 ई.)

- 1899 ई.में छप्पनिया अकाल का कुशलता पूर्वक प्रबन्धन किया था। अतः अंग्रेजों ने इसे केसर-ए-हिन्द की उपाधि दी।
- 1899 ई.में चीन में बॉक्सर विद्रोह को दबाया था। अतः अंग्रेजों ने इसे चीन युद्ध पदक दिया था।
- 1913 ई.में प्रजा प्रतिनिधि सभा की स्थापना की थी।
- 1916 ई.में B.H.U.की सथापना के लिए मदन मोहन मालवीय को सर्वाधिक आर्थिक सहायता दी।
- बीकानेर के ऊँटों की सेना गंगा रिसाला कहलाती थी।
- इस सेना ने प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लिया था।
- 1919 ई.में पेरिस शान्ति सम्मेलन में भाग लिया था।
- पेरिस शान्ति सम्मेलन से लौटते समय अंग्रेजों को Rome Note लिख कर भेजा था और भारत के लिए स्वशासन की मांग की।
- 1927 ई. में गर्वनर जनरल चेम्सफोर्ड ने "Chember of princes" की स्थापना की तथा गंगासिंह को इसका चांसलर बनाया गया।
- 1927 ई. गंगनहर का निर्माण करवाया था। अतः गंगासिंह को 'राजस्थान का भागीरथ' कहा जाता है।
- गर्वनर जनरल लॉर्ड इरविन ने शिवपुरी हैड नामक स्थान पर इस नहर का उद्घाटन किया था।
- पुरोहित-मदनमोहन मालवीय
- इंजीनियर-कंवरसेन
- तीनों गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था। (1930, 1931, 1932)
- महारानी विक्टोरिया का नाम बीकानेर के सिक्कों पर **'विक्टोरिया एम्प्रेस'** लिखवाया था।
- बीकानेर में ''लालगढ़ महल'' का निर्माण करवाया था।
- देशनोक (बीकानेर), रामदेवरा, गोगामेड़ी इन मंदिरों का वर्तमान स्वरूप बनवाया था।

किशनगढ़ का इतिहास

- किशनगढ़ में राठौड़ वंश का शासन था।

किशनसिंह-

- यह मारवाड़ के मोटा राजा ''उदयसिंह'' का पुत्र था।
- 1609 ई. जहाँगीर के शासन काल में इसने किशनगढ़ में राठौड़ राज्य की स्थापना की थी।

रूपसिंह- (1643-58 ई.)

- रूपनगढ़ किले का निर्माण करवाया था।
- सामूगढ़ के युद्ध में यह दारा की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया था।

राजसिंह- (1706-48 ई.)

- मुगल उत्तराधिकार संघर्ष में इसने बहादुर शाह प्रथम का साथ दिया था।
- **राजसिंह की पुस्तकें**
    - बाहुविलास
    - रसपाय

दरबारी विद्वान-

1. **वृन्द-**
    - **सत्यस्वरूपः-** इस पुस्तक से मुगल उत्तराधिकर संघर्ष की जानकारी मिलती है।
2. **सूरध्वजः-** यह चित्रकला का प्रबन्धक था।

सावन्तसिंह- (1748-64 ई.)

- यह वल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- इसने स्वयं का नाम बदलकर नागरीदास कर लिया था।
- **सावन्तसिंह की पुस्तकें**
    - मनोरथ मंजरी
    - देहदशा
    - रसिक रत्नावली

  (उपर्युक्त तीनों) - नागर समुच्चय

- इसकी प्रेमिका विष्णुप्रिया (बणी-ठणी) **रसिक बिहारी नाम से** कविताएँ लिखती थी।
- इसका शासनकाल किशनगढ़, चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- मोरध्वज निहालचंद प्रमुख चित्रकार था।
- इसने अपना अंतिम समय वृंदावन में बिताया था।

कल्याणसिंह- (1798-1838 ई.)

- 1818 ई. अंग्रेजों से संधि कर लेता है।

कच्छावा वंश

- कच्छावा भगवान राम के वंशज है। अतः इन्हें रघुवंशतिलक कहा जाता है।

1. **कच्छावों की रियासतें-**
    1. आमेर/जयपुर
    2. अलवर

आमेर का इतिहास

- आमेर में कच्छावा वंश का शासन था।

दूल्हेराय

- 1137 ई. में यह नरवर (MP) से आया था।
- इसने बड़गुर्जर राजपूतों को हरा कर दौसा पर अधिकार कर लिया था।
- दौसा कच्छावा वंश की पहली राजधानी थी।
- मीणाओं को हराकर इसने रामगढ़ पर अधिकार किया। रामगढ़ कच्छावों की दूसरी राजधानी थी।
- रामगढ़ में अपनी कुलदेवी जमवाय माता का मंदिर बनवाया।

आमेर की राजधानियाँ:-	1st – दौसा 2nd –रामगढ़ 3rd – आमेर

काकिलदेव

- इसने मीणाओं को हराकर आमेर पर अधिकार किया।
- आमेर कच्छावों की तीसरी राजधानी थी।
- आमेर में अम्बिकेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

राजदेव

- आमेर में कदमी महल का निर्माण किया।
- यहां आमेर के राजाओं का राजतिलक किया जाता था।

भारमल–(1547-73 ई.)

- मजनू खां तथा चगतई खां की सहायता से यह अकबर से मुलाकात करता है।
- 1562 ई. में इसने सांभर में अकबर से संधि कर ली थी।
- यह राजस्थान का पहला राजा था। जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी।
- इसने अपनी राजकुमारी हरका बाई की शादी अकबर से की।
- जहाँगीर हरका बाई का बेटा था।
- अकबर ने भारमल को 5000 का मनसबदार बनाया। तथा इसे 'अमीर उल उमरा' की उपाधि दी।
- हरका बाई की उपाधिः- मरियम उज्जमानी

भगवन्तदास–(1573-89 ई.)

- अकबर ने इसे 5000 का मनसबदार बनाया तथा इसे 'अमीर उल उमरा' की उपाधि दी।
- इसे 7 वर्षों के लिए पंजाब का गर्वनर बनाया गया।
- सरनाल (गुजरात) में मिर्जा विद्रोह को दबाया।अतः अकबर ने इसे नगाड़ा व झण्डा देकर सम्मानित किया।
- अपनी राजकुमारी मानबाई का विवाह जहाँगीर से किया ।

  मानबाई की उपाधि- 'शाह-ए-बेगम'
  मान बाई का बेटा - खुसरों ।

मानसिंह–(1589-1614 ई.)

- राजतिलक के समय अकबर ने 5000 का मनसबदार बनाया था। लेकिन 1605 ई. में इसे बढ़ाकर 7000 कर दिया गया।
- अकबर ने इसे काबुल, बंगाल तथा बिहार का गर्वनर बनाया था।

काबुल-(1581-1586 ई.)-

- मिर्जा हाकिम के विद्रोह को दबाया।
- 5 कबीलों को हराया। इसके बाद आमेर का झंडा पंचरंगा कर दिया गया।
- इससे पहले आमेर में सफेद रंग का झाड़शाही झण्डा था

बिहार-(1587 ई.)

- इसने कई राजाओं को हराया था।

  जैसे-

  - गिधोर का राजा - पूरणमल
  - गया का राजा - अनन्त चेरु
  - खुर्दा का राजा - रामचन्द्र देव

- पूरी के नासिर खां तथा कत्तलू खां को हराकर पूरी के जगन्नाथ मंदिर पर नियंत्रण स्थापित किया।

बंगाल–

- पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराया तथा वहाँ से शीला देवी की मूर्ति लेकर आया तथा इसे आमेर में स्थापित करवाया।
- यह आमेर के कच्छावा वंश की ईष्टदेवी है।
- एलिचपुर नामक स्थान पर मानसिंह की मृत्यु हो गई थी।

मानसिंह की उपाधियाँ:–

- मिर्जा राजा
- फर्जन्द

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ–

- **नगर**
  1. मानपुरा (बिहार)
  2. अकबरनगर/राजमहल (बंगाल)

- **मंदिर**
  1. भवानी शंकर मंदिर - वैकटपुर
  2. महादेव मंदिर - गया (बिहार)
  3. राधा गोविन्द मंदिर - वृंदावन
  4. जगत शिरोमणि मंदिर - आमेर

- रानी कनकावती ने अपने बेटे जगत सिंह की याद में इसका निर्माण करवाया था।
- यह मंदिर मुगल राजपूत स्थापत्य कला में बना हुआ था।
- इस मंदिर में भगवान कृष्ण की वह मूर्ति है।
- जिसकी पूजा मीरा बाई चित्तौड़ में करती थी।

> जगत सिंह बंगाल अभियान के दौरान लड़ता हुआ मारा गया था।

❖ **किले**

1. रोहतासगढ़ - (बिहार)
2. आमेर
3. जमवारामगढ़

दरबारी विद्वान-

1. **पुंडरीक विट्ठलः-**
   1. रागमाला
   2. राग मंजरी
   3. राग चन्द्रोदय
   4. नर्तन निर्णय

2. **जगन्नाथ** - मानसिंह कीर्ति मुक्तावली
3. **मुरारिदास** - मानप्रकास

❖ **आमेर अभिलेख -(1612 ई.)**

- इस अभिलेख में कच्छावों को रघुवंशतिलक कहा गया है।
- इस अभिलेख के अनुसार मानसिंह भगवन्तदास का पुत्र था तथा इसने जमवारामगढ़ किले का निर्माण करवाया था।

मिर्जा राजा जयसिंह-(1621-67 ई.)

- आमेर के कच्छावा राजाओं में सबसे लम्बा शासनकाल (लगभग-46 वर्ष)
- इसने जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब के साथ काम किया था।
- मलिक अम्बर के विद्रोह को दबाने के लिए जहाँगीर ने इसे अहमदनगर भेजा था।
- शाहजहाँ ने इसे मिर्जा राजा की उपाधि दी तथा इसे कंधार अभियान पर भेजा।
- औरंगजेब ने इसे शिवाजी के खिलाफ भेजा।
- 1665 ई. में इसने शिवाजी के साथ पुरन्दर की संधि की।
- इतालवी यात्री निकोलो मनूची ने इस संधि का वर्णन किया था।
- मनूची की Book:- '*Storio da mogor*'
- बुरहानपुर में मिर्जा राजा जयसिंह की मृत्यु हो गई थी।

- **सांस्कृतिक उपलब्धियाँः-**
  - जयसिंहपुरा (महाराष्ट्र) नामक नगर बसाया।
  - जयगढ़ किले का निर्माण करवाया।
  - यह आमेर की संकटकालीन राजधानी थी।
  - पहले इस स्थान को 'चील्ह का टोला' कहा जाता था।

दरबारी विद्वानः-

1. बिहारी जी - बिहारी सतसई
2. रायकवि - जयसिंह चरित्र
3. कुलपति मिश्र -
   - ➢ यह बिहारी जी के भान्जे थे।
   - ➢ इन्होंने 52 पुस्तकों की रचना की थी।
   - ➢ यहां से मिर्जा राजा जयसिंह के दक्षिण अभियान की जानकारी मिलती है।

सवाई जयसिंह–(1700-43 ई.)

- इसने सात मुगल बादशाहों के साथ काम किया था।
- मुगल उत्तराधिकार संघर्ष में इसने मुअज्जम के खिलाफ आजम का साथ दिया था।
- मुअज्जम बहादुरशाह प्रथम के नाम से मुगल बादशाह बना तथा उसने आमेर पर आक्रमण कर दिया तथा सवाई जयसिंह को हटा कर विजयसिंह को राजा बना दिया।
- बहादुरशाह प्रथम ने आमेर का नाम बदलकर इस्लामाबाद/मोमिनाबाद कर दिया।
- 1708 ई. में यह देबारी समझौते में शामिल हुआ था।

सांभर का युद्ध-(1709 ई.)

- सवाई जयसिंह तथा अजीत सिंह की सेना ने इस युद्ध में मुगल सेनापति सैय्यद हुसैन को हराया तथा सवाई जयसिंह ने आमेर पर अधिकार कर लिया।

- सांभर झील पर जयपुर तथा जोधपुर रियासत का संयुक्त अधिकार था।

- भरतपुर में इसने मोहकम सिंह के खिलाफ बदन सिंह का साथ दिया।
- इसने बदन सिंह को डीग की जागीर तथा बृजराज की उपाधि दी।
- अतः मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीला ने सवाई जयसिंह को राजराजेश्वर की उपाधि दी थी।
- बूंदी में इसने उम्मेद सिंह के खिलाफ दलेल सिंह का साथ दिया।

गंगवाना का युद्ध-1741 ई.

↓

जोरावर सिंह (बीकानेर) v/s अभय सिंह (जोधपुर)

- इस युद्ध में सवाई जयसिंह ने जोरावर सिंह का साथ दिया तथा अभयसिंह को हराया।
- सवाई जयसिंह को 3 बार मालवा का गर्वनर बनाया गया था।

सवाई जयसिंह v/s मराठाओं के बीच प्रमुख युद्धः-

1. पीलसुद का युद्ध - 1715 ई. (सवाई जयसिंह जीत गये।)
2. मन्दसौर का युद्ध - 1733 ई. (मराठे जीत गए)
3. रामपुरा का युद्ध- 1735 ई. (मराठे जीत गए)

- 1741 ई. मराठा पेशवा बालाजी बाजीराव के साथ धौलपुर समझौता किया।
- इस समझौते में सवाई जयसिंह मोहम्मद शाह रंगीला का प्रतिनिधि था।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँः-

- ➢ अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया।
- ➢ पुरोहित- पुंडरीक रत्नाकर
- ➢ दीपसिंह कुम्भाणी ने यज्ञ के घोड़े को पकड़ लिया था।

स्थापत्य कलाः-

1. **जयपुरः-**
   1. **स्थापनाः**-18 नवम्बर 1727 ई.
   2. **वास्तुकारः-** विद्याधर भट्टाचार्य
   3. सम्राट जगन्नाथ ने जयपुर की नींव लगाई थी।

- पुर्तगाली ज्योतिष जेवियर डि सिल्वा की मदद ली गई।
- जयपुर को कैन्टन (चीन) तथा बगदाद (इराक) की तरह बसाया गया था।

- जयपुर को 9 वर्ग सिद्धांत पर बसाया गया था।
- बादल महल जयपुर की पहली इमारत थी। पहले इस स्थान को शिकार होदी कहा जाता है।
- जयपुर कच्छावों की 4th राजधानी थी।
- जयपुर भारत का पहला नियोजित व आधुनिक शहर है
- 2019 में यूनेस्को ने जयपुर को विश्व विरासत सूची में शामिल किया था।

2. चन्द्रमहल (सिटी पैलेस)

- यह एक सात मंजिला इमारत है।
- इसका ऊपरी भाग मुकुट मंदिर कहलाता है

3. सिसोदिया रानी का महलः-

4. जल महलः-

- यह मान सागर झील में बना हुआ है।
- यहां पर अश्वमेध यज्ञ के ब्राह्मणों के रूकने की व्यवस्था की गई थी।

5. गोविन्द देवजी मंदिर-

- यह मंदिर गौड़ीय सम्प्रदाय से संबंधित है।
- जयपुर के राजा स्वयं को गोविन्द देवजी का दीवान मानते थे।

6. नाहरगढ़-

- इसका निर्माण मराठों के खिलाफ सुरक्षा के लिए किया गया था।
- इसे जयपुर का पहरेदार कहा जाता है।
- पहले इसका नाम सुदर्शनगढ़ रखा गया था। बाद में नाहरगढ़ रखा गया।

7. हरमाड़ा नहर

- जयपुर में पेयजल की आपूर्ति के लिए।

8. जन्तर मन्तरः-

1. दिल्लीः पहला-जन्तर मन्तर
2. जयपुरः सबसे बड़ा
3. उज्जैन
4. मथुरा
5. वाराणासी

- 2010 ई. में युनेस्को ने जयपुर के जन्तर मन्तर को विश्वविरासत सूची में शामिल किया था।

- **साहित्यः-**
- जयसिहकारिका नामक ज्योतिष ग्रंथ लिखा था।
- जीज-ए-मुहम्मदशाही नामक नक्षत्र सारणी तैयार करवाई थी। (1725-33 ई.)
- **दरबारी विद्वानः-**

1. पुंडरीक रत्नाकर - 'जयसिंह कल्पद्रुम'
2. जगन्नाथ सम्राटः-
   - सिद्धांत सम्राट
   - सिद्धांत कौस्तुम

   युक्लिड ज्यामिति का संस्कृत अनुवाद किया था।
3. केवलरामः
   (लोगोरिथम नामक फ्रेंच पुस्तक का संस्कृत अनुवाद किया था।)
4. नयनचन्द्र मुखर्जीः-
   (ऊकर नामक अरबी ग्रंथ का संस्कृत अनुवाद किया था।)

- मुहम्मद मेहरी
- मुहम्मद शरीफ

→ इन्हें विदेशों से पुस्तके लाने के लिए भेजा था ।

- सुरतखानाः आमेर में सूरत खाना नामक चित्रकला विभाग की स्थापना की थी।

चित्रकारः-

- ➢ साहिबराम
- ➢ मुहम्मदशाह

सामाजिक सुधारः-

- सती प्रथा पर रोक लगाई।
- बाल-विवाह को नियंत्रित किया।
- विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया।
- अन्तरर्राज्यीय विवाह को प्रोत्साहन दिया।
- ब्राह्मणों के आपसी भेदभाव को समाप्त किया।
- साधु-सन्तों को गृहस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। तथा उनके लिए मथुरा के पास वैरागपुरा नामक गांव बसाया ।
- देबारी समझौते के अनुसार चन्द्र कंवर का बेटा माधोसिंह आमेर का राजा होना चाहिए था। लेकिन सवाईजयसिंह ने सुरज कंवर के बेटे ईश्वरी सिंह को राजा बना दिया था।

ईश्वरी सिंह-(1743-50 ई.)

राजमहल का युद्ध-(1747 ई.)

↓

ईश्वरी सिंह	v/s	माधोसिंह
सूरजमल (भरतपुर)		जगतसिंह-II(मेवाड़)
दुर्जनसाल (कोटा)		उम्मेद सिंह (बूंदी)
		मराठा

- ईश्वरी सिंह जीत गया। इस जीत की याद में ईश्वरी सिंह ने ईसरलाट (सरगासूली) का निर्माण करवाया गया। यह एक 7 मंजिला स्तम्भ है

बगरू का युद्ध (1798 ई.)

↓

ईश्वरी सिंह	v/s	माधोसिंह
सूरजमल		जगतसिंह II
		उम्मेद सिंह (बूँदी)
		दुर्जनसाल (कोटा)
		मराठा

- इस युद्ध में माधोसिंह जीत गया।
- माधोसिंह को 5 परगने दिए गए।
- उम्मेद सिंह को बूंदी का राजा मान लिया।
- मराठों को युद्ध हर्जाना दिया गया।
- मराठों ने युध्द हर्जाने के लिए परेशान किया। अतः ईश्वरीसिंह ने आत्महत्या कर ली थी।

माधोसिंह (1750-68 ई.)

- जयपुर में मराठों का कत्लेआम करवाया।

काकोड़ का युद्ध-(1759 ई.)
↓
माधोसिंह v/s मराठा

- इस युध्द में भी माधोसिंह की जीत हुई।

भटवाड़ा का युद्ध -(1761 ई.)
↓
माधोसिंह v/s शत्रुसाल (कोटा)

कारणः -रणथम्भौर किला
इस युद्ध में शत्रुसाल की जीत हुई।
इस युद्ध में कोटा का सेनापति जालिम सिंह झाला था

सांस्कृतिक उपलब्धियाँः

- 1763 ई. सवाईमाधोपुर की स्थापना की।
- मराठों पर जीत की याद में माधो राजपुरा किले का निर्माण करवाया।
- मोती डूंगरी महल का निर्माण करवाया।
- चाकसू में शीतला माता का मंदिर बनवाया।

प्रताप सिंह-(1778-1803 ई.)

तुंगा का युद्ध-(1787 ई.)
↓
प्रताप सिंह + विजय सिंह (जोधपुर) v/s मराठा (महादजी सिंधिया)

- इस युद्ध में मराठों को हरा दिया गया।

पाटन का युद्ध - (1789 ई.)
↓
प्रताप सिंह + विजयसिंह (जोधपुर) v/s मराठा
↓
डी. बोई (फ्रांसीसी)

- इस युद्ध में मराठों की जीत हुई।

मालपुरा का युद्ध-(1800 ई.)
↓
प्रताप सिंह + भीमसिंह (जोधपुर) v/s मराठा
↓
दौलतराव सिंधिया

- इस युद्ध में मराठों की जीत हुई।

- **सांस्कृतिक उपलब्धियाँ :-**
- **हवामहल:-**
    1. स्थापना:- 1799 ई.
    2. वास्तुकार:- लालचन्द उस्ता

- यह एक पाँच मंजिला इमारत है।
    1. शरद मंदिर/प्रताप मंदिर
    2. रतन मंदिर
    3. विचित्र मंदिर
    4. प्रकाश मंदिर
    5. हवा मंदिर
- खिड़कियां - 365
- झरोखें 953
- यहां से रानीयां तीज व गणगौर की सवारियां देखती थीं।
- आकृतिः भगवान कृष्ण के मुकुट के समान।
- प्रताप सिंह 'बृजनिधि' के नाम से कविताएँ लिखता था।
- काव्य गुरुः गणपतिभारती
- संगीत गुरू :- **चांद खां**
    - उपाधि- बुद्ध प्रकाश
    - पुस्तक- स्वरसागर
- जयपुर में संगीत सम्मेलन का आयोजन करवाया।
- संगीत सम्मेलन का अध्यक्ष देवर्षि बृजपाल भट्ट था।
- इम सम्मेलन में 'राधागोविन्द संगीतसार' नामक पुस्तक लिखी थी।
- जयपुर में तमाशा लोकनाट्य प्रसिद्ध हुआ।
- इसके लिए बंशीधर भट्ट को जयपुर बुलाया गया।
- सवाई प्रतापसिंह का काल जयपुर चित्रकला का स्वर्णकाल था। इसने चित्रकला स्कूल की स्थापना की।
- लालचंद नामक चित्रकार पशुओं की लड़ाई के चित्र बनाते थे।
- इसके दरबार में 22 कलाकार थे। जिन्हें गन्धर्व बाईसी/प्रताप बाईसी कहा जाता है।
- इनके लिए गुणी जन खाना की स्थापना की गई थी।

जगत सिंह-II (1803-18 ई.)

- इसकी प्रेमिका रस कपूर शासन कार्यों में हस्तक्षेप करती थी।
- कालान्तर में इसे नाहरगढ़ किले में नजर बंद कर दिया गया था।
- 1818 ई. यह अंग्रेजों से संधि कर लेता है ।

> विजयसिंह की प्रेमिका गुलाबराय को जोधपुर की नूरजहाँ कहा जाता है।

रामसिंह-II (1835-80 ई.)

> - ब्लैक व ऑलविज 'रुपा बड़ारण' मामले की जाँच कर रहे थे, यह मामला महाराजा जयसिंह-III की हत्या से जुड़ा हुआ था। जयपुर की जनता ने ब्लैक को मार दिया था।

- यह कम उम्र में राजा बना था
- संरक्षकः जॉन लुडलो।
- ❖ यहाँ कई सामाजिक कुरीतियों पर रोक लगा दी गई
    - सती प्रथा

- ➢ समाधि प्रथा
- ➢ कन्यावध
- ➢ मानव व्यापार

- 1857 ई. की क्रांति के दौरान रामसिंह-II ने अंग्रेजों का साथ दिया था। अतः अंग्रेजो ने उसे कोटपुतली परगना व सितार-ए-हिन्द की उपाधि दी।
- 1857 ई. में कला के विकास के लिए 'मदरसा-ए-हुनरी' की स्थापना की गई। (वर्तमान में इसे "*Rajsthan school of Arts & crafts*" कहा जाता है।)
- महाराजा कॉलेज तथा संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
- 1866 ई. में कांतीचन्द मुखर्जी की सलाह पर जयपुर में कन्या विद्यालय की स्थापना की गई थी। (राजस्थान की किसी भी रियासत में प्रथम)
- 1868 ई. में एडवर्ड पंचम के आगमन पर जयपुर में गुलाबी रंग कराया गया था। (गेरुआ रंग)
- जयपुर में ब्लू पॉटरी लोकप्रिय हुई।
- 1876 ई. में प्रिंस अल्बर्ट ने अल्बर्ट हॉल की नींव रखी थी।
- रामनिवास बाग का निर्माण करवाया।
- जयपुर में रामप्रकाश थियेटर का निर्माण करवाया।

स्टेनले रीड ने जयपुर को पिंक सिटी कहा था। *Book-'Royal Towns of India'.*

माधोसिंह-II (1880-1922 ई.)

- B.H.U. की स्थापना के लिए 5 लाख रुपए की आर्थिक सहायता दी थी।
- 1904 ई. में जयपुर में डाक व्यवस्था की शुरुआत की गई।
- अपनी 9 दासियों के लिए नाहरगढ़ मे 9 एक जैसे महलो का निर्माण करवाया था।
- जयपुर में मुबारक महल का निर्माण करवाया। यह युरोपियन स्थापत्य कला में बना हुआ है।
- यह अतिथियों के लिए बनाया गया था।
- इसे 'बब्बर शेर' कहा जाता है।

मानसिंह-II (1922-47 ई.)

- आजादी के समय जयपुर का राजा ।
- राजस्थान के प्रथम व एक मात्र राजप्रमुख थे।
- **रानी :- गायत्री देवी**
  - ➢ यह राजस्थान से पहली महिला लोकसभा सदस्य थी।
  - ➢ 1962 ई. में
  - ➢ स्वतंत्र पार्टी से जीत दर्ज की।
  - ➢ Book:- 'द प्रिंसेज रिमेम्बर्स'(राजकुमारी की यादें)-आत्मकथा।

अलवर का इतिहास

- अलवर में कच्छावा वंश की 'नरूका' शाखा का शासन था।

प्रतापसिंहः-

- यह माचेड़ी का सामन्त था।
- 1774 ई. में मुगल बादशाह शाह आलम-द्वितीय ने इसे स्वतंत्र राजा घोषित कर दिया था।
- 1775 ई. में इसने अलवर पर अधिकार कर इसे अपनी राजधानी बना लिया था।

दरबारी विद्वानः- जाचक जीवण - 'प्रताप रासौ'

बख्तावर सिंहः-

- यह 'बख्तेश' व 'चन्द्रचखी' नाम से कविताएँ लिखता था।
- लसवाड़ी के युद्ध (1 नवम्बर 1803 ई.) में इसने मराठों के खिलाफ अंग्रेजों का साथ दिया था।
- 14 नवंबर 1803 ई. को यह अंग्रेजों के साथ संधि कर लेता हैं।

विनयसिंहः-

- अंग्रेजों ने अलवर रियासत का विभाजन किया तथा तिजारा बलवन्त सिंह को दे दिया था।
- थोड़े समय पश्चात तिजारा पुनः विनयसिंह को दे दिया गया।
- अलवर में मूसी महारानी की छत्तरी (80 खंभों की) का निर्माण करवाया।
  (मूसी महारानी राजा बख्तावरसिंह की दासी थी।)
- अपनी रानी शीला के लिए इसने सिलीसेढ़ झील का निर्माण करवाया था जिसे राजस्थान का 'नन्दन कानन' कहा जाता है।

मंगलसिंहः-

- यह मेयो कॉलेज का प्रथम विद्यार्थी था।
- यह कॉलेज 1875 ई. में अजमेर में स्थापित किया गया था।
- इस कॉलेज को 1869 ई. में वॉल्टर योजना के तहत शुरू किया गया था।
- 'वॉल्टर योजना' के तहत राजा महाराजाओं के बच्चों के लिए अलग से कॉलेज व स्कूल स्थापित किए गए थे।

जयसिंहः-

- प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय व अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय तथा सनातन धर्म कॉलेज(लाहौर) को आर्थिक सहायता दी थी
- 'चैंबर ऑफ प्रिंसेज' का नाम बदलकर 'नरेंद्र मंडल' कर दिया था।
- हिन्दी को अलवर की राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया था।

> नोटः- महाराजा किशन सिंह ने हिन्दी को भरतपुर की राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया था।

- 10 दिसंबर 1903 ई.को इसने बाल विवाह व अनमेल विवाह पर रोक लगा दी थी।
- ड्यूक ऑफ एडिनबर्ग के आगमन पर सरिस्का महल का निर्माण किया गया था।
- 1933 ई. में तिजारा दंगों के बाद अंग्रेजों ने इसे हटा दिया था। तथा यह पेरिस चला गया था। और वहा पर इसकी मृत्यु हो गई।

तेजसिंहः-

- यह आजादी के समय अलवर का राजा था।
- गाँधी जी की हत्या के दौरान इसे नजरबंद कर दिया था। लेकिन बाद में सुप्रीम कोर्ट ने निर्दोष करार दिया था।

चौहान वंश

चौहानों की उत्पतिः-

1. अग्निवंशीः-

- चन्दबरदाई ने अपनी पुस्तक 'पृथ्वीराज रासौ' में अग्निकुण्ड का सिद्धांत दिया। इस सिद्धांत के अनुसार ऋषि वशिष्ठ आबू पर्वत पर यज्ञ कर रहे थे इस यज्ञ के अग्निकुण्ड से चार राजपूत वंशों की उत्पति हुई।
    1. चालुक्य
    2. परमार
    3. प्रतिहार
    4. चौहान (सबसे अंत में उत्पति)
- मुहणौत नेणसी तथा सूर्यमल्ल मीसण ने भी इस सिद्धांत का समर्थन किया था।

2. सूर्यवंशीः-

- पृथ्वीराज विजय
- हम्मीर महाकाव्य
- हम्मीर रासौ

〉 इन तीनों पुस्तकों में चौहानों को सूर्यवंशी बताया गया है।

- विग्रहराज चतुर्थ का अजमेर अभिलेख
- गौरी शंकर हीराचन्द ओझा

3. चन्द्रवंशीः-

- हाँसी अभिलेख (हरियाणा)
- अचलेश्वर अभिलेख (आबू पर्वत)

4. ब्राह्मणः-

- बिजोलिया अभिलेख
- चन्द्रावती अभिलेख
- कायम रासौ
- दशरथ शर्मा

5. विदेशीः-

- जेम्स टॉड (शक/सीथीयन)
- विलियम क्रुक
- वी.स्मिथ

6. इंद्र के वंशजः-

- रायपाल के सेवाड़ी अभिलेख में उल्लेख।

✓ चौहान वंश का उत्पति स्थल- 'सपादलक्ष' (सांभर के चारों तरफ का क्षेत्र)

✓ चौहान वंश की राजधानी - 'अहिच्छत्रपुर' (नागौर)

चौहान वंश की प्रमुख रियासतें-

- सांभर/अजमेर
- रणथम्भौर
- नाडौल
- जालौर
- सिरोही
- बूँदी

सांभर/अजमेर का इतिहास

यहां चौहान वंश का शासन था।

वासुदेवः–

- राजशेखर की पुस्तक 'प्रबंधकोश' के अनुसार इसने 551 ई. में चौहान राज्य की स्थापना की।
- बिजोलिया अभिलेख के अनुसार इसने सांभर झील का निर्माण करवाया।

गुवक प्रथमः–

- यह प्रथम स्वतंत्र राजा था।
- पहले चौहान प्रतिहारों के अधीन थे।
- प्रतिहार राजा नागभट्ट प्रथम ने इसे 'वीर' की उपाधि दी थी।
- कालान्तर में इसने प्रतिहारों की अधीनता मानने से इनकार कर दिया था।

चन्दनराजः–

- इसकी रानी आत्मप्रभा(रूद्राणी) पुष्कर झील में 1000 दीपक जलाकर भगवान शिव की पूजा करती थी।
- रानी आत्मप्रभा यौगिक क्रिया में निपूर्ण थी।

वाक्पतिराजः–

- यह 108 युद्धों का विजेता था।
- इसके बेटे लक्ष्मणराज ने नाडौल में चौहान राज्य की स्थापना की थी।

विग्रहराज द्वितीयः–

- गुजरात के चालुक्य राजा मूलराज प्रथम को हराया।
- इसने भरुंच में अपनी कुलदेवी आशापुरा माता का मंदिर बनवाया था।

गोविन्द तृतीयः–

- फरिश्ता के अनुसार इसने महमूद गजनवी को मारवाड़ पार करने नहीं दिया था।
- प्रबन्धकोष के अनुसार इसने चालुक्य राजा भीम प्रथम के साथ मिलकर महमूद गजनवी को रोका था।
- उपाधि-- 'वैरीघट्ट' (पृथ्वीराज विजय के अनुसार)

दुर्लभराज तृतीयः–

- दशरथ शर्मा के अनुसार यह गजनी के इब्राहीम के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।

विग्रहराज तृतीयः–

- इसने गजनी के शाहबुद्दीन का सामना किया था।

पृथ्वीराज प्रथमः–

- इसने गजनी के बगुलीशाह को हराया था
- पुष्कर आक्रमण के दौरान इसने 700 चालुक्यों को मार दिया था।

अजयराजः-(1105-33 ई.)

- 1113 ई. में इसने अजमेर की स्थापना की। तथा यहां पर किले का निर्माण करवाया था।
- पृथ्वीराज विजय के अनुसार इसने गजनी के मुसलमानों को हराया था। (गर्जन मातंग)
- अपनी रानी सोमलेखा के नाम से चांदी व तांबे के सिक्के चलाएं।
- पार्श्वनाथ मंदिर में इसने सुवर्ण कलश भेंट किया था।
- इसने दिगम्बरों व श्वेताम्बरों के बीच शास्त्रार्थ की अध्यक्षता की थी।
- अपने अंतिम दिनों में अजयराज सन्यासी बन गया था। इसने अपने बेटे अर्णोराज को राजा बना दिया था।

अर्णोराजः-(1133-1153 ई.):-

- इसने अजमेर के निकट तुर्को को हराया। तथा वहां पर 'आन्ना सागर' झील का निर्माण करवाया।
- पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण करवाया।
- इसने मालवा के नरवर्मन को हराया।
- इसने गुजरात के राजा जयसिंह सिद्धराज को हराया था।
- जयसिंह सिद्धराज ने अपनी राजकुमारी कांचनदेवी का विवाह इससे कर दिया था।
- गुजरात के कुमारपाल चालुक्य ने इसे हरा दिया था।
- इसने खरतरगच्छ सम्प्रदाय को भूमि अनुदान दिया था
- दरबारी विद्वानः- 1. धर्मघोष
  2. देवबोध
- इसकी हत्या इसके बेटे जग्गदेव ने कर दी थी।

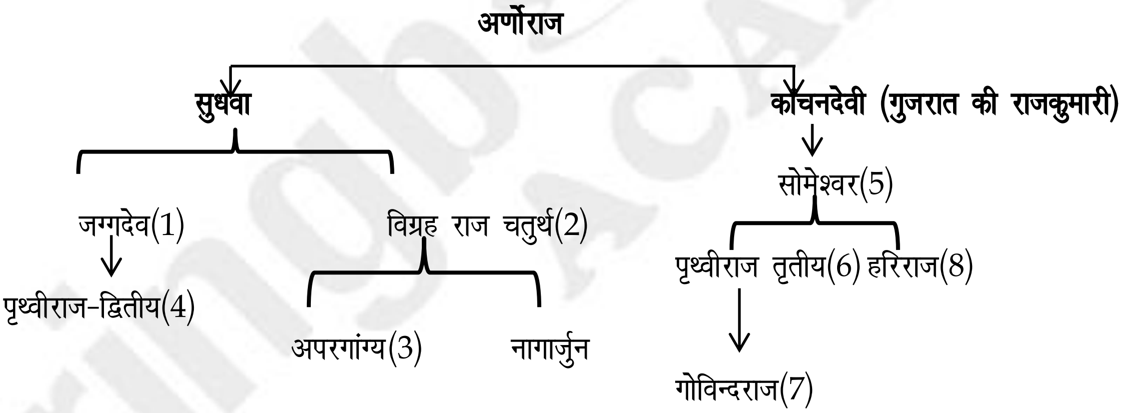

जग्गदेवः-

- इसे इसके भाई विग्रहराज चतुर्थ ने हटा दिया था।

विग्रहराज चतुर्थ (1153-1163 ई.)

- इसने गजनी के खुसरोशाह को हराया था।
- इसने गुजरात के कुमारपाल चालुक्य को हराया था।
- इसने दिल्ली के तोमरों को हराया तथा उन्हें अपना सामन्त बना लिया।
- इसने दिल्ली शिवालिक अभिलेख लिखवाया था। यह अशोक के दिल्ली टोपरा अभिलेख के ठीक नीचे लिखा हुआ है।
- इसने 'हरकेलि' नामक नाटक लिखा था। यह भारवि के किरातार्जुनीयम् को आधार बनाया।
- इसने बीसलपुर की स्थापना की। तथा यहां तालाब व शिव मंदिर का निर्माणा करवाया।

- अजमेर में सरस्वती कंठाभरण नामक संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। कालान्तर में कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे तोड़ दिया था। तथा मस्जिद का निर्माण किया। (इस मस्जिद के पास पीरपंजाबशाह का अढ़ाई दिन का उर्स लगता है अतः इस मस्जिद को 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' कहा जाता है।
- इसने जवालिपुर का नाम बदलकर 'ज्वालापुर' कर दिया था।
- धर्मघोष सूरि के कहने पर एकादशी पर जीव हत्या पर रोक लगा दी।
- दरबारी विद्वानः- सोमदेव - 'ललित विग्रहराज'
  - यह पुस्तक विग्रहराज चतुर्थ तथा देसल देवी की प्रेम कहानी की जानकारी देती है।
  - इस पुस्तक के अनुसार विग्रहराज चतुर्थ ने गजनी के खुसरोशाह को हराया था।

नोटः- हरकेलि तथा ललित विग्रहराज की पंक्तियाँ संस्कृत पाठशाला की दीवारों पर लिखवाई।

उपाधियाँ :- 1. बीसलदेव
2. कवि बान्धव (पृथ्वीराज विजय के अनुसार)

- किलहॉर्न ने विग्रहराज की तुलना कालिदास व भवभूति से की थी।

नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासौ नामक पुस्तक लिखी थी। जिसमें विग्रहराज चतुर्थ तथा राजमती की प्रेमकहानी है यह पुस्तक गोड़वाड़ी में लिखी गई है। (गोड़वाड़ी, मारवाड़ी बोली की उपबोली है, यह बाली (पाली) से आहोर (जालौर) तक बोली जाती है।

अपरगांगेयः-

- पृथ्वीराज द्वितीय ने इसे हटा दिया था।

पृथ्वीराज द्वितीयः-

- 1167 ई. के हाँसी अभिलेख के अनुसार इसने हाँसी में एक महल का निर्माण करवाया। तथा अपने मामा गुहिल किल्हण की यहाँ पर नियुक्ति की।
- 1168 ई. में धौड़ अभिलेख के अनुसार इसने अपना राज्य बाहुबल से प्राप्त किया था।
- यह अभिलेख रूठी रानी मंदिर से प्राप्त हुआ है। तथा इसमें रानी का नाम सुहाव देवी दिया गया है।
- इसने मेनाल में सुहेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

सोमेश्वरः-

- इसका बचपन गुजरात में बीता।
- इसने कोंकण के मल्लिकार्जुन को हराया था। यह कुमारपाल का शत्रु था।
- इसकी रानी कर्पूरी देवी थी। (चेदि के अचलराज कलचुरि की राजकुमारी)
- इसने अजमेर में अपनी तथा अपने पिता अर्णोराज की मूर्तियाँ लगवाई।
- अजमेर में वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।
- इसके शासनकाल में बिजोलिया अभिलेख लगाया गया था।

बिजोलिया अभिलेखः-1170 ई.

- पार्श्वनाथ मंदिर में दिगम्बर जैन 'लोलाक' ने यह अभिलेख लगवाया था।
- रचयिता- 'गुणभद्र'
- लेखक - 'केशव'
- उत्कीर्णक- 'गोविन्द'
- इस अभिलेख से निम्नलिखित जानकारियाँ प्राप्त होती हैः-
  - चौहान वंश को वत्स गौत्रीय ब्राह्मण बताया गया।
  - वासुदेव ने सांभर झील का निर्माण करवाया तथा नागौर को अपनी राजधानी बनाया।
  - विग्रहराज चतुर्थ ने दिल्ली पर अधिकार किया था।

- ❖ सोमेश्वर ने पार्श्वनाथ मंदिर को 'रेवणा' नामक गांव दान में दिया।
- ❖ इसमे सोमेश्वर की उपाधि 'प्रताप लंकेश्वर' दी है।
- ❖ मंदिरों के लिए भूमि अनुदान को 'डोहली' कहते है।
- ❖ जैन तथा शैव तीर्थों की जानकारी।

- ❖ प्रशासनिक विभाजन- देश
  ↓
  पत्तन
  ↓
  पुर
  ↓
  पल्लि
  ↓
  ग्राम
- ❖ प्रशासनिक अधिकारी- ग्राम का अधिकारी → महत्तर
  प्रतिगण का अधिकारी → पारिग्राही
- ❖ नगरों के प्राचीन नाम-

वर्तमान नाम	**प्राचीन नाम**
बिजोलिया	विजयावल्ली
उपरमाल	उत्तमाद्रि
नागदा	नागह्द
माण्डलगढ़	मंडलकर
सांभर	शाकम्भरी
नागौर	अहिच्छत्रपुर
नाडोल	नड्डुल
भीनमाल	श्रीमाल
दिल्ली	ढिल्लिका
जालौर	जाबालिपुर

पृथ्वीराज तृतीयः-(1177-92 ई.)

पिता - सोमेश्वर
माता - कर्पूरी देवी (संरक्षिका)

- यह 11 वर्ष की उम्र में राजा बना।
- प्रमुख मंत्री - कदम्बवास/कैमास
  भुवनमल्ल
- इसने अपने चचेरे भाइयों नागार्जुन तथा अपरगांगेय के विद्रोह को दबाया था।
- नागार्जुन ने गुरूग्राम को अपना मुख्य केन्द्र बना रखा था।
- 1182 ई. मथुरा, अलवर तथा भरतपुर क्षेत्रों में भण्डानक जनजाति के विद्रोह को दबाया था।
  - ▪ जिनपत्ति सूरी की पुस्तकों से यह जानकारी प्राप्त होती है।

महोबा का युद्ध/तुमुल का युद्ध (1182 ई.)
↓
परमार्दिदेव चन्देल v/s पृथ्वीराज तृतीय
↓
(महोबा)

- **कारणः-** परमार्दिदेव चन्देल ने पृथ्वीराज के घायल सैनिकों की हत्या कर दी थी।

- युद्ध में पृथ्वीराज की जीत हुई तथा उसने पंजनदेव कच्छावा(आमेर) को महोबा का प्रशासक बनाया।
- परमार्दिदेव के सेनापति - आल्हा, उदल

नागौर का युद्ध (1184 ई.)

↓

पृथ्वीराज तृतीय v/s भीम द्वितीय चालुक्य (गुजरात)

कारण–

1. दोनों अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे।
2. चौहानों तथा चालुक्य में लम्बे समय से दुश्मनी चली आ रही थी।
3. दोनों आबू की परमार राजकुमारी इच्छिनी देवी से विवाह करना चाहते थे लेकिन पृथ्वीराज ने इससे विवाह कर लिया था।

- जगदेव प्रतिहार ने इन दोनों के बीच संधि करवा दी थी।

चौहान–गहड़वाल विवाद–

↓

पृथ्वीराज तृतीय v/s जयचन्द गहड़वाल (कन्नौज)

कारण :–

1. दिल्ली का उत्तराधिकार
2. जयचन्द, पृथ्वीराज के खिलाफ परमार्दिदेव चन्देल की सहायता कर रहा था।
3. पृथ्वीराज ने जयचन्द की बेटी संयोगिता का अपहरण कर उससे विवाह कर लिया था।

नोटः–दशरथ शर्मा ने इस प्रेम कहानी को ऐतिहासिक तथ्य के रूप में स्वीकार किया है

(दशरथ शर्मा की पुस्तक–'*The early chouhan dynesties*')

तराईन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

↓

पृथ्वीराज तृतीय v/s मोहम्मद गौरी (गजनी)

कारण :–

1. गौरी ने तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार कर लिया था।
2. चौहानों तथा गजनी के राजाओं में लम्बे समय से दुश्मनी चली आ रही थी।

- पृथ्वीराज तृतीय युद्ध जीत गया।
- दिल्ली के गोविन्दराज तोमर ने गौरी को घायल कर दिया था।

तराईन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

↓

पृथ्वीराज तृतीय v/s मोहम्मद गौरी

- मोहम्मद गौरी युद्ध जीत गया।
- पृथ्वीराज के सेनापति उदयराज व स्कन्द इस युद्ध में नहीं थे।
- सोमेश्वर नामक सेनापति ने पृथ्वीराज से विश्वासघात किया।
- पृथ्वीराज को सिरसा के पास सरस्वती नामक स्थान से गिरफ्तार किया गया तथा उसे मार दिया गया । गौरी के अधीन शासन किया था
- हसन निजामी की पुस्तक– ''ताज–उल–मासिर'' के अनुसार पृथ्वीराज ने कुछ समय तक गजनी के अधीन शासन किया।

पृथ्वीराज की सांस्कृतिक उपलब्धियाँः–

- कला एवं संस्कृति विभाग की स्थापना की थी। इस विभाग का मंत्री–पद्मनाभ को बनाया गया था।
- दिल्ली के समीप पिथौरागढ़ किला का निर्माण करवाया।

दरबारी विद्वान :-

1. चन्दबरदाई - पृथ्वीराज रासौ
2. जयानक - पृथ्वीराज विजय
3. वागीश्वर जनार्दन
4. विद्यापति गौड़
5. विश्वरूप
6. आशाधर

उपाधियाँ :-1.राय पिथौरा
2. दलपुंगल

गोविंदराज :-

- इसने तुर्कों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। तथा इसे अजमेर का राजा बना दिया गया।
- इसके चाचा हरिराज ने इसे हटा दिया था। अतः यह रणथम्भौर चला जाता है।

हरिराज :-

- इसके सेनापति चतरराज ने दिल्ली पर आक्रमण किया। लेकिन वह हार गया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर पर आक्रमण किया तथा हरिराज को हरा दिया। अतः हरिराज ने आत्महत्या कर ली।

रणथम्भौर का इतिहास

- रणथम्भौर में चौहान वंश का शासन थां

गोविन्दराज :-

- 1194 ई. में इसने रणथम्भौर में चौहान राज्य की स्थापना की थी।

वाल्हण:-

प्रहलादन :-

वीरनारायण :-

- यह दिल्ली के इल्लतुतमिश के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था।

वागभट्ट :-

- दिल्ली के नासिरुद्दीन ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया। लेकिन वह रणथम्भौर पर अधिकार नहीं कर सका।

जैत्रसिंह :-

- इसने 32 वर्षों तक रणथम्भौर पर शासन किया था। तथा अपने अंतिम समय में इसने अपने बेटे हम्मीर को राजा बना दिया था।

हम्मीर (1282-1301 ई.) :-

- यह 17 में से 16 युद्धों का विजेता था।
- इसने अपने कई पड़ोसी राजाओं को हराया।

  जैसे - प्रतापसिंह - आबू
  समरसिंह - मेवाड़
  भोज परमार द्वितीय - धार/मालवा
  अर्जुन - भीमरस

- दिल्ली के सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर दो बार आक्रमण किये (1290,1292) लेकिन वह रणथम्भौर पर अधिकार नहीं कर पाया।
- जलालुद्दीन खिलजी ने कहा था कि **"मैं ऐसे 10 किलों को मुसलमान के बाल के बराबर नहीं समझता।"**
- अमीर खुसरो ने अपनी पुस्तक "मिफता-उल-फुतुह" में जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमणों का वर्णन किया है।
- 1301 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण कर दिया।

कारण :-

→ हम्मीर ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण दी थी -
1. मुहम्मदशाह 2. केहब्रू

सेनापति

अलाउद्दीन
नुसरत खां
उलूग खां
अलप खां

हम्मीर
भीम सिंह
धर्म सिंह

- ''नुसरत खां'' तथा ''भीमसिंह'' युद्ध में लड़ते हुए मारे गये थे।
- रतिपाल तथा रणमल ने हम्मीर से विश्वासघात किया।
- 1301 ई. में रणथम्भौर में साका किया गया। यह राजस्थान का पहला साका था।
- हम्मीर की रानी रंगदेवी ने जौहर किया।
- अमीर खुसरों ने इस जौहर का वर्णन किया। (पुस्तक - खजाईन-उल-फुतुह)
- यह फारसी भाषा में जौहर की पहली जानकारी है।
- हम्मीर ने केसरिया किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर अधिकार कर लिया तथा उलूग खां को रणथम्भौर सौंप दिया।
- अमीर खुसरों ने कहा था कि-**''आज कुफ्र का घर इस्लाम का घर हो गया है।''**

देवल दे

- यह हम्मीर की राजकुमारी थी।
- इसने पद्म तालाब में कूद कर आत्महत्या कर ली। इसे प्रथम जल जौहर कहा गया।

हम्मीर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

- हम्मीर ने 'शृंगार हार 'नामक पुस्तक लिखी।
- हम्मीर ने ''कोटि यज्ञ'' का आयोजन करवाया था।
  ↳ पुरोहित -विश्वरूप
- अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्षों के शासनकाल की याद में रणथम्भौर में 32 खम्भों की छतरी का निर्माण करवाया।

दरबारी विद्वान :-1. राघवदेव (हम्मीर के गुरू)
2. बीजादित्य

- किसी कवि ने हम्मीर के बारे में ठीक ही कहा है-

> **''सिंह गमन, सत्पुरूष वचन, कदली फलै इक बार।**
> **तिरिया-तेल, हम्मीर-हठ, चढ़े न दूजी बार।।''**

हम्मीर से संबंधित पुस्तकें :-

1. नयनचन्द्र सूरी - हम्मीर महाकाव्य
2. सांरगधर - हम्मीर रासौ
3. जोधराज - हम्मीर रासौ
4. चन्द्रशेखर - हम्मीर हठ
5. अमृत कैलाश - हम्मीर बंधन
6. भांडउ व्यास - हम्मीरायण

नोटः- अमीर खुसरो की पुस्तक 'मिफ्ता-उल-फुतुह' से जलालुद्दीन के राजस्थान पर आक्रमण की जानकारी मिलती है।

नाडोल का इतिहास

- नाडोल में चौहान वंश का शासन था।

लक्ष्मणराज :-

- 960 ई. में नाडोल में चौहान राज्य की स्थापना की।
- इसने नाडौल में आशापुरा माता मंदिर का निर्माण करवाया।

केल्हण :-

- इसका छोटा भाई कीर्तिपाल जालौर चला गया था।
- अपनी राजकुमारियों गीगादेवी व शृंगारदेवी का विवाह आबू के धारावर्ष परमार से किया।
- इसने कायन्द्रा के युद्ध में भाग लिया था।

जालौर का इतिहास

- जालौर में चौहान वंश का शासन था।
- जाबालि ऋषि के कारण जालौर को जाबालिपुर कहा जाता है।
- जाल के वृक्षों की अधिकता के कारण इसे जालौर कहा जाने लगा।
- जालौर का किला सोनगिरि/सुवर्णगिरि पर्वत पर स्थित है। इसलिए जालौर का किला सोनगिरि किला कहलाता है। एवं जालौर के चौहान सोनगरा चौहान कहलाते है।

कीर्तिपाल :-

- 1181 ई. में इसने कुन्तपाल परमार को हराया तथा जालौर में चौहान वंश का शासन स्थापित किया।
- सुन्धा अभिलेख में इसे 'राजेश्वर' कहा गया है।
- 'नैणसी री ख्यात' के अनुसार 'कीतू (कीर्तिपाल) एक महान राजा था।'

समरसिंह :-

- इसने जालौर में परकोटा, कोषागार तथा शस्त्रागार बनवाया था।
- अपनी राजकुमारी लीलादेवी का विवाह गुजरात के चालुक्य राजा भीम द्वितीय से किया था।
- इसने इल्तुतमिश से नाडौल व मंडोर छीन लिए थे।

उदयसिंह :-

- इसने गुजरात के लवण प्रसाद को हराया था।

चांचिग देव :-

- इसकी उपाधि 'महाराजाधिराज'
- यह नासिरूद्दीन महमूद व बलवन्त के समकालीन था। लेकिन ये दोनों जालौर पर आक्रमण की हिम्मत नहीं कर सकें।

सामन्त सिंह :-

- 1291 ई. में जलालुद्दीन खिलजी ने जालौर पर आक्रमण किया। लेकिन सांचौर के निकट सामन्तसिंह ने इसे सारंगदेव बाघेला की सहायता से हरा दिया था।

कान्हड़देव :-

- अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर तथा सिवाणा पर आक्रमण किए थे।

कारण :-

- गुजरात आक्रमण के दौरान जब अलाउद्दीन की सेना वापस जा रही थी, तब कान्हड़देव के सेनापति जैता देवड़ा ने उस पर आक्रमण कर दिया था। तथा सोमनाथ मंदिर के शिवलिंग के टुकड़े छीन लिए थे।
- फरिश्ता के अनुसार अलाउद्दीन का सेनापति आईन-उल-मुल्क-मुल्तानी कान्हड़देव को समझा कर दिल्ली ले गया था। तथा वहाँ पर कान्हड़ देव ने अलाउद्दीन की युद्ध चुनौती को स्वीकार कर लिया था।
- नैणसी के अनुसार युद्ध का कारण फिरोजा का वीरमदेव के प्रति आकर्षण था।
- फिरोजा की धाय माँ- गुल विहिश्त

अलाउद्दीन का सिवाणा पर आक्रमण :-

- सिवाणा को जालौर की चाबी कहा जाता था।
- इस समय सिवाणा का किला सातल तथा सोम के पास था। ये कान्हड़देव के भतीजे थे।
- एक भायल सैनिक ने इनसे विश्वातघात किया।

- 1308 ई. में सातल तथा सोम के नेतृत्व में सिवाणा का पहला साका हुआ ।
- अलाउद्दीन ने सिवाणा पर अधिकार कर लिया तथा इसका नाम बदलकर खैराबाद कर दिया। तथा उसने कमालुद्दीन गुर्ग को सिवाणा सौप दिया।
- तुर्कों ने शिक्षा केन्द्र भीनमाल को नष्ट कर दिया, तथा सांचौर के महावीर मंदिर को तोड़ दिया।

मालखाना का युद्ध :-

- इस युद्ध में कान्हड़देव ने तुर्क सेना को हरा दिया तथा तुर्क सेनापति शम्स खाँ को गिरफ्तार कर लिया।

अलाउद्दीन का जालौर पर आक्रमण –1311 ई.

- इस समय कान्हड़देव तथा वीरमदेव के नेतृत्व में साका किया गया था। अलाउद्दीन ने जालौर पर अधिकार कर लिया तथा इसका नाम बदलकर 'जलालाबाद' कर दिया।
- बीका दहिया ने कान्हड़देव से विश्वासघात किया था इसलिए बीका दहिया को उसकी पत्नी हीरादे ने मार दिया था।
- **पद्मनाभ की पुस्तकें**–
    1. कान्हड़देव प्रबन्ध
    2. वीरमदेव सोनगरा री वात

सिरोही का इतिहास

- सिरोही में चौहान वंश की देवड़ा शाखा का शासन था।

लुम्बा :-

- 1311 ई. में इसने परमारों को हराया तथा आबू व चन्द्रावती पर अधिकार कर लिया। तथा इसने चन्द्रावती को अपनी राजधानी बनाया।

शिवभाण :-

- 1405 ई. में इसने शिवपुरी को अपनी राजधानी बनाया था।

सहसमल :-

- 1425 ई. में इसने सिरोही (सरणवाही नगर) की स्थापना की।तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।

सुरताण :-

- बीकानेर महाराजा रायसिंह के कहने पर इसने सिरोही का आधा भाग अकबर को दे दिया था। तथा अकबर ने इसे जगमाल को दे दिया।

इस समय सुरताण का बीजा देवड़ा से विवाद चल रहा था।

दत्ताणी का युद्ध :- 1583 ई.

↓

सुरताण v/s अकबर

- जगमाल (प्रताप का छोटा भाई)
- रायसिंह (चन्द्रसेन का बेटा)
- दांती सिंह (कोलीवाड़ा)

इस युद्ध में सुरताण की जीत हुई। जगमाल तथा रायसिंह लड़ते हुए मारे गए थे।

- दरबारी विद्वान :-
  1. दुरसा आढ़ा –'राव सुरताण रा कवित्त'

बैरीसाल :-

- औरंगजेब के खिलाफ मारवाड़ के अजीत सिंह को शरण दी थी।

शिवसिंह :-

- 1823 ई. में यह अंग्रेजों से संधि कर लेता है।
- सिरोही राजस्थान की अंतिम रियासत थी। जिसने अंगेजों के साथ संधि कर ली थी।

बूँदी का इतिहास

- बूँदी में चौहान वंश की हाडा शाखा का शासन था। पहले बूँदी पर मीणा राजाओं का अधिकार था। बून्दा मीणा के कारण इसका नाम बूँदी पड़ा।
- रणकपुर (पाली) अभिलेख में बून्दी का नाम 'वृन्दावती' दिया गया है।

देवा :-

- 1241 ई. में इसने जैता मीणा को हराया तथा बूँदी में चौहान वंश की हाड़ा शाखा का शासन प्रारम्भ किया।

जैत्रसिंह :-

- 1274 ई. में कोटा को जीत कर उसे बूँदी में मिला दिया।

बरसिंह :-

- 1354 ई. में इसने बूँदी में तारागढ़ किले का निर्माण करवाया। यह किला अपने भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

सुरजन :-

- 1569 ई. में अकबर ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया। इस समय सुरजन अकबर से संधि कर लेता है। इसमें आमेर के भगवन्तदास की मुख्य भूमिका थी।
- द्वारिका में रणछोड़ मंदिर का निर्माण करवाया।
- **दरबारी विद्वान :-**
  1. चन्द्रशेखर - (1) 'हम्मीर हठ', (2) 'सुरजन चरित'
  2. बुद्धसिंह-'नेहतरंग'

बूँदी का उत्तराधिकार संघर्ष :-

- बुद्धसिंह के दो पुत्रों दलेलसिंह (दत्तक पुत्र) व उम्मेद सिंह में उत्तराधिकार संघर्ष हुआ।
- सवाई जयसिंह ने दलेल सिंह का समर्थन किया। तथा मराठों ने उम्मेद सिंह का पक्ष लिया।
- बूँदी राजस्थान की पहली रियासत थी जिसकी आन्तरिक राजनीति में मराठों ने हस्तक्षेप किया था।

अमर कंवर :-

- यह सवाई जयसिंह की बहन तथा बुद्धसिंह की रानी थी।
- इसने उम्मेद सिंह के पक्ष में मराठा सेनापति मल्हार राव होल्कर को बुलाया।

कृष्णा कंवर

- सवाई जयसिंह की बेटी।
- दलेल सिंह की रानी

विष्णु सिंह :-

- 1818 ई. में यह अंग्रेजों से संधि कर लेता है।

कोटा का इतिहास

- कोटा में चौहान वंश की हाड़ा शाखा का शासन था।

माधोसिंह :-

- यह बूँदी के राजा रतनसिंह का बेटा था।
- 1631 ई. में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने बूँदी रियासत का विभाजन कर दिया तथा माधोसिंह को कोटा का स्वतंत्र राजा बना दिया।
- मध्य एशियाई अभियान की सफलता के बाद शाहजहाँ ने इसे ''बाद रफ्तार'' नामक घोड़ा भेंट किया था।

मुकुन्द सिंह :-

- इसने कोटा में अबली मीणी का महल बनवाया था।
- यह धरमत के युद्ध में दारा की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया था।

भीमसिंह :-

- यह ''वल्लभ सम्प्रदाय'' का अनुयायी था।
- इसने स्वयं का नाम बदलकर कृष्णदास कर लिया। इसने कोटा का नाम बदलकर ''नन्दग्राम'' तथा शेरगढ़ बाराँ का नाम बदलकर ''बरसाना'' कर दिया था।
- इसने बारां में सांवरियाँ जी मन्दिर बनवाया था।
- मुगल बादशाह फर्रूखशियर के कहने पर इसने बूँदी पर आक्रमण किया तथा बूँदी के राजा बुद्धसिंह को हराया तथा बूँदी का नाम बदलकर 'फर्रूखाबाद' कर दिया। वह किले से ''कड़क बिजली'' तथा ''धूलधाणी'' नामक तोपें उठाकर ले गया।

उम्मेदसिंह :-

- 1817 ई. में यह अंग्रेजों के साथ संधि कर लेता है।
- फरवरी 1818 ई. में अंग्रेजों ने कोटा रियासत के साथ पूरक संधि की।

पूरक संधि की शर्तें :-

1. जालिम सिंह झाला व उसके वंशज हमेशा कोटा के दीवान रहेंगे।
2. कोटा की सारी शक्तियाँ दीवान को दी जाएगी।

किशोरसिंह द्वितीय:-

मांगरोल का युद्ध (1821 ई.)

↓

किशोर सिंह v/s जालिम सिंह झाला

- जालिम सिंह झाला जीत गया।
- इस युद्ध में अंग्रेजों ने जालिम सिंह झाला का साथ दिया (कर्नल जेम्स टॉड ने सहायता की)

रामसिंह द्वितीय :-

- 1838 ई. में अंग्रेजों ने कोटा रियासत का विभाजन कर दिया तथा मदनसिंह झाला को झालावाड़ का स्वतंत्र राजा घोषित कर दिया गया।
- यह जालिमसिंह झाला का पोता था।
- झालावाड़ राजस्थान की अन्तिम रियासत थी।
  राजधानी -झालरापाटन (घंटियों का शहर)

परमार वंश का इतिहास

परमार वंश की रियासतें :-

1. आबू
2. मालवा
3. वागड़
4. जालौर
5. किराडू

आबू के परमार

- परमारों का उत्पति स्थल - आबू।

धूमराज :-

- यह आबू के परमार वंश का संस्थापक था।

उत्पलराज :-

- आबू के परमारों की वंशावली प्रारम्भ होती है।

धरणीवराह :-

- धरणी वराह ने अपने राज्य को 9 भागों में विभाजित किया। अतः इसका राज्य **'नवकोटी मारवाड़'** कहलाता
- गुजरात के चालुक्य राजा मूलराज-प्रथम ने आबू पर आक्रमण किया।
- गुजरात के चालुक्य राजा मूलराज-प्रथम ने आबू पर आक्रमण किया।
- इस समय धवल राठौड़ ने धरणीवराह को शरण दी।
- यह जानकारी धवल राठौड़ के हस्तीकुण्डी अभिलेख(पाली) से प्राप्त होती है। (997 ई.)

धन्धुकः-

- गुजरात के चालुक्य राजा भीम-प्रथम ने आबू पर आक्रमण किया।
- धन्धुक भोज परमार के साथ चित्तौड़ चला गया।
- विमलशाह ने धन्धुक व भीम प्रथम के मध्य समझौता करा दिया।
- भीम प्रथम ने विमलशाह को आबू का दंडपति बनाया।
- विमलशाह ने देलवाड़ा में आदिनाथ जैन मंदिर (ऋषभदेव) का निर्माण करवाया।
  इसे "विमल वसहि"(जैन मंदिर) भी कहते है।
- कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार- **"यह ताजमहल के बाद भारत की दूसरी सबसे सुंदर इमारत है।"**
- धन्धुक की बेटी लाहिनी देवी ने बसंतगढ़ (सिरोही) में सूर्य मंदिर तथा सरस्वती बावड़ी (लाहिणी बावड़ी) का पुनः निर्माण करवाया था।
  सर्वाधिक सूर्यमंदिर - सिरोही

विक्रमदेव :-

- उपाधि -'महामण्डलेश्वर'
- इसने 'अर्णोराज चौहान' के खिलाफ 'कुमारपाल चालुक्य' की सहायता की।

धारावर्ष :-

कायन्द्रा का युद्ध-(1178 **ई.-सिरोही)**

↓

मोहम्मद गौरी (गजनी) v/s मूलराज द्वितीय(चालुक्य) (संरक्षिका - नायिका देवी)

↓

सहयोगी -

- केल्हण(नाडौल)
- कीर्तिपाल(जालौर)
- धारावर्ष(आबू)

- इसमें मुहम्मद गौरी हार गया था।
- जब कुतुबुद्दीन ऐबक तथा इल्लतुतमिश ने गुजरात पर आक्रमण किए थे। तब भी धारावर्ष ने गुजरात की सहायता की थी।
- धारावर्ष एक तीर से तीन भैंसों को बीन्द दिया करता था।

जानकारी के स्रोत -

1. अचलगढ़ किले में धारावर्ष की मूर्ति
2. पाटनारायण मंदिर अभिलेख (सिरोही)-1287 ई.

प्रहलादन देव :-

- धारावर्ष परमार का छोटा भाई था।
- इसने 'प्रहलादनपुर (गुजरात)' नामक नगर की स्थापना की।
- इसने ''पार्थ पराक्रम व्यायोग'' नामक नाटक लिखा था।
- पृथ्वीराज चौहान के आक्रमण के समय इसने आबू की रक्षा की थी।
- दरबारी विद्वान :-
  - सोमेश्वर की पुस्तक -'कीर्ति कौमुदी' (प्रहलादनदेव की जानकारी)

सोमसिंह :-

- वास्तुपाल तथा तेजपाल ने देलवाड़ा (आबू) में नेमीनाथ जैन मंदिर का निर्माण करवाया था। जिसे 'लूणवसहि' भी कहा जाता है।
- इस मंदिर को 'देवरानी-जेठानी' का मंदिर भी कहा जाता है।
- यह धारावर्ष का पुत्र था।

प्रतापसिंह :-

- इसने मेवाड़ के जैत्रसिंह को हराया था तथा चन्द्रावती पर अधिकार कर लिया था।

विक्रमसिंह :-

- यहां से आबू के परमार राजा ''रावल'' तथा ''महारावल'' की उपाधियाँ धारण करने लग गए थे।
- कालान्तर में जालौर के सोनगरा चौहानों ने आबू के परमार राज्य के पश्चिमी भ-ूभाग पर कब्जा कर लिया था।

मालवा के परमार

- ❖ मालवा में परमार वंश का शासन था।
- ❖ इनका उत्पत्ति स्थल 'आबू' था।
- ❖ राजधानियाँ:- धारानगरी तथा उज्जैन।
- ❖ राजस्थान के कुछ भाग मालवा राज्य में समाहित थे। जैसे-
  - ○ प्रतापगढ़ का पूर्वी भाग
  - ○ कोटा का दक्षिणी भाग
  - ○ वागड़ व झालावाड़ क्षेत्र

कृष्णराज :-

- अन्य नाम-'उपेन्द्र'
- इसके पुत्र 'डम्बर सिंह' ने वागड़ में परमार राज्य की स्थापना की थी।

मुंज परमार :-

- इसने मेवाड़ के राजा शक्ति कुमार को हराया।
- इस समय इसने आहड़ (उदयपुर) को नष्ट कर दिया तथा चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- इस समय धवल राठौड़ ने शक्तिकुमार को शरण दी थी।
  (यह जानकारी-हस्तिकुण्डी अभिलेख 997 ई. (पाली) से मिलती है।)
- यह कर्नाटक के राजा तैलप द्वितीय के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था।

दरबारी विद्वान -

	लेखक	पुस्तकें
(i)	हलायुध	अभिधान रत्नमाला
(ii)	पद्मगुप्त (परिमल)	नवसाहसांक चरित
(iii)	धनंजय	दसरूपक
(iv)	धनपाल	तिलक मंजरी

मुंज परमार की उपाधियाँ :-

- कविवृष
- अमोघवर्ष
- उत्पलराज
- वाकपतिराज
- श्री वल्लभ
- पृथ्वी वल्लभ

सिन्धुराज :-

- मुंज परमार का छोटा भाई था।
- उपाधि - 'नवसाहसांक'

भोज :-

- इसने चित्तौड़ में त्रिभुवनारायण मंदिर का निर्माण करवाया था। (भगवान शिव)
- नागदा के पास इसने भोजसर तालाब का निर्माण करवाया।
- अपनी राजधानी 'धारा नगरी' में 'सरस्वती कण्ठाभरण' नामक संस्कृत पाठशाला का भी निर्माण करवाया।
- इस पाठशाला की दीवारों पर 'कूर्मशतक' व 'पारिजातमंजरी' की पंक्तियाँ लिखवाई गई थी।
- कालान्तर में तुर्कों ने इस पाठशाला को तोड़ दिया तथा इसे ''कमालमौला मस्जिद'' में बदल दिया था।

मदन ने पारिजातमंजरी की रचना की थी जो कि अर्जुनवर्मा का दरबारी विद्वान था।

(i) **भोज की पुस्तकें -** (1) शृंगार मंजरी कथा(संस्कृत) (2) कूर्मशतक (प्राकृत)

वागड़ के परमार

- वागड़ में परमार वंश का शासन था।
- राजधानी-अर्थूणा (बांसवाड़ा)

डम्बर सिंह :-

- इसने वागड़ में परमार राज्य की स्थापना की।

मण्डलिक :-

- इसने 'पाणाहेड़ा' में मंडलेश्वर मंदिर (बांसवाड़ा) का निर्माण करवाया था।

चामुण्डराज :-

- इसने 'अथूर्णा' में मंडलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया था। (1079 ई.)

प्रतिहार वंश

- प्रतिहारों का उत्पति स्थल मण्डोर था।
- अग्निकुंड से उत्पन्न चार राजपूत वंश यथा - प्रतिहार, चालुक्य, चौहान और परमार में से सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था जिसे गुर्जर-प्रतिहार भी कहा जाता है।
- पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में गुर्जर जाति का सर्वप्रथम उल्लेख हुआ है एवं बाणभट्ट के हर्षचरित में भी गुर्जर जाति का उल्लेख मिलता है।
- प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी, जिनमें सबसे प्राचीन मण्डोर के प्रतिहार थे।
- प्रतिहारों का प्रथम केंद्र मण्डोर (जोधपुर) था। यहां से क्रमशः भीनमाल, उज्जैन एवं कन्नौज गए।

मण्डोर के प्रतिहार

हरिश्चन्द्र :-

- यह मण्डोर के प्रतिहारों का आदिपुरूष था।
- प्रतिहार अभिलेखों में इसे ब्राह्मण बताया गया है।
- यह वेदों का ज्ञाता था।
- उपाधि-'रोहलिद्धि' (योग क्रिया में निपुण)
- इसके चार बेटों (क्षत्रिय रानी 'भद्रा' के पुत्र) ने मंडोर पर अधिकार किया तथा यहां पर परकोटे का निर्माण करवाया।

  चार पुत्र :-
  1. भोग भट्ट
  2. कक्क
  3. रज्जिल
  4. दद्द

रज्जिल :-

- यहां से मंडोर के प्रतिहारों की वंशावली प्रारम्भ होती है।
- यह हरिश्चंद्र का तीसरा पुत्र था।

नरभट्ट :-

- उपाधि- 'पेल्लापेली'

नागभट्ट:-

- यह रज्जिल का पोता था।
- इसने अपनी राजधानी मण्डोर से मेड़ता स्थानान्तरित की।
- इसने मण्डोर को दूसरी तथा भीनमाल को तीसरी राजधानी बनाया।
- इसने उज्जैन को प्रतिहारों का प्रमुख केंद्र बनाया।
- इसने अरबों को पराजित किया।(अरब आक्रमणकारी-जुन्नैद)
- मिहिरभोज की ग्वालियर प्रशस्ति में नागभट्ट प्रथम को "मलेच्छों(अरब) का नाशक" , "नारायण अवतार" तथा प्रतिहारों को लक्ष्मण(सौमित्र) का वंशज बताया गया है।
- मिहिर भोज के ग्वालियर प्रशस्ति का लेखक- बालादित्य था।
- इसका बेटा तात सन्यासी बन गया था। तथा मण्डोर के पवित्र आश्रम में रहता था। तात ने अपने छोटे भाई 'भोज' को मण्डोर का राजा बना दिया।

शीलूक :-

- इसने तमणी (फलौदी) तथा वल्ल (जैसलमेर) पर अधिकार कर लिया था।
- इसने वल्ल(जैसलमेर) के राजा देवराज भट्टी से उसका छत्र छीन लिया था।

कक्क :-

- यह प्रतिहार राजा वत्सराज का सामंत था।
- इसने मुंगेर (बिहार) के युद्ध में वत्सराज प्रतिहार(भीनमाल) की तरफ से भाग लिया था।
- इस युद्ध में वत्सराज ने धर्मपाल को हराया था।
- यह व्याकरण, ज्योतिष, तर्क शास्त्र तथा काव्यशास्त्र में निपूर्ण था।

बाउक :-

- भुअकूप के युद्ध में इसने मयूर को हराया था।
- मण्डोर के विष्णु मंदिर में इसने बाउक प्रशस्ति (837 ई.) लगवाई थी। जो मण्डोर के प्रतिहारों की जानकारी का महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

कक्कुक :-

- इसने घटियाला (जोधपुर) में दो अभिलेख(861 ई.) लगवाये थे। जो मंडोर के प्रतिहारों की जानकारी देते है।
- इसके घटियाला अभिलेख में प्रतिहारों को ब्राह्मण बताया गया है।
- **प्रथम अभिलेख** -
  - यह अभिलेख माता की साल(जैन मंदिर) नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।
  - यह प्राकृत भाषा में लिखा गया है।
- **द्वितीय अभिलेख** -
  - यह अभिलेख खाखू देवल नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।
  - इसे गणपति स्तम्भ अभिलेख भी कहा जाता है।
  - यह संस्कृत भाषा में लिखा गया है।
- इन अभिलेखों का :-

  लेखक - मातृकवि
  उत्कीर्णक - कृष्णेश्वर
- इसने मण्डोर तथा घटियाला में जय स्तम्भ लगवाए थे।
- इसने घटियाला में बाजार बनवाया था।
- इसने आभीरों तथा भीलों के विद्रोह को दबाया था।

यदु वंश

- यदुवंशी भगवान श्रीकृष्ण के वंशज है।
- यदुवंश की रियासतें-
    1. जैसलमेर
    2. करौली

जैसलमेर का इतिहास

- जैसलमेर में यदुवंश की 'भाटी शाखा' का शासन था।
- भाटी भगवान श्रीकृष्ण के वंशज है। इसलिए इन्हें 'छत्राला यादवपति' कहा जाता है।
- उत्तरी सीमा की रक्षा के कारण भाटियों को ''उत्तर भड़ किंवाड़'' कहा जाता है। (उत्तरी सीमा का प्रहरी)

भट्टी

- 285 ई. इसने भटनेर को अपनी राजधानी बनाया था।

मंगलराव-

- यह गजनी के राजा ढुंडी से हार गया था। अतः यह रेगिस्तान में आ गया तथा इसने तनोट को अपनी राजधानी बनाया।

केहर-

- इसने तनोट में किले का निर्माण करवाया।

देवराज-

- इसने देरारावल में किले का निर्माण करवाया तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।
- इसने परमारों को पराजित कर लोद्रवा पर अधिकार किया तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।

> - मूमल महेन्द्र की प्रेम कहानी में मूमल लोद्रवा की राजकुमारी थी तथा महेन्द्र अमरकोट का राजकुमार था।

विजयराज-

- इसके बाद जैसलमेर का इतिहास व्यवस्थित रूप से प्राप्त होता है।
- धनवा अभिलेख में इसे महाराजा कहा गया है।

जैसल-

- 1155 ई. इसने जैसलमेर की स्थापना की तथा किले का निर्माण प्रारम्भ करवाया। (1187 ई.) शालिवाहिन ने इस किले का निर्माण पूरा करवाया था।
- यह किला पीले पत्थरों से निर्मित है। अतः इसे स्वर्णगिरी किला/सोनारगढ़ कहा जाता है।
- इस किले के निर्माण में चुने का प्रयोग नहीं किया गया था।
- सत्यजीत रे ने इस किले पर फिल्म बनाई थी। ⟶ **(सोनारकिला)**

मूलराज I–
- अलाउद्दीन खिलजी ने जैसलमेर पर आक्रमण किया। इस समय जैसलमेर का पहला साका हुआ था।

दुर्जनशाल–
- फिरोज तुगलक ने जैसलमेर पर आक्रमण किया था। इस समय जैसलमेर का दूसरा साका हुआ था।

लूणकरण–
- 1550 ई. में कन्धार के अहीर अली ने जैसलमेर पर आक्रमण किया।
- इस समय केसरिया तो किया गया था। पर जौहर नहीं हो पाया। अतः इसे आधा साका कहा जाता है।

हरराज–
- 1570 ई. में इसने नागौर दरबार में अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी।

मूलराज–
- 1818 ई. इसने अंग्रेजों के साथ संधि कर ली थी।

जवाहरसिंह–
- आधुनिक जैसलमेर का निर्माता ।
- यह आजादी के समय जैसलमेर का राजा था।
- इसने मोहनगढ़ किले का निर्माण करवाया था।
- यह भारत का अंतिम किला है।
- 4 अप्रैल, 1946 को सागरमल गोपा को जेल में जिंदा जला दिया गया था।
- इन्होंने राजतंत्र तथा अंग्रेजी शासन का विरोध किया।

सागरमल गोपा की पुस्तकें :–
- ➢ आजादी के दीवाने
- ➢ जैसलमेर का गुंडाराज
- ➢ रघुनाथ सिंह का मुकदमा

- जैसलमेर तथा हैदराबाद रियासतों ने सागरमल गोपा के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी थी।
- सागरमल गोपा की हत्या की जाँच के लिए **'गोपाल स्वरूप पाठक'** आयोग बनाया गया था।

करौली का इतिहास

- करौली में यदुवंश की 'जादौन शाखा' का शासन था।

विजयराज–

- यह मथुरा की शूरसेन शाखा से सम्बन्धित था।
- 1040 ई. में इसने बयाना को अपनी राजधानी बनाया तथा यहां पर किले का निर्माण करवाया। **(विजयमंदिर गढ़)**

तिमनपाल–

- इसने तिमनगढ़ को अपनी राजधानी बनाया।

कुंवरपाल–

- मोहम्मद गौरी ने तिमनगढ़ पर आक्रमण किया था।

अर्जुनपाल–

- 1348 ई. में इसने करौली की स्थापना की थी।
- पहले करौली को 'कल्याणपुर' कहा जाता था।

धर्मपाल–

- 1650 ई. इसने करौली को अपनी राजधानी बना लिया था।

गोपालपाल–

- हुरड़ा सम्मेलन में भाग लिया था।
- करौली में मदन मोहन मंदिर का निर्माण करवाया।
- यह मंदिर गौड़ीय सम्प्रदाय से संबंधित है।

हरबक्शपाल–

- 1817 ई. में यह अंग्रेजों के साथ संधि कर लेता है।

भरतपाल–

- 1852 ई. नरसिंह पाल की मृत्यु के बाद भरतपाल**(दत्तक पुत्र)** को करौली का राजा बनाया गया था।
- 1855 ई. में गर्वनर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने इसे राजा मानने से मना कर दिया तथा करौली का अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर लिया।
- कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स ने करौली का विलय रद्द कर दिया था तथा मदनपाल को करौली का राजा बना दिया था।

मदनपाल–

- 1857 ई. क्रांति के दौरान इसने कोटा महाराव रामसिंह को मुक्त करवाया था।
- अंग्रेजों ने इसे 17 तोपों की सलामी दी थी।
- 1865 ई. में स्वामी दयानन्द सरस्वती को करौली बुलाया था। यह स्वामी जी की पहली राजस्थान यात्रा थी।

जाट राजवंश

जाट रियासत-

1. भरतपुर
2. धौलपुर

भरतपुर का इतिहास

- भरतपुर में जाट राजवंश का शासन था।

गोकुला-

- 1669 ई. में तिलपत के गोकुला ने मथुरा के आस-पास के जाट किसानों के साथ औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह किया।
- लेकिन औरंगजेब ने इस विद्रोह को दबा दिया।

राजाराम-

- 1687 ई. सिनसिनी के जाट जमींदार राजाराम ने औरंगजेब के खिलाफ पुनः विद्रोह किया।
- सिकंदरा में अकबर के मकबरे को लूट लिया तथा उसकी हड्डियों को जला दिया गया।
- औरंगजेब ने इस विद्रोह को भी दबा दिया था।

चूड़ामन-

- थूण में किले का निर्माण करवाया था।

बदनसिंह-

- सवाई जयसिंह की सहायता से डीग का राजा बना।
- डीग, वैर व कुम्हेर में किलो का निर्माण करवाया था।

सूरजमल-

- भरतपुर के जाट राज्य का वास्तविक संस्थापक था।
- जाटों का प्लेटो/अफलातून कहा जाता है।
- डीग में जल महलों का निर्माण करवाया था।
- अतः डीग को जलमहलों की नगरी कहा जाता है।
- भरतपुर में किले का निर्माण करवाया था।
- भरतपुर में प्रशासनिक सुधार किए थे तथा योग्यता आधारित नौकरशाही का गठन किया था।
- भरतपुर में कृषि सुधार किए थे।
- इस समय भरतपुर की आय 1 करोड़ 75 लाख रु. थी।
- पानीपत के तीसरे युद्ध के दौरान (1761 ई.) मराठा सेना जब वापस लौट रही थी। तब उन्हें भरतपुर में शरण दी थी।
- दिल्ली पर आक्रमण किया था तथा वहां से नूरजहाँ का झूला लेकर आए तथा इसे डीग के जलमहल में लगवाया।
- **दरबारी विद्वान-**
    1. मंगल सिंह पुरोहित- 'सुजान सम्वत विलास'

जवाहरसिंह–

- दिल्ली पर आक्रमण किया तथा वहाँ से अष्टधातु के दरवाजे लेकर आए थे तथा इन्हें भरतपुर के किले में लगवाया।
- इस जीत की याद में भरतपुर में जवाहर बुर्ज का निर्माण करवाया गया था।
- कालान्तर में जवाहर बुर्ज में भरतपुर के राजाओं का राजतिलक किया जाता था।

रणजीतसिंह–

- 1803 ई. यह अंग्रेजों से संधि कर लेता है।
- अंग्रेज मराठा (1803-06) युद्ध के दौरान मराठा सेनापति जसवंत राव होल्कर को शरण दी थी।
- अंग्रेज सेनापति लॉर्ड लेक ने भरतपुर पर आक्रमण किए थे। लेकिन वह भरतपुर किले को जीत नहीं पाया था। इसलिए भरतपुर किले को 'लौहागढ़' कहा जाता है।
- इस जीत की याद में भरतपुर में फतेह बुर्ज का निर्माण करवाया गया था।

मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था

- हमारी प्रशासनिक व्यवस्था को सामन्ती व्यवस्था भी कहा जाता है।
- इस व्यवस्था में एक भाई राजा बनता था तथा वह अपने बाकी भाइयों को भूमि आवंटित करता था। इस भूमि को जागीर/ठिकाना कहा जाता था।
- इस प्रकार यह व्यवस्था बंधुत्व पर आधारित थी तथा यह एक वंशानुगत व्यवस्था थी।
- राज्य, राजा की व्यक्तिगत सम्पति नहीं होकर सभी भाइयों की सामूहिक धरोहर थी।
- जेम्स टॉड के अनुसार यूरोप में राजा तथा सामन्तों के संबंध स्वामी तथ सेवक की तरह होते थे। लेकिन हमारी व्यवस्था टेन्ट के समान थी तथा उसमें राजा समकक्षों में प्रथम होता था।
- मुगल शासन के दौरान सामंती व्यवस्था में पदसोपान आ गया था लेकिन फिर भी हमारा मूल ढांचा टेंट के समान बना रहा था।
- हमारी व्यवस्था सम्मान एवं कर्तव्य पर आधारित थी।

सामन्तों द्वारा राजा को दिए जाने वाले कर :-

1. **रेख :-**
   - सामन्तों द्वारा राजा को भू-राजस्व जमा करवाया जाता था।
   - मेवाड़ में महाराणा अमर सिंह द्वितीय ने रेख व्यवस्था को व्यवस्थित किया था। अतः इसे 'अमरशाही रेख' कहा जाता है।
   - रेख दो प्रकार की होती थी-

     (1) पट्टा रेख - यह अनुमानित भू-राजस्व होता था। जो जागीर के पट्टे में लिखा जाता था।

     (2) भरतु रेख - यह वास्तविक भू-राजस्व होता था। जो सामन्त द्वारा जमा करवाया जाता था।
2. **उत्तराधिकार कर :-**
   - नए सामन्त द्वारा राजा को यह कर जमा करवाया जाता था।
   - अलग-अलग रियासतों में इस कर को अलग-अलग नामों से जाना जाता था।

     मेवाड़- कैद खालसा, तलवार बंधाई, तथा नजराना

     मारवाड़ -हुक्मनामा , पेशकशी

   अपवाद -जैसलमेर के सामंत यह कर जमा नहीं करवाते थे।
3. **नजराना** :-युवराज के प्रथम विवाह के समय सामन्तों द्वारा राजा को यह कर दिया जाता था।
4. **न्यौत कर** :-राजकुमारियों के विवाह के समय सामन्त राजा को यह कर जमा करवाता था।
5. **गनीम बराड़** :-युद्ध के समय सामन्तों द्वारा राजा को यह कर दिया जाता था।
6. **चाकरी :-**सामन्तों द्वारा राजा को सेवाएं प्रदान की जाती थी इसके बदले में राजा कोई धन नहीं देता था।
   - **अपवाद** –जैसलमेर रियासत में सामन्तों को चाकरी के बदले धन दिया जाता था।

सामन्तों के विशेषाधिकार :-

1. **ताजीम :-**राजा सामन्त के दरबार में आने पर खड़ा होकर स्वागत करता था। यह दो प्रकार की होती थी।

   (a) इकेवड़ी - केवल आने पर।

   (b) दोवड़ी - आने तथा जाने पर ।
2. **बाँह पसावः-**जब सामन्त दरबार में आता था तब राजा उसके कंधे थपथपाया करता था।
3. **हाथ कुरवः-**राजा सामन्त के कंधे थपथपाता है तथा उस हाथ को अपने हृदय से लगा देता है।

जागीरों के प्रकार :-

2. **सामन्त जागीर** :- राजा द्वारा अपने भाइयों को यह जागीर दी जाती थी। यह जागीरें वंशानुगत होती थी।
3. **हुकुमत जागीर** :- यह जागीर प्रशासनिक अधिकारियों को प्रदान की जाती थी।
4. **भौम** :- सैनिक सेवा के बदले दी जाती थी। यह वंशानुगत व अवंशानुगत होती थी।
5. **सासण** :- यह धार्मिक अनुदान के रूप में दी जाती थी। यह कर मुक्त भूमि होती थी अतः इसे माफी जागीर भी कहते है।

नोटः-

1. मुगल बादशाह अकबर ने अजमेर की दरगाह को 18 गाँव दान में दिए थे।
2. मेवाड़ महाराणा जगत सिंह द्वितीय ने इस दरगाह को 4 गाँव दान में दिए थे।

3. मारवाड़ महाराजा अजीत सिंह ने इस दरगाह को भूमि अनुदान दिया था।

सामन्तों की श्रेणियाँ :-

1. **मेवाड़:-** मेवाड़ में सामन्तों की तीन श्रेणियाँ है।
   - प्रथम श्रेणी -इस श्रेणी में 16 सामन्त थे जिन्हें उमराव कहा जाता था। इनमें सलूम्बर का सामन्त सबसे प्रमुख था
   - द्वितीय श्रेणी-इस श्रेणी में 32 सामन्त होते थे।
   - तृतीय श्रेणी- इस श्रेणी में 100 से अधिक सामन्त थे जिन्हें गोल के सामन्त कहा जाता था।
2. **मारवाड़ :-**मारवाड़ में सामन्तों की कुल 4 श्रेणियाँ थी।
   - राजवी- राजा के निकट ३ पीढ़ी के सामन्त। इन्हें रेख, चाकरी, तथा हुक्मनामा जमा नहीं करवाना पड़ता था।
   - सिरदार - निकट ३ पीढ़ी के अलावा अन्य राठौड़ सामन्त।
   - गिनायत- वे सामन्त जिनसे राजा वैवाहिक संबंध स्थापित करता था।
   - मुत्सद्दी- प्रशासनिक अधिकारी।
3. **बीकानेर :-**बीकानेर में सामन्तों की 3 श्रेणियाँ थी।
   - प्रथम श्रेणी- राव बीका के वंशज ।
   - द्वितीय श्रेणी - बीका के वंशजों के अलावा अन्य राठौड़ सामन्त।
   - तृतीय श्रेणी -बीका से पूर्व की बीकानेर का शासक वर्ग।
4. **जैसलमेर :-**हरराज ने सामन्तों की दो श्रेणियाँ बनाई थी।
   - जीवणी- दाहिने हाथ
   - डावी - बाएं हाथ
5. **आमेर :-**पृथ्वीराज ने 12 प्रमुख सामन्त बनाए थे अतः इसे **'बारह कोटड़ी'** व्यवस्था कहा जाता था।
6. **कोटा :-**कोटा में 30 प्रमुख सामन्त थे। इनमें हाड़ा चौहानों की संख्या अधिक थी। इन्हें दो श्रेणियों में विभाजित किया गया था।
   - देशथी- जो कोटा में रहते थे
   - हजूरथी -जो राजा के साथ चले जाते थे।

प्रशासनिक अधिकारी :-

1. **राजा-**
   - राजा सबसे बड़ा प्रशासनिक अधिकारी था लेकिन राजा निरकुंश नहीं था।
   - राजा पुरोहित,युवराज तथा सामन्तों के सहयोग से शासन करता था।
   - राजा पर धर्मशास्त्रों का नियंत्रण तथा नीतिगत दबाव होता था।
   - यदि राजा कम उम्र का होता था तब उसकी माता शासन संभालती थी।
2. **प्रधान-**
   - यह प्रशासनिक एवं सैनिक मामलों में राजा को सलाह दिया करता था।
   - इसे अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग नामों से जाना जाता था।
     जैसे-

कोटा/बूंदी	दीवान/फौजदार
बीकानेर/भरतपुर	मुख्त्यार
जयपुर	मुसाहिब
मेवाड़/मारवाड़/जैसलमेर	प्रधान

3. **दीवान-**
   - यह राजा को वित्त एवं राजस्व के मामले में सलाह देता था।
   - यह परगनों में हकीम की नियुक्ति करता था।
   - राजा की अनुपस्थिति में यह राज्य को संभालता था तब इसे 'देश दीवान' कहा जाता था।

4. **बक्षी**–यह सेना के भर्ती, प्रशिक्षण तथा अनुशासन के मामले देखता था।
5. **नायब बक्षी**–यह सेना तथा किलों पर होने वाले खर्च का ध्यान रखता था। यह रेख का भी हिसाब रखता था।
6. **शिकदार**–यह गैर सैनिक खर्चों का ध्यान रखता था यह नगर की कानून व्यवस्था को सम्भालता था। मुगल प्रशासन में इसे कोतवाल कहा जाता था।
7. **मीर सामा**– यह राजकीय महल में आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। यह राजकीय उद्योगों पर नियंत्रण रखता था। यह बेहद ईमानदार व्यक्ति होता था। कालान्तर में इसे दीवान बनाया जाता था।
8. **वकील** –यह राजधानी में ठिकाने का प्रतिनिधि होता था।
9. **नैमेत्तिक** –राजा का ज्योतिषी होता था।
10. **मीर मुंशी** –यह राजा की तरफ से पत्र लिखता था।

नोटः-प्रतिहार शासनकाल में प्रशासनिक अधिकारियों को 'राजपुरूष' कहा जाता था।

न्यायिक प्रशासन :-

- राजा सबसे बड़ा न्यायिक अधिकारी होता था वह बड़े अपराध तथा मृत्युदण्ड के मामले देखता था।
- हकीम खालसा क्षेत्र में न्यायिक अधिकारी होता था। तथा जागीर में सामन्त न्याय करते थे।
- छोटे मामले ग्राम पंचायत तथा जातीय पंचायत द्वारा देखे जाते थे।
- धर्म शास्त्र के आधार पर न्याय किया जाता है
- अपराधी की धार्मिक तथा सामाजिक स्थिती का ध्यान रखा जाता था।अपराध व्यक्ति के खिलाफ माना जाता था राज्य के खिलाफ नहीं ।
- मुकदमों तथा गवाही का कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं रखा जाता था।
- दण्ड बहुत सरल थे।
- न्याय शीघ्र तथा सस्ता था
- कुछ सामन्तों के पास शरण देने का अधिकार था अतः कई बार बड़े अपराधी बच जाया करते थे।

भू-राजस्व प्रशासन :-

- भूमि दो प्रकार की होती थी-

1. **कृषि भूमि**- कृषि भूमि दो प्रकार की होती थी
   - ✓ उन्नाव/पीव- इसमें सिचाई के कृत्रिम साधनों का प्रयोग।
   - ✓ बारानी भूमि- इसमे वर्षा द्वारा सिंचाई होती थी।
2. **चरणोता भूमि** - यह सार्वजनिक भूमि होती थी इस पर सभी का सामूहिक अधिकार होता था। राजा भी इसे खालसा नहीं कर सकता था इसे गोचर भूमि भी कहा जाता था।

भू-स्वामित्व

↙ सैद्धांतिक (राजा) ↘ व्यावहारिक (किसान)

किसान दो प्रकार के होते थे-

1. बापीदार किसान--

- इनके पास खुद की जमीन होती थी अतः इन्हें भूमि का पट्टा दिया जाता था जिसे 'दाखिला' कहा जाता था
- यह किसान अपने खेत में कुआँ खुदवा सकता था तथा लकड़ियाँ प्राप्त कर सकता था।
- अकाल की स्थिति में यदि किसान बाहर चला जाता था तब भी राजा उसकी भूमि को खालसा घोषित नहीं करता था

2. गैर बापीदार किसान :-

- इनके पास खुद की जमीन नहीं होती थी।
- यह दूसरों की भूमि पर खेती करते थे इन्हें 'शिकमी' कहा जाता था।

भू-राजस्व-- भोग/भोज/लगान/हासिल

खाद्यान (भोग) | नकद (हिरण्य)

- भू-राजस्व के निर्धारण में तीन बातों का ध्यान रखा जाता था-
  1. भूमि की उत्पादकता
  2. फसल का बाजार भाव
  3. किसान की जाति (राजपूत व ब्राह्मण किसानों से कम कर लिया जाता था।)

भू-राजस्व अधिकारी

राज्य → पटवारी

गाँव → चौधरी/पटेल

भू-राजस्व मापन के प्रकार :-

1. **लाटा-कुंता** - फसल के अनुमान के आधार पर।
2. **डोरी** - भूमि के मापन के आधार पर ।
3. **मुक्ता** - सम्पूर्ण गाँव की भूमि का राजस्व।
4. **घुघरी** - फसलों के बीजों के अनुमान के आधार पर ।
5. **जाजम** - भूमि की खरीद बिक्री पर।
6. **सिंगोटी** - पशुओं की खरीद बिक्री पर ।
7. **दान** - एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल के व्यापार पर।
8. **सायर** - मार्ग कर।

Springboard ACADEMY

आधुनिक राजस्थान का इतिहास

1857 ई. की क्रांति

- 1803 ई. भरतपुर तथा अलवर रियासतों ने अंग्रेजों से संधियाँ की थी। इस समय लॉर्ड वेलेजली अंग्रेजों का गवर्नर जनरल था।
- 1817-18 ई. में राजस्थान की अन्य रियासतें अंग्रेजों के साथ संधियाँ कर लेती है। इस समय गवर्नर जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स था। इन संधियों के दौरान 'चार्ल्स मैटकॉफ' अंग्रेजों का प्रतिनिधि था।
- दक्षिण राजस्थान की रियासतों (डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ) से संधियों के दौरान 'जॉन मैलकम' अंग्रेजों का प्रतिनिधि था।
    - ✓ 1803 - (भरतपुर, अलवर)
    - ✓ 1817 - (करौली, कोटा)
    - ✓ 1818 – (लगभग सम्पूर्ण राजस्थान)
    - ✓ 1823 – (सिरोही)
- प्रत्येक रियासत में एक अंग्रेज अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी, जिसे Political Agent/Resident (रेजीडेंट) कहा जाता था।
- डेविड ऑक्टरलोनी (David Octerlony) :- यह राजपूताना का पहला रेजिडेंट था। इसका मुख्यालय 'दिल्ली' था।
- 1832 ई. में ए. जी. जी. मुख्यालय की स्थापना अजमेर में की गई।
- अब्राहम लॉकेट राजस्थान का पहला A.G.G (Agent to Governor General) था।
- 1845 ई. में A.G.G का मुख्यालय आबू (सिरोही) स्थानान्तरित कर दिया गया ।
- 1864 ई. में अजमेर तथा आबू दोनों जगह A.G.G के लिए व्यवस्था की गई।
- 1857 की क्रांति के समय 'जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस' राजस्थान का A.G.G. था।
- पहले यह मेवाड़ का पॉलिटिकल एजेंट था।
- कर्नल जेम्स टॉड मेवाड़ का प्रथम पॉलिटिकल एजेंट था।
- क्रांति के दौरान राजस्थान में अंग्रेजों की छः सैनिक छावनियाँ थी।

1.	नसीराबाद	अजमेर
2.	नीमच	वर्तमान - मध्यप्रदेश में ।
3.	देवली	टोंक
4.	एरिनपुरा	पाली
5.	ब्यावर	ब्यावर
6.	खैरवाड़ा	उदयपुर

- ब्यावर तथा खैरवाड़ा छावनियों के सैनिकों ने क्रांति में भाग नहीं लिया था।

1. नसीराबाद :-

- 28 मई को 15वीं Native Infantry के सैनिकों ने राजस्थान में क्रांति की शुरूआत की। यहां दो अंग्रेज अधिकारियों को मार दिया गया- कर्नल न्यूबेरी, कैप्टन स्पोटिसवुड
- कर्नल पैनी की हृदयाघात से मृत्यु हो गई।
- दो अंग्रेज अधिकारी घायल हो गये- लेफ्टिनेट लॉक, कैप्टन हार्डी
- 30वीं Native Infantry के सैनिक भी क्रांति में शामिल हो गये। सभी विद्रोही दिल्ली चले गये। (30 मई)

2. नीमच :-

- मोहम्मद अली बेग नामक सैनिक ने कर्नल एबोट के सामने अंग्रेजों के प्रति वफादारी की प्रतिज्ञा लेने से मना कर दिया।
- 3 जून को 'हीरा सिंह' के नेतृत्व में क्रांति प्रारम्भ हो गई।
- शाहपुरा (भीलवाड़ा) के राजा 'लक्ष्मण सिंह' ने विद्रोहियों का साथ दिया।
- देवली (टोंक) छावनी की महीदपुर बटालियन भी विद्रोहियों के साथ जुड़ जाती है तथा सभी विद्रोही दिल्ली की ओर चले गये।
- 40 अंग्रेज नीमच छावनी से भाग गये थे। 'रूघाराम' नामक किसान ने इन्हें डूंगला (चित्तौड़गढ़) नामक गाँव में शरण दी।
- मेवाड़ के पॉलिटिकल एजेन्ट (P.A.) शॉवर्स ने इन्हें बचाया तथा उदयपुर लेकर गया।
- मेवाड़ महाराणा स्वरूप सिंह ने इन्हें जगमंदिर महल में शरण दी थी।

महाराणा स्वरूप सिंह ने मेवाड़ में स्वरूपशाही सिक्के चलाये जिन पर **'दोस्ती लन्दन'** लिखवाया था।

3. एरिनपुरा :-

- जोधपुर लिजियन की स्थापना - **1835** ई. में की गई जिसका मुख्यालय एरिनपुरा को बनाया गया।
- 21 अगस्त को पूर्बिया सैनिकों ने आबू में क्रांति कर दी तथा इन्होंने अंग्रेज अधिकारी 'हॉल' के घर पर हमला कर दिया।
- विद्रोही एरिनपुरा आये तथा बाकी साथियों को लेकर दिल्ली की तरफ जाने का प्रयास किया।
- खैरवा (पाली) नामक स्थान पर विद्रोहियों की मुलाकात आउवा के सामन्त कुशाल सिंह चम्पावत से हुई तथा इसने उन्हें अपना नेतृत्व प्रदान किया।

- **बिठौड़ा (पाली) का युद्ध - 8 सितम्बर 1857 ई.**
  - पक्ष - कैप्टन हीथकोट + कुशलराज सिंघवी (जोधपुर) V/S कुशाल सिंह चम्पावत
  - परिणाम - कुशालसिंह चम्पावत जीत गया।
  - इस युद्ध में जोधपुर का ओनाड़ सिंह पंवार लड़ता हुआ मारा गया।

- **चेलावास (पाली) का युद्ध -18 सितम्बर 1857 ई.**
  - पक्ष - जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स (A.G.G) + मैकमेसन (जोधपुर P.A.) **v/s** कुशालसिंह चम्पावत
  - परिणाम - कुशालसिंह की जीत हुई तथा मैकमेसन को मार दिया गया था।
  - इस युद्ध को **'काले-गौरे का युद्ध'** भी कहा जाता है।

- **आउवा का युद्ध -20 जनवरी 1858 ई.**
  - पक्ष - कर्नल होम्स + हंसराज जोशी (जोधपुर) v/s कुशालसिंह चम्पावत
  - परिणाम - अंग्रेजों की जीत हुई। तथा कुशालसिंह सहायता प्राप्त करने के लिए मेवाड़ चला गया।
  - पृथ्वीसिंह लाम्बिया ने युद्ध का नेतृत्व किया।
  - 24 जनवरी को अंग्रेजों ने आउवा पर अधिकार कर लिया तथा सुगाली माता की मूर्ति को उठा कर ले गये।

सुगाली माता :-

- काले संगमरमर की मूर्ति है जिसके 10 सिर तथा 54 हाथ है।
- अंग्रेजों ने इस मूर्ति को अजमेर के राजपूताना म्यूजियम में रखा था, लेकिन बाद में इसे पाली के बांगड़ म्यूजियम में भेज दिया गया था।

- मेवाड़ में सलूम्बर (उदयपुर) के केसरीसिंह तथा कोठारिया (राजसमंद) के जोधसिंह ने कुशालसिंह को शरण दी थी।
- 8 अगस्त 1860 ई. को कुशालसिंह ने नीमच में आत्मसमर्पण कर दिया।

- कुशालसिंह की जाँच के लिए अंग्रेजों ने **'टेलर कमीशन' (Taylor Commission)** का गठन किया।
- कुशालसिंह ने अपना अंतिम समय उदयपुर में बिताया था तथा 1864 ई. में यहीं पर इनकी मृत्यु हो गई थी।
- कई अन्य सामन्तों ने भी कुशालसिंह का समर्थन किया-
  (i) शिवनाथ सिंह आसोप जोधपुर
  (ii) बिशनसिंह गूलर नागौर
  (iii) अजीत सिंह आलणियावास नागौर
- शिवनाथ सिंह (आसोप) के नेतृत्व में विद्राहियों ने दिल्ली की ओर जाने का प्रयास किया था लेकिन नारनौल (हरियाणा) के पास वे अंग्रेज अधिकारी गेराई से हार गये थे।
- बडलू (जोधपुर) नामक स्थान पर शिवनाथ सिंह ने जोधपुर के राजा के खिलाफ 35 दिनों तक संघर्ष किया था।

❖ **आउवा में क्रांति के केन्द्र** :- 1. सुगाली माता मंदिर 2. कामेश्वर मंदिर (गुर्जर प्रतिहार एवं महामारू शैली में बना हुआ)
- **तख्तसिंह** :- क्रांति के दौरान यह जोधपुर (मारवाड़) का राजा था।
- **कानजी** :- यह बिठौड़ा का सामन्त था तथा कुशालसिंह ने इसकी हत्या कर दी थी।

☑ कोटा का जनविद्रोह (15 अक्टूबर 1857 ई.)

- विद्रोही :- 1. वकील जयदयाल (मथुरा) 2. रिसालदार मेहराब खान (करौली) 3. रतनलाल 4. जियालाल
- विद्रोहियों ने पोलिटिकल एजेंट बर्टन तथा कुछ अन्य लोगों को मार दिया। जैसे -
  - फ्रेंक, आर्थर (बर्टन के पुत्र)
  - सेल्डर, सेविल कॉटम (डॉक्टर)
  - देवीलाल (महाराव का प्रतिनिधि)
- महाराव रामसिंह द्वितीय को नजरबंद कर दिया गया।
- मथुरेश जी मंदिर के महंत (पंडित) कन्हैयालाल गौस्वामी ने राजा तथा विद्रोहियों के मध्य एक समझौता करवाया तथा बर्टन की हत्या की जिम्मेदारी राजा पर डाल दी गई। (समझौते में 9 शर्तें थी)
- करौली के राजा मदनपाल ने रामसिंह द्वितीय को मुक्त करवाया।
- 30 मार्च 1858 ई. को अंग्रेज अधिकारी रॉबर्टस ने कोटा को विद्रोहियों से पूर्णतया मुक्त करवाया था।
- अंग्रेजों ने जयदयाल तथा मेहराब खान को फाँसी लगाई।
- रामसिंह द्वितीय को भी दंडित किया गया तथा उसकी तोपों की सलामी 15 से 11 कर दी गई।
- करौली के राजा मदनपाल को सम्मानित किया गया तथा उसे 17 तोपों की सलामी दी गई।

☑ टोंक :-

- टोंक रियासत की स्थापना 1817 ई. में नवाब अमीर खाँ पिण्डारी द्वारा की गई।
- नवाब वजीरूद्दौला अंग्रेजों का समर्थक था।
- विद्रोही - मीर आलम खाँ, अहमदयार खाँ, मोइनुद्दीन (पालोद)
- निम्बाहेड़ा में जनता ने नीमच के विद्रोहियों का स्वागत किया था।
- ताराचन्द पटेल ने अंग्रेज अधिकारी जेक्सन का सामना किया था।
- जेक्सन नीमच के विद्रोहियों का पीछा कर रहा था।
- टोंक के विद्रोह में महिलाओं ने भी भाग लिया था।
  (मोहम्मद मुजीब के नाटक आजमाईश से यह जानकारी प्राप्त होती है।)

- अंग्रेजों ने ताराचन्द पटेल को फाँसी दी थी।

☑ धौलपुर :-

- देवा गुर्जर ने विद्रोह की शुरूआत की।
- कालान्तर में ग्वालियर तथा इंदौर के सैनिकों ने धौलपुर में विद्रोह किया था।
- विद्रोहियों के नेता :- 1. राव रामचन्द्र (इंदौर) 2. हीरालाल (ग्वालियर)
- विद्रोह को दबाने के लिए धौलपुर महाराजा भगवंत सिंह को पटियाला से सेना बुलानी पड़ी थी।

☑ भरतपुर

- गुर्जर तथा मेव समुदाय ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया।
- महाराजा जसवन्त सिंह ने P.A. मॉरीसन को भरतपुर छोड़ने की सलाह दी थी।

☑ अलवर

- महाराजा विनयसिंह अंग्रेजों का समर्थक था। अंग्रेजों की सहायता के लिए इसने आगरा सेना भेजी थी, लेकिन विद्रोहियों ने अछनेरा (आगरा) के पास इस सेना को पराजित कर दिया था।
- दीवान फैजुल्ला खाँ ने विद्रोहियों का साथ दिया।

☑ जयपुर

- P.A. ईडन के कहने पर महाराजा रामसिंह द्वितीय ने विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया था।
- विद्रोही -
  1. सादुल्ला खाँ (निष्कासित)
  2. विलायत खाँ } गिरफ्तार कर लिया गया।
  3. उस्मान खाँ
- अंग्रेजों ने रामसिंह द्वितीय को कोटपूतली परगना तथा **'सितार-ए-हिन्द'** की उपाधि दी।
- मंत्री शिवसिंह सामोद ने रामसिंह द्वितीय को बहादुर शाह जफर से बातचीत की सलाह दी थी।

☑ बीकानेर

- बाडलू (हिसार के पास) नामक स्थान पर महाराजा सरदार सिंह ने विद्रोह को दबाया।
- सरदार सिंह राजस्थान के एकमात्र राजा थे जिन्होंने अपनी रियासत से बाहर जाकर स्वयं अंग्रेजों की सहायता की थी।
- अंग्रेजों ने इनको टिब्बी परगने(हनुमानगढ़) के 41 गाँव दिये।

❖ अमरचन्द बांठिया

- मूल रूप से बीकानेर के निवासी थे।
- क्रांति के दौरान ग्वालियर में झाँसी की रानी की आर्थिक सहायता की।
- इन्हें **'क्रांति का भामाशाह'** कहा जाता है।
- अंग्रेजों ने अमरचन्द बांठिया को फाँसी दी थी।
- यह 1857 की क्रांति के राजस्थान के प्रथम शहीद थे।

❖ तात्या टोपे :-

- क्रांति के दौरान तात्या टोपे दो बार राजस्थान आये थे।
- सर्वप्रथम भीलवाड़ा के मांडलगढ़ आये थे।

- **कुआड़ा का युद्ध - तात्या टोपे v/s रॉबर्टस -**

  परिणाम - अंग्रेज अधिकारी रॉबर्टस ने तात्या टोपे को पराजित कर दिया।
- अंग्रेजों ने इसे रकमगढ़ (राजसमंद) के युद्ध में भी हराया।
- झालावाड़ के राजा पृथ्वीसिंह ने तात्या टोपे के खिलाफ पलायता नामक स्थान पर सेना भेजी।
- गोपाल पलटन को छोड़कर बाकी सेना ने तात्या टोपे के खिलाफ लड़ने से मना कर दिया।
- तात्या टोपे ने झालावाड़ पर अधिकार कर लिया तथा पृथ्वीसिंह को तात्या टोपे को 5 लाख रूपये देने पड़े।
- तात्या टोपे ने बांसवाड़ा रियासत पर भी अधिकार किया था। इस समय बांसवाड़ा का राजा लक्ष्मणसिंह था।
- प्रतापगढ़ में अंग्रेज अधिकारी मेजर रॉक ने इसे हराया। इस समय प्रतापगढ़ का राजा दलपतसिंह था।
- तात्या टोपे के 600 सैनिकों ने बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह के सामने सीकर में आत्मसमर्पण कर दिया था।
- मानसिंह के विश्वासघात के कारण नरवर (मध्यप्रदेश) के जंगलों से इसे गिरफ्तार कर लिया तथा 18 अप्रैल 1859 ई. को फाँसी लगा दी गई। (शिवपुरी में)
- अंग्रेज अधिकारी L.C. शॉवर्स (मेवाड़ का पॉलिटिकल एजेंट) ने तात्या टोपे की फाँसी का विरोध किया।
- जैसलमेर को छोड़कर तात्या टोपे सहायता प्राप्त करने के लिए राजस्थान की सभी रियासतों में गया।
- मेवाड़ में सलूम्बर के केसरीसिंह तथा कोठारिया के जोधसिंह ने तात्या टोपे की सहायता की थी।
- टोंक के नासीर मुहम्मद खाँ ने भी तात्या टोपे की सहायता की थी।
- बीकानेर महाराजा सरदार सिंह ने 10 घुडसवारों की सहायता की।
- सीकर में तात्या टोपे की छत्तरी है।
- सीकर के सामन्त ने तात्या टोपे को शरण दी अतः अंग्रेजों ने उसे फाँसी लगा दी।
- **जीरापुर का युद्ध :-** इस युद्ध में कर्नल बेसेन ने तात्या टोपे को हराया था।
- **दौसा का युद्ध :-** शॉवर्स तथा होनर्स ने तात्या टोपे को हराया।

1857 की क्रांति के कारण :-

- रियासतों की सुरक्षा के लिए अंग्रेजों द्वारा कई नई सेनाओं का गठन किया गया तथा इनका खर्च रियासतों पर डाल दिया गया। जैसे :-

मेरवाड़ा बटालियन	**ब्यावर**	1822 ई.
कोटा कैनटॉन्मन्ट्	**देवली**	1822 ई.
मेवाड़ भील कोर	**खैरवाड़ा**	1841 ई.
जोधपुर लीजियन	**एरिनपुरा**	1835 ई.
शेखावाटी ब्रिगेड	**झुन्झुनूं**	1835 ई.

- नसीराबाद छावनी के सैनिक अधिकारी I.T. प्रिचॉर्ड के अनुसार यह क्रांति एक सैनिक विद्रोह के रूप में प्रारम्भ हुई थी लेकिन बाद में यह स्वतंत्रता संग्राम में बदल गई थी।

❖ 1857 ई. की क्रांति पर आधारित पुस्तकें -

(i)	नाथूराम खड़गावत	-	Roles of Rajasthan in struggle of 1857.
(ii)	I.T. प्रिचॉर्ड	-	Mutinies in Rajputana.

जॉर्ज थॉमस :- आयरलैण्ड का रहने वाला था।

- यह मराठों का भाडायती सेनापति था।
- इसने जयपुर, उदयपुर तथा बीकानेर पर आक्रमण किए थे।
- 1800 ई. में पहली बार इसने राजस्थान के लिए राजपूताना शब्द का प्रयोग किया था।
- विलियम फ्रेंकलिन ने इसकी जीवनी लिखी।
  "Military memorise of George thomas"

कर्नल जेम्स टॉड - स्कॉटलैण्ड का रहने वाला था।

- यह राजस्थान में अंग्रेजों का Political Agent था।
  गुरू - यति ज्ञान चन्द्र
- यह राजस्थान के इतिहास का जनक था।
- इसने सबसे पहले राजस्थान शब्द का प्रयोग किया था।
- **पुस्तकें :-**
  1. Annals and Antiquities of Rajasthan
     or
     Central and western Rajput states of India.
  2. Travels in Western India.

राजस्थान के किसान आन्दोलन

बिजोलिया किसान आन्दोलन

- बिजोलिया मेवाड़ रियासत का प्रथम श्रेणी ठिकाना था।
- राणा सांगा ने अशोक परमार को ऊपरमाल की जागीर दी थी तथा बिजालिया इस जागीर का मुख्यालय था।
- अशोक परमार ने खानवा के युद्ध में भाग लिया था।
- यह राजस्थान का प्रथम संगठित किसान आंदोलन था। यह विश्व का सबसे लम्बा अहिंसक आंदोलन था। (44वर्ष)
- आन्दोलन की समयावधि - 1897-1941 ई. तक।
- **आन्दोलन के कारण-**

  1. 84 प्रकार के कर
  2. अधिक भू-राजस्व
  3. लाटा-कून्ता व्यवस्था
  4. बेगार
  5. **चंवरी कर-** 1903 ई. में कृष्णसिंह ने यह कर लगाया था। यह कर किसानों से उनकी लड़कियों की शादी के समय लिया जाता था।
  6. **तलवार बंधाई कर** - 1906 ई. में पृथ्वी सिंह ने यह कर किसानों पर लगाया था। (यह कर नये सामन्त द्वारा राजा को दिया जाता था।)

A. प्रथम चरण (1897-1914) :-

- धाकड़ जाति के किसानों द्वारा गिरधरपुरा नामक गाँव से आंदोलन प्रारम्भ किया गया।
- साधुसीताराम दास के कहने पर नानजी पटेल तथा ठाकरी पटेल किसानों की समस्याएँ लेकर मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह से मिले। मेवाड़ महाराणा ने हामिद को जाँच अधिकारी नियुक्त किया। लेकिन पहले चरण में किसानों को अधिक सफलता नहीं मिली।
- स्थानीय नेताओं द्वारा यह आंदोलन चलाया गया।
  जैसे- प्रेमचन्द भील, फतेहकरण चारण, ब्रह्मदेव दाधीच।

B. दूसरा चरण (1914-23) :-

- साधुसीताराम दास के कहने पर विजयसिंह पथिक आंदोलन से जुड़ते हैं।
- **ऊपरमाल पंच बोर्ड -**
  - स्थापना - 1917 ई.(हरियाली अमावस्या)
  - संस्थापक - विजयसिंह पथिक
  - स्थान - बैरीसाल ग्राम
  - अध्यक्ष - मन्ना पटेल
- विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल सेवा समिति का भी गठन किया तथा **'ऊपरमाल का डंका'** नामक एक पर्चा प्रकाशित किया।
- विजयसिंह पथिक से प्रेरित होकर माणिक्यलाल वर्मा आंदोलन में शामिल हुए। यह पहले बिजोलिया ठिकाने में कार्य करते थे।
- 1919 ई. में कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में विजयसिंह पथिक के कहने पर बाल गंगाधर तिलक ने बिजोलिया आंदोलन के पक्ष में प्रस्ताव रखा लेकिन गाँधीजी ने इसका विरोध किया।

- 1920 ई. के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में विजयसिंह पथिक ने किसानों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया।
- प्रमुख किसान- कालूजी, गोकुल जी, नन्दलाल जी ।
- इस अधिवेशन में गाँधीजी ने आन्दोलन को अपना नैतिक समर्थन दिया।
- बिजोलिया ठिकाने ने दो जाँच आयोगों का गठन किया -

बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग 1919 ई.	**राजसिंह बेदला आयोग 1920 ई.**
(i) बिन्दुलाल भट्टाचार्य (अध्यक्ष)	(i) राजसिंह बेदला (अध्यक्ष)
(ii) अफजल अली	(ii) तख्तसिंह मेहता
(iii) अमरसिंह	(iii) रमाकान्त मालवीय

- 1922 ई. में अंग्रेजों के हस्तक्षेप के कारण किसानों के साथ एक समझौता किया गया।

अंग्रेज अधिकारी	**किसान नेता**
रार्बट हॉलैंड (A.G.G.)	मोतीराम जी
आगल्वी (A.G.G.का सचिव)	नारायण जी पटेल
विलकिंस (P.A.)	रामनारायण चौधरी
प्रभाष चन्द्र चटर्जी (मेवाड़ के दीवान)	माणिक्य लाल वर्मा
बिहारी लाल	

- इस समझौते में किसानों के 35 कर माफ कर दिये गये थे।
- बिजोलिया के सामन्त ने इस समझौते को स्वीकार नहीं किया।

> नोट :- पुस्तक - 'भगत आन्दोलन' बी. के. वशिष्ठ द्वारा लिखी गई।

C. तृतीय चरण (1923-41 ई.) :-

- ट्रेन्च नामक भूमि बन्दोबस्त अधिकारी ने असिंचित भूमि पर कर बढ़ा दिये ।
- विजयसिंह पथिक के कहने पर किसानों ने अपनी असिंचित भूमि सामन्त को लौटा दी तथा सामन्त ने इस भूमि को जब्त कर लिया।
- 1927 ई. में विजयसिंह पथिक आन्दोलन से अलग हो गये।
- महात्मा गाँधी ने जमनालाल बजाज को आंदोलन के नेतृत्व के लिए भेजा। जमनालाल बजाज ने हरिभाऊ उपाध्याय को नेता नियुक्त किया।
- 1941 ई. में मेवाड़ के प्रधानमंत्री वी. राघवाचारी तथा राजस्व मंत्री मोहन सिंह मेहता ने किसानों के मध्य समझौता करवाया तथा किसानों को उनकी जब्त जमीनें वापस दे दी।
- बाल गंगाधर तिलक ने अपने मराठा समाचार पत्र में आंदोलन के पक्ष में एक लेख लिखा।
- तिलक तथा गाँधीजी ने मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह को पत्र लिखे।
- गणेश शंकर विद्यार्थी अपने प्रताप समाचार पत्र में आंदोलन की खबरें प्रकाशित करते थे। यह एक साप्ताहिक समाचार पत्र था जो कि कानपुर (U.P.) से प्रकाशित होता था।
- विजयसिंह पथिक ने गणेश शंकर विद्यार्थी को चाँदी की राखी भेजी थी।
  - प्रेमचन्द जी का रंगभूमि उपन्यास बिजोलिया आंदोलन पर आधारित है।

- माणिक्यालाल वर्मा - पंछीडा
- विजयसिंह पथिक - पीड़ितों का पंछीडा
- भंवरलाल जी ने भी अपने गीतों के माध्यम से प्रोत्साहित किया।
- उमाजी का खेड़ा - माणिक्यलाल वर्मा यहाँ पर एक विद्यालय चलाया करते थे।

बेंगू किसान आन्दोलन

- बेंगू (चित्तौडगढ़) मेवाड़ रियासत का प्रथम श्रेणी ठिकाना था।
- **कारण :-**
  1. 53 प्रकार के कर।
  2. भू-राजस्व अधिक।
  3. लाटा-कुंता
  4. बेगार प्रथा।
- 1921 ई. में धाकड़ किसानों ने मैनाल के भैरूकुण्ड (भीलवाड़ा) नामक स्थान से आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- नेता - रामनारायण चौधरी।
- 1922 ई. में पथिक जी ने बेंगू के सामन्त अनूप सिंह तथा किसानों के मध्य अजमेर में समझौता करवाया।
- ट्रेन्च ने इसे **'बोल्शेविक समझौता'** कहा। मेवाड़ रियासत ने इस समझौते को स्वीकार नहीं किया तथा अनूप सिंह चुंडावत को गिफ्तार कर लिया और अमृतलाल को बेगूं का प्रशासक बना दिया।
- **गोविन्दपुरा हत्याकांड** (13 जुलाई 1923)
  ट्रेन्च ने किसानों की सभा पर फायरिंग कर दी तथा इसमें दो किसान शहीद हो गये-

  (i) रूपाजी धाकड़
  (ii) कृपाजी धाकड़
  जाँच के लिए ट्रेन्च को अधिकारी बनाया गया।
- 10 सितम्बर 1923 ई. को विजयसिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया गया था।
- आंदोलन के अन्य केन्द्र- चाँदखेड़ी, मंडावरी

मेवाड़ का खालसा क्षेत्र का आंदोलन

- यह आंदोलन जाट किसानों द्वारा किया गया था।
- अप्रैल **1921** ई. में उदयपुर से यह आंदोलन प्रारम्भ हुआ था
- **नेता** :- गोकुल जी
  जातीय पंचायतों के प्रतिनिधि।
  राजस्थान सेवा संघ के प्रतिनिधि।
  राजपूताना मध्य भारत सभा के मंत्री कन्हैयालाल कलंजी।

☑ **पोडोली सम्मेलन : दिसम्बर 1921** ई.
सम्मेलन के निर्णय-

1. आंदोलन को बिजोलिया आंदोलन की तरह चलाया जायेगा।
2. अगला सम्मेलन मातृकुण्डिया में आयोजित किया जायेगा,(मातृकुण्डिया - राजस्थान का हरिद्वार)

- **मातृकुण्डिया सम्मेलन (चित्तौड़गढ़) - 7 मई 1922** ई.

1. इस सम्मेलन में किसानों की अधिकांश मांगें स्वीकार कर ली गयी।
2. किसानों को अफीम की खेती का मुआवजा दे दिया गया।

बूँदी किसान आंदोलन/बरड़ किसान आंदोलन

- यह आन्दोलन गुर्जर किसानों द्वारा चलाया गया था।
- **कारण :-**
  1. 25 प्रकार के कर।
  2. अधिक भू-राजस्व।
  3. लाटा कुंता।
  4. बेगार
  5. युद्ध कर
  6. भ्रष्टाचार।
- 1920 ई. में साधु सीताराम दास ने **डाबी किसान पंचायत** का गठन किया।
- अध्यक्ष-हरला भड़क
- 1922 ई. में आंदोलन प्रारम्भ हुआ।
- किसानों ने राजकीय न्यायालयों का बहिष्कार किया तथा सरकारी चारागाहों पर अधिकार कर लिया।
- धीरे-धीरे अन्य गाँवों में भी किसान पंचायतें स्थापित हुई। (जैसे - बरड़, बरूंगन, गरदड़ा)

☑ **डाबी हत्याकांड-** (2 अप्रैल, 1923)

- पुलिस अधिकारी इकराम हुसैन ने किसानों की सभा पर फायरिंग कर दी तथा इसमें दो किसान शहीद हो गये।
  1. नानक जी भील 2. देवीलाल गुर्जर
- इस समय नानक जी भील **झण्डा गीत** गा रहे थे। इनकी याद में माणिक्यलाल वर्मा ने **अर्जी** नामक गीत लिखा था।
- डाबी हत्याकांड की जाँच के लिए एक आयोग का गठन किया गया।
- सदस्य- पृथ्वी सिंह, राम प्रताप, भैंरोलाल
- आंदोलन के नेता - नयनूराम शर्मा, नारायण सिंह, भंवरलाल सुनार
- 1927 ई. में राजस्थान सेवा संघ के बंद होने के कारण बूँदी किसान आंदोलन समाप्त हो गया था।
- इस आंदोलन में महिलाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया था।
- 1936 ई. में इस आंदोलन का दूसरा चरण प्रारम्भ होता है।
- दूसरे चरण में किसानों द्वारा सामाजिक सुधार कार्य भी किये गये थे।

☑ **हिंडौली सम्मेलन** - (5 अक्टूबर 1936)

- इस सम्मेलन में 500 गुर्जर तथा मीणा किसान शामिल हुये। (हूडेश्वर मंदिर में)
- राज्य द्वारा किसानों की अधिकांश शर्तें मान ली गई थी।

अलवर किसान आंदोलन

A. नीमूचणा किसान आंदोलन	B. मेव किसान आंदोलन
राजपूत किसान क्षेत्रः- बानसूर, थानागाजी	मेव किसान क्षेत्रः- मेवात ▪ रामगढ़ ▪ लक्ष्मणगढ़ ▪ किशनगढ़ ▪ तिजारा

A. नीमूचणा किसान आंदोलन :-

- **कारण :-**

  1. 1924 ई. में महाराजा जयसिंह द्वारा राजपूत तथा ब्राह्मण किसानों पर 40% कर बढ़ा दिये गये।
  2. माफी भूमि को जब्त कर लिया गया। (माफी भूमि - मंदिर के आस-पास छोड़ी गई गोचर भूमि।)
  3. चराई कर
  4. जंगली सुअरों की समस्या
  5. बेगार
- नेता :- माधोसिंह, गंगासिंह, गोविन्द सिंह, अमरसिंह
- अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने आंदोलन को समर्थन दिया।

☑ **नीमूचणा हत्याकांड** (14 मई 1925)

- पुलिस अधिकारी छाजू सिंह ने किसानों की सभा पर फायरिंग की तथा इसमें 156 किसान शहीद हो गये।
- **यंग इंडिया** समाचार पत्र में गाँधीजी ने इसे **दोहरी डायरशाही** बताया था।
- **रियासत** समाचार पत्र ने इस हत्याकांड की तुलना **जलियाँवाला बाग हत्याकांड** से की थी।
- **तरूण** राजस्थान समाचार-पत्र ने इस घटना को सचित्र प्रकाशित किया था। (31 मई 1925 ई. को)
- किसानों ने पुकार नामक पर्चा प्रकाशित किया।

B. मेव/मेवात किसान आन्दोलन :-

- **कारण** :-
  1. अधिक भू-राजस्व।
  2. अधिक आयात-निर्यात कर
  3. चराही कर
  4. जंगली सुअरों की समस्या
  5. सार्वजनिक भूमि की जब्ती।
- अलवर के तिजारा रामगढ़, लक्ष्मणगढ़ तथा किशनगढ़ क्षेत्रों में मेव समुदाय निवास करता है।
- मेव भरतपुर तथा गुरूग्राम(हरियाणा) क्षेत्रों में भी रहते थे।
- **नेताः-**

  1. यासीन खां
  2. सैयद भीक नारंग
  3. मोहम्मद अली
  4. मोहम्मद हादी ।

- दो संगठनों ने इस आन्दोलन को अपना समर्थन दिया-
  1. अंजूमन खादिम उल ईस्लाम।
  2. जमियत तबलीग उल ईस्लाम।
- इन संगठनों के कारण धार्मिक मांगें भी किसान आन्दोलन में शामिल की गई।
- महाराजा जयसिंह ने एक जाँच आयोग का गठन किया।
- जाँच आयोग के सदस्य :- दुर्जन सिंह, गणेशीलाल, गजनाफर अली।
- यासीन खां के कहने पर किसानों ने जाँच आयोग का बहिष्कार किया।
- यह आन्दोलन हिंसक तथा साम्प्रदायिक हो गया था।
- 1933 ई. में तिजारा दंगों के बाद अंग्रेजों ने जयसिंह को हटा दिया।
- अंग्रेजों ने मेवात के लिए एक विशेष अधिकारी की नियुक्ति की थी।

शेखावाटी किसान आन्दोलन

- शेखावाटी क्षेत्र जयपुर रियासत के अन्तर्गत आता था। इस क्षेत्र में कच्छावा वंश की शेखावत शाखा ने शासन किया था, अतः इसे शेखावाटी क्षेत्र कहा जाता है।

शेखावाटी

1. सीकर — अर्द्ध स्वायत ठिकाना
2. झुन्झुनू — पंचपाने (मंडावा, नवलगढ़, डूंडलोद, मलसीसर, बिसाऊ)

- 1922 ई. में सीकर के सामन्त कल्याणसिंह ने किसानों पर कर बढ़ा दिये थे। जाट किसानों ने आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- नेता - (i) राम नारायण चौधरी (ii) हरि ब्रह्मचारी
- सीकर ठिकाने ने राम नारायण चौधरी के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी तथा तरूण राजस्थान समाचार पत्र प्रतिबंधित कर दिया गया।
- ब्रिटेन के **"हाऊस ऑफ कॉमन्स"** में पैथिक लॉरेन्स ने शेखावाटी आंदोलन की चर्चा की।
- लंदन के **"डेली हेरॉल्ड"** समाचार पत्र में आंदोलन की खबरें प्रकाशित हुई।
- ठाकुर देशराज (भरतपुर) ने आंदोलन का मोर्चा संभाला।
- 1931 ई. में जाट क्षेत्रीय महासभा का गठन किया गया।
- प्रथम अधिवेशन- 1933 ई. पलथाना (सीकर)

☑ **जाट प्रजापति महायज्ञ (20 जनवरी 1934 ई.):-**

- आयोजनकर्त्ता - ठाकुर देशराज
- आयोजन - बंसत पंचमी के दिन
- पुरोहित - खेमराज शर्मा
- यज्ञमान - कुंवर हुकुम सिंह
- 15 मार्च 1935 ई. को रतन सिंह तथा सर छोटूराम चौधरी ने किसानों के मध्य समझौता करवा दिया।

- **शेखावाटी आंदोलन के नेता :-**

1. सरदार हरलाल सिंह :-
    - 1901 ई. में हनुमानपुरा (झुन्झुनू) में जन्म हुआ।
    - झुन्झुनूं में विद्यार्थी भवन की स्थापना की था।
    - विद्यार्थी भवन - किसान आंदोलन की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र था।
2. नेतराम सिंह गौरीर
3. पन्ने सिंह
4. मास्टर चन्द्रभान
5. नरोत्तम लाल जोशी
    - इन्होंने शेखावाटी जकात आंदोलन चलाया था।
    - यह राजस्थान विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष थे।

जकात - किसी दूसरे राज्य में अन्न का क्रय-विक्रय करने पर **'कर'(टैक्स)** लगता था। जिसे जकात कहते थे।

☑ **कटराथल सम्मेलन - (25 अप्रैल 1934 ई.)**

- **कारण** - सिहोट के सामन्त मानसिंह ने सोतिया का बास नामक स्थान पर महिलाओं से दुर्व्यवहार किया।
- इस सम्मेलन में 10,000 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया था।
- **अध्यक्ष** - किशोरी देवी (सरदार हरलाल सिंह की पत्नी)
- **मुख्य वक्ता** - उत्तमा देवी (ठाकुर देशराज की पत्नी)

☑ **कूदन हत्याकांड - (25 अप्रैल 1935 ई.) :-**

- धापी देवी महिला के कहने पर किसानों ने कर देने से मना कर दिया।
- कैप्टन वेब द्वारा किसानों पर फायरिंग में चार किसान शहीद हो गये।
  1. चेताराम 2. तुलछाराम 3. टीकूराम 4. आशाराम
- इस हत्याकांड की चर्चा ब्रिटेन के **"हाऊस ऑफ कॉमन्स"** में हुई थी।

☑ **जयसिंहपुरा हत्याकांड (झुन्झुनूं) -(21 जून 1934 ई.)**

- यह राजस्थान का प्रथम किसान हत्याकांड था जिसमें किसानों के हत्यारों को सजा मिली थी।

☑ **अमर सेवा समिति (चिड़ावा)**

- इस संगठन ने शेखावाटी में राजनीतिक चेतना का संचार किया।
- स्थापना - मास्टर प्यारेलाल गुप्ता ने की थी। (**चिड़ावा का गाँधी**)
- मास्टर प्यारेलाल गुप्ता ने गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया था।

भरतपुर किसान आन्दोलन (1931 ई.)

- नेता-लम्बरदार भोज

जनजातीय आंदोलन

भगत आन्दोलन :-

- वागड़ क्षेत्र में भील जनजाति द्वारा यह आंदोलन शुरू किया गया।
- नेता - गोविन्द गुरू, सुरजी भगत

☑ गोविन्द गुरू :-

- जन्म - वेदसा (डूंगरपुर) नामक गाँव में बंजारा (घुमक्कड़) परिवार में हुआ था।
- यह स्वामी दयानन्द सरस्वती से प्रेरित थे। इन्होंने स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग प्रारम्भ करवाया।
- आदिवासियों को हिन्दू धर्म में बनाये रखने के लिए इन्होने **'भगत पंथ'** की स्थापना की।
- इन्होंने भीलों का नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान किया।
- भीलों में आपसी एकता को बढ़ाने के लिए 1883 ई. में इन्होंने **'सम्पसभा'** की स्थापना की। (गोविन्द गुरू, सुरजी भगत)
- इन्होंने गाँवों में कोतवालों की नियुक्तियाँ तथा पंचायतें स्थापित की।
- 1903 ई. में मानगढ़ पहाड़ी (बांसवाड़ा) पर सम्पसभा का प्रथम अधिवेशन आयोजित किया गया।
- 1908 ई. में गोविन्द गुरू ईडर (गुजरात) चले गये थे। तथा भीलों में राजनीतिक चेतना का संचार किया।
- 1910 ई. में पालपट्टा (ईडर) के सामन्त को भीलों के साथ एक समझौता करना पड़ा था। (21 मांगें।)
- 1910 ई. में सम्पसभा ने 33 मांगें सरकार के समक्ष रखी लेकिन सरकार ने इन मांगों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

☑ मानगढ़ हत्याकाण्ड - (17 नवम्बर 1913 ई.)

- सम्पसभा के अधिवेशन पर पुलिस द्वारा फायरिंग की गई तथा इसमें 1500 से अधिक भील शहीद हुए। इसे 'राजस्थान का जलियाँवाला बाग' हत्याकांड कहा जाता है।
- गोविन्द गुरू तथा पूंजा धीरजी को गिरफ्तार कर लिया गया। 7 वर्ष बाद गोविन्द गुरू को रिहा कर दिया गया था। इन्होंने अपना शेष जीवन गुजरात के काम्बिया गाँव में शांतिपूर्वक गुजारा।
- गोविन्द गुरू अंहिसा के समर्थक थे तथा इनका सफेद झण्डा शांति का प्रतीक था।

☑ एकी आंदोलन/भोमट भील आन्दोलन

- गोगुन्दा, झाड़ोल तथा कोटड़ा (उदयपुर) क्षेत्रों में भील तथा गरासिया जनजातियों द्वारा यह आंदोलन किया गया।
- यह आंदोलन मातृकुंडिया (चित्तौड़गढ़) नामक स्थान से प्रारम्भ हुआ। गोकुल जी जाट ने भी इनका समर्थन किया।
- नेता - मोतीलाल तेजावत
    - जन्म - ओसवाल परिवार में कोल्यारी नामक गाँव में हुआ था।
    - यह झाड़ोल ठिकाने में कार्य करते थे लेकिन बाद में आंदोलन में शामिल हो गये।
    - मोतीलाल तेजावत ने 21 मांगे सरकार के सामने रखी। इन माँगों को **'मेवाड़ की पुकार'** कहा जाता है।
    - सरकार ने इन माँगों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

☑ नीमड़ा हत्याकांड (6 मार्च 1922 ई.) :-

- भीलों की एक सभा पर पुलिस द्वारा फायरिंग की गई तथा इसमें 1200 से अधिक भील शहीद हो गये।
- मोतीलाल तेजावत फरार हो गये।
- 1929 ई. में गाँधीजी के कहने पर इन्होंनें ईडर (गुजरात) में आत्मसमर्पण कर दिया।
- 1936 ई. में मणिलाल कोठारी (गाँधीजी के P.A.) के हस्तक्षेप से **'महाइन्द्राज सभा'** ने मोतीलाल तेजावत को रिहा कर दिया था।
- इन्होंने अपना शेष जीवन गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम में बिताया। इन्हें **'आदिवासियों का मसीहा'** कहा जाता है। आदिवासी इन्हें **'बावजी'** कहते थे।

महाइन्द्राज सभा-

- पूर्व में मेवाड़ का उच्चतम न्यायालय था।
- स्थापना - 1880 ई. में महाराणा सज्जन सिंह ने की थी
- अन्य नाम- इजलास खास

☑ सिरोही का एकी आंदोलन

- भील व गरासिया जनजाति द्वारा आन्दोलन चलाया गया।
- नेता- मोतीलाल तेजावत
- सिरोही के आदिवासी मोतीलाल तेजावत को **'मेवाड़ का गाँधी'** कहते थे।
- ईडर प्रजामण्डल ने आंदोलन को समर्थन दिया। सिरोही के दीवान रमाकांत मालवीय ने किसानों को समझाने के लिए विजय सिंह पथिक को बुलाया।।
- विजय सिंह पथिक ने किसानों तथा मोतीलाल तेजावत से मुलाकात की।

हत्याकांड

1. **सियावा** (12 अप्रैल 1922 ई.)
2. **भूला/बालोलिया** (5/6 मई 1922 ई.)

☑ मीणा आन्दोलन

- प्रमुख नेता :-
  1. छोटूराम
  2. जवाहर राम
  3. महादेव
- 1924 ई. में आपराधिक जनजाति अधिनियम पारित किया गया तथा इसमें मीणा जनजाति को शामिल कर लिया गया।
- 1930 ई. में जरायम पेशा अधिनियम पारित किया गया। इसके तहत प्रत्येक मीणा महिला-पुरूष को थाने में हाजरी लगाने को अनिवार्य किया गया।
- अतः इसके खिलाफ मीणा जनजाति ने आंदोलन चलाया।
- 1933 ई. में मीणा क्षेत्रीय महासभा का गठन किया गया।

☑ नीम का थाना (सीकर) सम्मेलन -(1944 ई.)

- संत मुनि मगन सागर जी ने इसका आयोजन किया।
- इन्होंने मीन पुराण नामक पुस्तक लिखी तथा इसमें मीणा जनजाति का गौरवशाली इतिहास बताया गया।

☑ मीणा सुधार समिति -(1944 ई.)

- **सदस्य –**
  1. लक्ष्मीनारायण झरवाल
  2. बंशीधर शर्मा
  3. राजेन्द्र कुमार अजेय

☑ बागावास सम्मेलन (जयपुर) -(28 अक्टूबर 1946 ई.)

- इस सम्मेलन में 26 हजार चौकीदार मीणाओं ने अपने पदों से इस्तीफे दे दिये तथा इसे **'मुक्ति दिवस'** के रूप में मनाया।
- 1952 ई. में जरायम पेशा अधिनियम समाप्त कर दिया गया।

प्रजामण्डल आन्दोलन

☑ अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्- बॉम्बे

- स्थापना – 1927 ई. में।
- अध्यक्ष - दीवान रामचन्द्र राव
- उपाध्यक्ष - विजय सिंह पथिक
- राजपूताना एवं मध्य भारत इकाई के सचिव - रामनारायण चौधरी।

- **राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद् -**
    - स्थापना - 1928 ई. में।
    - प्रथम अधिवेशन - अजमेर (1931 ई.)
    - अध्यक्ष - रामनारायण चौधरी

> नोट -1938 ई. के हरिपुरा (गुजरात) अधिवेशन में कांग्रेस ने प्रजामंडल आंदोलन को समर्थन दिया।
> अध्यक्षता - सुभाष चन्द्र बोस

1931	1934	1936	1938	1939	1942	1943	1944	1945	1946
जयपुर	मारवाड़	बीकानेर	मेवाड़	कोटा	कुशलगढ़	बाँसवाड़ा	डूंगरपुर	जैसलमेर	झालावाड़
बूँदी	हाड़ौती	धौलपुर	शाहपुरा	किशनगढ़				प्रतापगढ़	
			अलवर	सिरोही					
			भतरपुर						
			करौली						

1. जयपुर प्रजामण्डल :-

- संस्थापक - कर्पूर चन्द पाटनी
- 1936 ई. में जमनालाल बजाज ने प्रजामण्डल का पुनर्गठन किया।
- अध्यक्ष-चिरंजीलाल मिश्र
- मंत्री - हीरालाल शास्त्री
- प्रजामण्डल ने शेखावाटी किसान आंदोलन को समर्थन दिया।
- प्रथम अधिवेशन - 1938 ई.
    - स्थान- नथमल का कटला (जयपुर)
    - अध्यक्ष-जमनालाल बजाज
- 10 मई 1938 ई. को कस्तूरबा गाँधी ने महिलाओं की एक सभा को संबोधित किया।

☑ जेंटलमेन एग्रीमेंट (17 सितम्बर 1942 ई.)

- जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल तथा प्रजामण्डल के अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री के मध्य।
- इस समझौते के तहत प्रजामण्डल ने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लिया।

☑ आजाद मोर्चा :-

- प्रजामण्डल के अंसतुष्ट कार्यकत्ताओं ने बाबा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में इसका गठन किया था, तथा भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया था।
- आजाद मोर्चा के अन्य सदस्य - 1. रामकरण जोशी 2. दौलतमल भंडारी 3. गुलाबचन्द कासलीवाल
- 1945 ई. में नेहरू जी के कहने पर आजाद मोर्चा का प्रजामण्डल में विलय कर दिया गया।
- **देवीशंकर तिवाड़ी:-**
  - 1943 ई. में जमनालाल बजाज की याद में **'लोकवाणी'** नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
  - इन्हें प्रजामण्डल का अध्यक्ष भी बनाया गया था।
  - 1946 ई. में इन्हें जयपुर रियासत में गैर सरकारी मंत्री बनाया गया था। (राजस्थान में पहली बार)
  - कालान्तर में यह RPSC के अध्यक्ष बने। (सबसे लम्बा कार्यकाल)

2. बूँदी प्रजामण्डल :-

1. संस्थापक-
2. नित्यानन्द
3. कांतिलाल
4. **ऋषिदत्त मेहता -**
   - समाचार पत्र - राजस्थान (साप्ताहिक)
   - 1923 ई. में यह समाचार पत्र ब्यावर से प्रकाशित होता था। इसमें हाड़ौती क्षेत्र की खबरें प्रकाशित होती थी।

3. मारवाड़ प्रजामण्डल

- 1918 ई. में 'मरूधर हितकारिणी सभा' की स्थापना चांदमल सुराणा द्वारा की गई।
- पुनर्गठन - 1923 ई. में जयनारायण व्यास द्वारा इस सभा का नाम बदलकर 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' किया गया।
- मारवाड़ सेवा संघ (1920 ई.)- जय नारायण व्यास द्वारा की गई।
- **तौल आंदोलन** - (1 सेर में 100 तौले के स्थान पर 80 तौले कर दिये थे।)

☑ मारवाड़ देशी राज्य लोक परिषद् (1929 ई.)-

- स्थापना - जयनारायण व्यास द्वारा।
- यह अपने प्रथम अधिवेशन का आयोजन जोधपुर में चाहते थे।
- लेकिन रियासत ने नेताओं को गिरफ्तार कर लिया तथा नागौर की एक विशेष अदालत में इनके खिलाफ मुकदमा चलाया गया था। (1- जयनारायण व्यास 2. आनंदराज सुराणा 3. भंवरलाल सर्राफ)
- प्रथम अधिवेशन - पुष्कर (1931 ई. में)
- अध्यक्ष- चांदकरण शारदा (अजमेर)
- इस अधिवेशन में मणिलाल कोठारी, काका कालेरकर तथा कस्तुरबा गाँधी ने भाग लिया।

- **मारवाड़ यूथ लीग** - (10 मई 1931 ई.)-
  - स्थापना - जयनारायण व्यास द्वारा।
  - अध्यक्ष- भीमराज पुरोहित
  - मंत्री- मानमल जैन
  - इस संगठन का नाम बदलकर **'बाल भारत सभा'** कर दिया गया था। मारवाड़ हितकारिणी सभा का इस संगठन में विलय कर दिया था।
- 1932 ई. में छगनराज चौपासनिवाला ने जोधपुर में भारतीय झंडा फहराया।
- 1934 ई. में मारवाड़ प्रजामण्डल का गठन किया गया तथा इसका अध्यक्ष भंवरलाल सर्राफ को बनाया गया।
- 1936 **कृष्णा दिवस (बॉम्बे), शिक्षा दिवस (जोधपुर)**
- 1936 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद का अधिवेशन कराची में आयोजित किया गया।
- जयनारायण व्यास को इसमें महामंत्री बनाया गया।
- अतः जोधपुर रियासत ने जयनारायण व्यास के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी।
- बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने जोधपुर के P.M. डोनाल्ड फील्ड को पत्र लिखा तथा पाबंदी हटवाई।
- भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान व्यास जी को सिवाणा किले में नजरबंद कर दिया गया था तथा प्रजामण्डल के अन्य नेताओं को जालौर किले में नजरबंद किया गया था।
- **चंडावल घटना (पाली)** - 28 मार्च 1942
  चंडावल के सामंत ने किसानों की सभा पर लाठीचार्ज करवा दिया था।
- **डाबड़ा हत्याकाण्ड (नागौर)** - 13 मार्च 1947 ई.
- डीडवाना के सामंत ने किसानों की सभा पर लाठी चार्ज करवा दिया था तथा इसमें कई किसान शहीद हो गये।
  जैसे- मोतीराम जी व चुन्नीलाल जी
- इस घटना में प्रजामण्डल के बड़े नेता मथुरादास माथुर घायल हो गये थे।

1938 ई. में सुभाष चन्द्र बोस तथा विजय लक्ष्मी पण्डित ने जोधपुर की यात्रा की थी।

जयनारायण व्यास

पुस्तकें

1. मारवाड़ की अवस्था
2. पोपाबाई की पोल
3. मार्च से संघर्ष क्यों?

समाचार पत्र

1. Peep - अंग्रेजी में — दिल्ली से प्रकाशित
2. अखण्ड भारत - हिन्दी — बॉम्बे
3. तरूण राजस्थान - हिन्दी — ब्यावर

4. अंगीबाण - राजस्थानी ब्यावर
↓
(राजस्थानी भाषा का पहला राजनीतिक समाचार पत्र)

4. हाड़ौती प्रजामण्डल :-

- संस्थापक - नयनूराम शर्मा
  - हाजी फैज मोहम्मद
- प्रजामण्डल ने बेगार विरोधी आंदोलन चलाया था।

5. बीकानेर प्रजामण्डल :-

☑ **सर्वहितकारिणी सभा** - (चुरू)

- 1907 ई.- कन्हैयालाल ढुँढ तथा स्वामी गोपालदास द्वारा।
- इसे **'चुरू की कांग्रेस'** भी कहा जाता है।
- इस सभा द्वारा दो विद्यालयों की स्थापना की गई थी।

कबीर पाठशाला (दलितों हेतु) 2. पुत्री पाठशाला (लड़कियों हेतु)

- 26 जनवरी, 1930 ई. को स्वामी गोपालदास तथा चन्दनमल बहड़ ने चुरू के धर्मस्तूप पर भारतीय झण्डा फहरा दिया
- 1931 ई.में दूसरे गोलमेज सम्मेलन के दौरान बीकानेर महाराजा गंगासिंह के खिलाफ **'बीकानेर दिग्दर्शन'** नामक पर्चे बांटे गये थे।

☑ **बीकानेर षड्यंत्र मुकदमा - (1932 ई.)**

- बीकानेर दिग्दर्शन पर्चे के कारण कई राजनीतिक कार्यकताओं को गिरफ्तार किया गया था।
  जैसे- स्वामी गोपालदास, चंदनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ, खूबराम सर्राफ

- 1936 ई. में कलकत्ता में बीकानेर प्रजामण्डल स्थापना की गई।
  संस्थापक -
  1. वैद्य मघाराम
  2. मुक्ता प्रसाद
  3. लक्ष्मी देवी आचाय (महिला)
  4. रघुवर दयाल गोयल
- 1942 ई. 'बीकानेर देशी राज्य लोक परिषद्' का गठन रघुवर दयाल गोयल द्वारा किया गया था।
- 1 जुलाई 1946 ई. को पुलिस ने प्रजामण्डल के जुलुस पर फायरिंग कर दी। रायसिंह नगर, (श्री गंगानगर की घटना) इस घटना में **बीरबल** नामक एक युवक शहीद हो गया।
- 17 जुलाई को बीकानेर रियासत में **बीरबल दिवस** मनाया गया था।
- इंदिरा गाँधी नहर की जैसलमेर शाखा को बीरबल शाखा कहा जाता है।

☑ **बीकानेर के किसान आंदोलन-**

1. उदरासर - 1937 ई. - जीवणराम

2. महाजन - 1938 -
3. दुधवा खारा - 1944 - हनुमान सिंह आर्य
4. कांगड़ा - 1946 - मेघसिंह आर्य
5. गंग नहर - 1930-31 - दरबार सिंह, करतार सिंह (जमींदारा संघ।)

6. धौलपुर प्रजामण्डल :-

- आर्य समाज के नेता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने धौलपुर में राजनीतिक चेतना का संचार किया था।
- 1910 - आचार सुधारिणी सभा - ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु, यमुना प्रसाद
- 1934 - नागरी प्रचारिणी सभा - ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु, इन्दुलाल
- 1936 - प्रजामण्डल - ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु, कृष्णदत्त पालिवाल
- **तसीमो कांड - (11 अप्रैल 1947 ई.)**
- प्रजामण्डल की सभा पर पुलिस द्वारा फायरिंग की गई तथा इसमें दो कार्यकर्त्ता शहीद हो गये।- पंचम सिंह, छत्तर सिंह

7. मेवाड़ प्रजामण्डल :-

- स्थापना - 24 अप्रैल 1938 ई. (हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन(1938) के ठीक बाद की गई थी।)
- संस्थापक - बलवन्त सिंह मेहता
- अध्यक्ष - बलवन्त सिंह मेहता
- उपाध्यक्ष - भूरेलाल बया
- महामंत्री - माणिक्य लाल वर्मा
- प्रजामण्डल की स्थापना बलवन्त सिंह मेहता के घर **(साहित्य कुटीर)** पर की गई थी।
- मेवाड़ रियासत ने प्रजामण्डल पर रोक लगा दी।
- वर्मा जी ने अजमेर से प्रजामण्डल चलाया तथा वर्मा जी ने **'मेवाड़ का वर्तमान शासन'** नामक पुस्तक लिखी, इसमें मेवाड़ के शासन की आलोचना की गई थी।
- प्रजामण्डल ने सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया। प्रथम सत्याग्रही - रमेश चन्द्र व्यास (भीलवाड़ा)
- भूरेलाल बयां को सराड़ा किले (उदयपुर) में नजरबंद कर दिया गया। सराड़ा किले को **'मेवाड़ का काला पानी'** कहा जाता है।
- वर्मा जी को भी गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधीजी ने अपने हरिजन समाचार पत्र में इसकी आलोचना की थी।

प्रथम अधिवेशन- 1941 ई.

- अध्यक्ष - माणिक्य लाल वर्मा
- जे.बी.कृपलानी ने अधिवेशन का उद्घाटन किया।
- विजय लक्ष्मी पंडित ने खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

- भारत छोड़ों आन्दोलन के दौरान नारायणी देवी वर्मा तथा भगवती देवी विश्नोई को जेल भेजा गया था।
- 1946 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का 7वाँ अधिवेशन उदयपुर के सलेटिया मैदान में आयोजित किया गया।
- अध्यक्ष-पंडित जवाहर लाल नेहरू
- इस अधिवेशन में शेख अब्दुल्ला ने भी भाग लिया था।
- **प्रजामण्डल के अन्य केन्द्र**

- मेवाड में - 1. भीलवाड़ा 2. नाथद्वारा (राजसमंद)
- मेवाड़ से बाहर - बॉम्बे, नागपुर, जलगाँव, आकोला (महाराष्ट्र)

4. शाहपुरा प्रजामण्डल :-

- माणिक्यलाल वर्मा की प्रेरणा से प्रजामण्डल की स्थापना हुई थी।
- संस्थापक - लादूराम व्यास, रमेश चन्द्र ओझा
- **सबसे पहले उत्तरदायी शासन शाहपुरा रियासत में स्थापित किया गया।**
- महाराजा सुदर्शन देव ने गोकुल लाल असावा को प्रधानमंत्री बना दिया था।

8. अलवर प्रजामण्डल :-

- संस्थापक - हरिनारायण शर्मा
- प्रजामण्डल ने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लिया था।
- प्रथम अधिवेशन - 1944 ई.
- अध्यक्ष :- भवानी शंकर शर्मा
- हरिशंकर शर्मा के अन्य संगठन :- 1. आदिवासी संघ 2. वाल्मीकि संघ 3. अस्पृश्यता निवारण संघ

5. भरतपुर प्रजामण्डल :-

- संस्थापक -
  - जुगल किशोर चतुर्वेदी
  - मास्टर आदित्येन्द्र
  - गोपीलाल यादव (अध्यक्ष)
  - किशनलाल जोशी (शेखावाटी किसान आंदोलन में भाग लिया)
- प्रजामण्डल की स्थापना रेवाड़ी (हरियाणा) में की गई।
- प्रजामण्डल का समाचार पत्र - **'वैभव'**

दिवस

जापान दिवस (16-17 अगस्त 1945)	इंडोनेशिया दिवस (28 अक्टूबर 1946)
महाराजा बृजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में	बसंत कुमार शर्मा के नेतृत्व में

9. करौली प्रजामण्डल :-

- संस्थापक :-
  - त्रिलोक चन्द माथुर
  - चिरंजीलाल शर्मा
  - कुंवर मदन सिंह- (1927 ई. में करौली में किसान आंदोलन का नेतृत्व किया था।)

10. कोटा प्रजामण्डल :-

- संस्थापक :-
  - नयनूराम शर्मा
  - अभिन्न हरि
  - तनसुख लाल मित्तल

- **प्रथम अधिवेशन** – 1939 ई. मांगरोल (बारां)
- अध्यक्ष – नयनूराम शर्मा
- **द्वितीय अधिवेशन** – 1940 ई. (कोटा)
  - अध्यक्ष – अभिन्न हरि
  - इस अधिवेशन में विजय सिंह पथिक ने भी भाग लिया था।
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मोतीलाल जैन के नेतृत्व में प्रजामण्डल के कार्यकत्ताओं ने कोटा के नगर प्रशासन पर अधिकार कर लिया था।
- कॉलेज की छात्राओं ने रामपुरा पुलिस थाने पर अधिकार कर लिया था।

11. किशनगढ़ प्रजामण्डल :-

- संस्थापक – 1. कांतिचंद चौथाणी 2. जमान शाह

12. सिरोही प्रजामण्डल :-

- संस्थापक- 1. गोकुल भाई भट्ट (**राजस्थान का गाँधी**) 2. वृद्धि शंकर त्रिवेदी
- प्रजामण्डल की स्थापना- बॉम्बे

13. कुशलगढ़ प्रजामण्डल :-

- संस्थापक – भंवरलाल निगम

14. बांसवाड़ा प्रजामण्डल :-

- संस्थापक – 1. भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी
  समाचार पत्र- संग्राम (बॉम्बे से प्रकाशित)
  1. मणिशंकर नागर
  2. धूलजी भाई भावसार

नोट – विजया बहिन भावसार (धूलजी भाई भावसार की पत्नी) ने **महिला मण्डल** का गठन किया।

15. डूंगरपुर प्रजामण्डल :-

- संस्थापक – 1. भोगीलाल पांड्या (**वागड़ का गाँधी**)
  2. हरिदेव जोशी
  3. गौरीशंकर उपाध्याय
  समाचार पत्र- 'सेवक'
- स्थापना – 1 अगस्त, 1944 ई. (तिलक जी की पुण्यतिथि के अवसर पर)
- प्रजामण्डल ने शिक्षा क्षेत्र में जागृति हेतु **'प्रयाण सभाओं'** का आयोजन किया था।

☑ **रास्तापाल घटना** – (19 जून 1947 ई.)

- इस घटना में अध्यापक नानाभाई तथा भील बालिका कालीबाई शहीद हो गये थे। इन दोनों की मूर्तियाँ गेबसागर तालाब (डूंगरपुर) के पास स्थित है।

- बालिका शिक्षा के क्षेत्र में कालीबाई भील पुरस्कार दिया जाता है।
- इस घटना में एक अन्य अध्यापक सेंगा भाई भी घायल हुए।

☑ **पूनावाड़ा घटना** – मई 1947 ई.

- इस घटना में अध्यापक शिवराम भील घायल हो गये थे।

16. जैसलमेर प्रजामण्डल :-

- संस्थापक – मीठालाल व्यास
- प्रजामण्डल की स्थापना – जोधपुर
- रघुनाथ सिंह ने **'माहेश्वरी नवयुवक मण्डल'** का गठन किया था।

17. प्रतापगढ़ प्रजामण्डल

- संस्थापक –
  1. अमृतलाल पायक
  2. चुन्नीलाल प्रभाकर
  3. ठक्कर बापा (मीणा आंदोलन के समय ठक्कर बापा ने जयपुर के PM मिर्जा स्माइल को पत्र लिखा था।)

18. झालावाड़ प्रजामण्डल :-

- संस्थापक –
  1. मांगीलाल भव्य
  2. मकबुल आलम
  3. कन्हैया लाल मित्तल
- राजराणा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन स्थापित किया गया था।

राजस्थान का एकीकरण

- आजादी के समय राजस्थान में 19 रियासतें, 3 ठिकानें तथा 1 केन्द्रशासित प्रदेश था।
- 3 ठिकाने :- नीमराणा (अलवर), लावा (टोंक), कुशलगढ़ (बांसवाड़ा)
- केन्द्रशासित प्रदेश - अजमेर-मेरवाड़ा
- राजस्थान मालवा तथा सौराष्ट्र की रियासतों को मिलाकर मेवाड़ महाराणा भुपाल सिंह **राजस्थान युनियन** बनाना चाहते थे।
- इसके लिए उन्होंने उदयपुर में दो सम्मेलन आयोजित किये थे (1946-1947)
- कन्हैयालाल माणिक्यमल मुंशी महाराणा भुपाल सिंह के संवैधानिक सलाहकार थे।
- 5 जुलाई 1947 ई. को **रियासती सचिवालय** की स्थापना की गई थी।
    - अध्यक्ष - सरदार वल्लभ भाई पटेल
    - सचिव - वी.पी. मेनन
- 18 जुलाई 1947 ई. को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित किया गया था। इस अधिनियम की धारा-8 के अनुसार देशी रियासतों की अंग्रेजों के साथ की गई संधियाँ समाप्त कर दी गई।
- रियासती सचिवालय ने घोषणा की, कि वे रियासतें जिनकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक तथा आय 1 करोड़ से अधिक हो स्वतंत्र रह सकती है।
- राजस्थान में ऐसी चार रियासतें थी।
    1. मेवाड़
    2. जयपुर
    3. जोधपुर
    4. बीकानेर
- 7 अगस्त 1947 ई. को बीकानेर महाराजा सार्दुल सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। (राजस्थान में सर्वप्रथम)
- 14 अगस्त 1947 ई. को धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किये। (सबसे अंतिम)
- विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते समय बांसवाड़ा महारावल चन्द्रवीर सिंह ने कहा था, कि - **"मैं अपने डेथ वॉरंट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।"**

☑ **प्रथम चरण :- मत्स्य संघ** (नामकरण - K.M. मुंशी द्वारा।)

धौलपुर	-	उदयभान सिंह	- राजप्रमुख
करौली	-	गणेशपाल	- उपराजप्रमुख
अलवर	-	राजधानी	
भरतपुर	-	उद्घाटन	- 18 मार्च 1948 में N.V. गॉडगिल ने किया।
नीमराणा	-	ठिकाना	

- प्रधानमंत्री - शोभाराम कुमावत
- उप प्रधानमंत्री - जुगल किशोर चतुर्वेदी
- अन्य मंत्री - गोपीलाल यादव, चिरंजीलाल शर्मा, डॉ. मंगल सिंह, मास्टर भोलानाथ
- जनसंख्या - 18 लाख
- आय - 1.84 करोड़
- अलवर तथा भरतपुर रियासतों पर भारत सरकार ने पहले ही नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

☑ द्वितीय चरण - राजस्थान संघ

- कोटा - भीमसिंह - राजप्रमुख - राजधानी - (उद्घाटन 25 मार्च, 1948 एन.वी.गॉडगिल)
- बूँदी - बहादुर सिंह - वरिष्ठ उपराजप्रमुख
- झालावाड़
- डूंगरपुर - लक्ष्मण सिंह - कनिष्ठ उपराजप्रमुख
- बांसवाड़ा
- प्रतापगढ़
- टोंक
- किशनगढ़
- शाहपुरा
- कुशलगढ़ (ठिकाना)
- प्रधानमंत्री - गोकुल लाल असावा
- जनसंख्या - 23.5 लाख
- आय - 1.90 करोड़
  - शाहपुरा तथा किशनगढ़ रियासतों ने अजमेर-मेरवाड़ा में विलय का विरोध किया था।

☑ तृतीय चरण - संयुक्त राजस्थान (राजस्थान संघ + मेवाड़)

- उद्घाटन - उदयपुर में 18 अप्रैल 1948 ई. को पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा ।
- राजधानी - उदयपुर
- राजप्रमुख - महाराणा भूपाल सिंह (मेवाड़)
- वरिष्ठ उपराजप्रमुख - भीमसिंह (कोटा)
- कनिष्ठ उपराजप्रमुख - 1. बहादुर सिंह (बूँदी) 2. लक्ष्मण सिंह (डूंगरपुर)
- प्रधानमंत्री - माणिक्य लाल वर्मा
- उप प्रधानमंत्री - गोकुल लाल असावा
- अन्य मंत्री -

भूरेलाल बयां	भोगीलाल पांड्या
प्रेम नारायण माथुर	अभिन्न हरि
मोहन लाल सुखाड़िया	बृज सुन्दर शर्मा

- मंत्रिमण्डल में सामन्तों की भागीदारी को लेकर गतिरोध उत्पन्न हो गया था।
- मेवाड़ महाराणा भूपाल सिंह ने 20 लाख रूपये प्रीवीपर्स (Privy purse) की मांग की थी।

प्रीवीपर्स	राजप्रमुख का वेतन	धार्मिक अनुदान
10 लाख	5 लाख	5 लाख

- राममनोहर लोहिया ने राजस्थान आंदोलन समिति का गठन किया तथा शेष रियासतों के जल्दी विलय की मांग की।

☑ चतुर्थ चरण – वृहद राजस्थान (संयुक्त राजस्थान + जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर)

- उद्घाटन – चैत्र शुक्ल एकम् (विक्रमी संवत् 2006)
  (30 मार्च, 1949 ई.) राजस्थान दिवस
- उद्घाटन स्थल – जयपुर में, सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया था।
- महाराज प्रमुख – महाराणा भूपाल सिंह मेवाड़
- राजप्रमुख – सवाई मानसिंह द्वितीय, जयपुर
- वरिष्ठ उप राजप्रमुख – 1. भीमसिंह (कोटा) 2. हनवन्त सिंह (जोधपुर)
- कनिष्ठ उपराजप्रमुख – 1. बहादुर सिंह (बूँदी) 2. लक्ष्मण सिंह (डूंगरपुर)
- प्रधानमंत्री- हीरालाल शास्त्री
- अन्य मंत्री –

भूरेलाल बयां	राव राजा हनवन्त सिंह
प्रेम नारायण माथुर	सिद्धराज ढढ्ढा
फूलचन्द बाफना	रघुवर दयाल गोयल
नृसिंह कच्छावा	वेदपाल त्यागी

- प्रीवीपर्स :-
  - जयपुर- 18 लाख
  - जोधपुर- 17.5 लाख
  - बीकानेर- 17 लाख

नोट :-

1- जयपुर तथा जोधपुर में राजधानी को लेकर विवाद था। अतः समाधान हेतु बी. आर. पटेल समिति का गठन किया गया।

समिति के सदस्य :- 1. बी. आर. पटेल (अध्यक्ष) 2. टी.सी. पुरी 3. एस.पी. सिन्हा

इस समिति की सिफारिश के आधार पर **जयपुर को राजधानी** बनाया गया तथा **जोधपुर को उच्च न्यायालय** दे दिया गया।

2- 19 जुलाई 1948 ई. को लावा ठिकाना जयपुर रियासत में मिला दिया गया था।

☑ पंचम चरण – संयुक्त वृहत्तर राजस्थान (मत्स्य संघ + वृहत राजस्थान)

- 15 मई 1949 ई. को मत्स्य संघ का वृहत राजस्थान में विलय किया गया था।
- मत्स्य संघ के विलय के लिए **शंकरराव देव समिति** का गठन किया गया था।
  समिति के अन्य सदस्य – R.K. सिद्धवा, प्रभु दयाल
- शोभाराम कुमावत को हीरालाल शास्त्री मंत्री मण्डल में शामिल कर लिया गया।

☑ षष्ठम चरण :-

- सिरोही रियासत का विभाजन किया गया।
- आबू व देलवाड़ा सहित 89 गाँव बॉम्बे में मिलाये गये तथा शेष सिरोही राजस्थान को दे दिया गया जिसमें गोकुल भाई भट्ट का गाँव हाथल भी शामिल था।

- इस अनुचित विलय पर वल्लभ भाई पटेल का जवाब था कि **"राजस्थान वालों को गोकुल भाई भट्ट चाहिये था तथा वह हमने दे दिया।"**
- यह प्रक्रिया 26 जनवरी 1950 ई. को सम्पन्न हुई तथा इसी दिन हमारे प्रदेश का नाम **'राजस्थान'** कर दिया गया था।
- **मनोनीत मुख्यमंत्री** - हीरालाल शास्त्री, सी.एस. वेंकटाचारी (ICS), जय नारायण व्यास

  निर्वाचित मुख्यमंत्री -

  टीकाराम पालीवाल

  जयनारायण व्यास (उपमुख्यमंत्री - टीकाराम पालीवाल)

  मोहन लाल सुखाड़िया (सबसे युवा, सबसे लम्बे समय तक 17 वर्ष)

  बरकतुल्ला खां।

☑ **सातवां चरण** :- राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के आधार पर।

1. अजमेर-मेरवाड़ा राजस्थान में मिलाया गया।
2. आबू-देलवाड़ा को राजस्थान में मिला दिया गया।
3. मध्यप्रदेश का सुनेल टप्पा राजस्थान को दिया गया।
4. राजस्थान का सिरोंज मध्यप्रदेश को दे दिया गया।

- 1 नवम्बर 1956 ई. को राजस्थान का एकीकरण पूरा हुआ। इस समय मोहनलाल सुखाड़िया राजस्थान के मुख्यमंत्री थे।
- आबू-देलवाड़ा के विलय के लिए मुनि जिन विजय सूरी समिति का गठन किया गया था। इतिहासकार दशरथ शर्मा भी इस समिति के सदस्य थे।
- पहले अजमेर-मेरवाड़ा एक केन्द्रशासित प्रदेश था। यहाँ 30 सदस्यों की धारा सभा होती थी। हरिभाऊ उपाध्याय अजमेर-मेरवाड़ा के मुख्यमंत्री थे।
- हरिभाऊ उपाध्याय ने अजमेर-मेरवाड़ा के विलय का विरोध किया था।
- अजमेर राजस्थान का 26 वाँ जिला बनाया गया था।
- जयपुर तथा अजमेर में राजधानी को लेकर विवाद था। अतः इसके समाधान के लिए **सत्यनारायण राव समिति** का गठन किया गया।
  - समिति के सदस्य- सत्यनारायण राव, बी.के. गुहा, वी. विश्वनाथन
  - इन समिति की सिफारिश के आधार पर-

    1. राजधानी - जयपुर
    2. राजस्व विभाग - अजमेर
    3. शिक्षा विभाग - बीकानेर
    4. कृषि विभाग - भरतपुर
    5. वन एवं सहकारी विभाग - कोटा
    6. खनन विभाग - उदयपुर

- 7 वें संविधान संशोधन 1956 के द्वारा राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया।
- सरदार गुरूमुख निहाल सिंह राजस्थान के पहले राज्यपाल थे।
- 26 वें संविधान संशोधन 1971 द्वारा राजाओं के प्रीवीपर्स समाप्त कर दिये गये थे।

- 1 नवम्बर 2000 ई. को मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग किया गया था। अतः इस दिन राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य बन गया था।

☑ **राज्य पुनर्गठन आयोग -**

सदस्य- फजल अली (अध्यक्ष), हृदयनाथ कुंजरू, के.एम.पणिक्कर (बीकानेर से संविधान सभा के सदस्य)

राजस्थान के सामाजिक एवं राजनीतिक संगठन

1. आर्य समाज

- 1875 ई. में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बॉम्बे में आर्य समाज की स्थापना की थी।
- 1865 ई. में राजा मदनपाल के बुलाने पर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने करौली की यात्रा की थी। यह उनकी पहली राजस्थान यात्रा थी।
- 1881 ई. में इन्होंने भरतपुर की यात्रा की। इसी वर्ष अजमेर में आर्य समाज तथा जयपुर में **वैदिक धर्म सभा** स्थापित की गई।
- कवि राजा श्यामलदासजी के बुलाने पर इन्होंने मेवाड़ (उदयपुर) की यात्रा की।
- महाराणा सज्जन सिंह ने गुलाब बाग (उदयपुर) के नौलखा महल में रूकवाया था।
(यही पर स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण लिखा।)
- फरवरी 1883 ई. में उदयपुर में **परोपकारिणी सभा** की स्थापना की गई तथा महाराणा सज्जन सिंह को इसका सभापति बनाया गया। कालान्तर में इसे अजमेर स्थानान्तरित कर दिया गया था।
- अजमेर में **वैदिक यंत्रालय** स्थापित किया गया था।
- **सत्यार्थ प्रकाश** का प्रकाशन अजमेर से ही किया गया था।
- जोधपुर महाराजा जसवन्त सिंह द्वितीय तथा उनके प्रधानमंत्री सर प्रताप तथा राव राजा हनुवन्त सिंह भी स्वामी जी से प्रभावित थे।
- जसवन्त सिंह द्वितीय की प्रेमिका नन्हीं जान ने स्वामी जी को जहर दे दिया था। 30 अक्टूबर 1883 ई. में दीपावली के दिन अजमेर में स्वामीजी की मृत्यु हो गई थी।

☑ **आर्य समाज के कार्यकर्ता :-**

मेवाड़ -	विष्णु पंड्या
अलवर -	वासुदेव खंडेलवाल
जयपुर -	कल्याण सिंह, श्यामलाल
भरतपुर -	जुगल किशोर चतुर्वेदी, मास्टर आदित्येन्द्र
अजमेर -	चांदकरण शारदा (पुस्तकें- विधवा विवाह, दलितोद्धार), हरविलास शारदा, सुखदा देवी

- हरविलास शारदा के प्रयासों से 1929 ई. में बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम पारित किया गया जिसे शारदा अधिनियम भी कहा जाता है।
- हरविलास शारदा एक अच्छे इतिहासकार भी थे।

2. देश हितैषिणी सभा :-

- स्थापना - 2 जुलाई 1877 ई. (उदयपुर में)
- संस्थापक - महाराणा सज्जन सिंह
- यह राजस्थान में समाज सुधार की पहली संस्था थी। कालान्तर में अन्य रियासतों में भी ऐसे संगठन बनाये गये थे।

3. राजपूत हितकारिणी सभा :-

- स्थापना - 1889 ई. (अजमेर)
- संस्थापक - A.G.G. वॉल्टर
- वॉल्टर राजपूतों मे सामाजिक सुधार करना चाहता था। अतः इसके लिए उसने अजमेर में दो सम्मेलन आयोजित करवाये।
- सम्मेलन के निर्णय :-
    - बहू-विवाह समाप्त किये जाने चाहिए।
    - विवाह की न्यूनतम आयु (14 वर्ष व 18 वर्ष) तय की जानी चाहिए।
    - विवाह में होने वाले खर्च को सीमित किया जाना चाहिए।
    - त्याग प्रथा को समाप्त किया जाना चाहिए।
- कानूनी बाध्यता नहीं होने के कारण समाज सुधार के प्रयास लागू नहीं हो पाये थे। अतः 1936 ई. में इस संगठन को बंद कर दिया गया था।

4. वीर भारत सभा :-

- स्थापना - 1910 ई.
- संस्थापक - केसरी सिंह बारहठ
- यह अभिनव भारत की राजस्थान शाखा थी।

5. हिन्दी साहित्य समिति :-

- स्थापना- 1912 ई. (भरतपुर)
- संस्थापक - जगन्नाथ दास अधिकारी
- 1927 ई. में भरतपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था।
- सम्मेलन के अध्यक्ष - गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
- रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा जमनालाल बजाज ने इस सम्मेलन में भाग लिया था।

6. प्रताप सभा :-

- स्थापना - 1915 ई.
- संस्थापक - बलवन्त सिंह मेहता
- इस संगठन ने हल्दीघाटी मेला लगाना प्रारम्भ किया व प्रताप जयन्ती मनाना प्रारम्भ किया।

7. राजपूताना मध्य भारत सभा :-

- स्थापना - 1918 ई.
- स्थान - मारवाड़ी पुस्तकालय चाँदनी चौक (दिल्ली)
- मुख्यालय- अजमेर
- संस्थापक - जमनालाल बजाज, विजयसिंह पथिक, गणेश शंकर विद्यार्थी, चांदकरण शारदा, नरसिंह देव सरस्वती
- उद्देश्य - 1. राजनैतिक चेतना का संचार करना।
  2. उत्तरदायी शासन की स्थापना करना।
  3. रियासतों में कांग्रेस का प्रचार-प्रसार करना।

- अधिवेशन -
  1. 1918 - दिल्ली - गिरधर शर्मा
  2. 1919 - अमृतसर
  3. मार्च 1920 - अजमेर - जमनालाल बजाज
  4. दिसम्बर 1920 - नागपुर - गणेश नारायण सोमाणी
- इस अधिवेशन में N.C. केलकर को अध्यक्ष चुना गया था लेकिन वह सम्मेलन में आ नहीं पाये थे।
- इस अधिवेशन में किसानों की एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया था।
- इस अधिवेशन में इस संगठन को कांग्रेस की सहयोगी संस्था बना दिया गया था।

8. राजस्थान सेवा संघ :-

- स्थापना - 1919 ई. (वर्धा)
- संस्थापक -
  1. विजय सिंह पंथिक
  2. राम नारायण चौधरी
  3. हरि भाई किंकर
  4. केसरी सिंह बारहठ
  5. अर्जुन लाल सेठी।
- मुख्यालय - अजमेर
- उद्देश्यः -जनता की समस्या का समाधान करना।
  राजा तथा प्रजा के मध्य सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना करना।

9. राजपूताना हरिजन संघ :-

- स्थापना - 1934 ई.
- अध्यक्ष - हर विलास शारदा (चांदकरण शारदा के भाई)

10. खाण्डलाई (डूंगरपुर) आश्रम :-

- स्थापना - 1934 ई.
- संस्थापक - माणिक्य लाल वर्मा
- इस संगठन ने आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा को बढ़ावा दिया था।

11. महिला मण्डल :-

- स्थापना - 1935 ई. (उदयपुर)
- संस्थापक - दयाशंकर श्रोत्रीय

12. वागड़ सेवा मंदिर :-

- स्थापना - 1935 ई.
- संस्थापक - भोगीलाल पंड्या, गौरी शंकर उपाध्याय

13. वागड़ सेवा संघ :-

- स्थापना 1938 ई.
- संस्थापक - भोगीलाल पंड्या
- इस संगठन ने भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया था।

14. मारवाड़ लोक परिषद् -

- स्थापना - 1938 ई.
- संस्थापक - रणछोड़ दास गट्टानी
- उद्देश्य - 1. उत्तरदायी शासन की स्थापना
  2. राजनीतिक चेतना का संचार करना।
  3. अधिक करों का विरोध करना।
  4. महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।

15. मारवाड़ किसान सभा :-

- संस्थापक - बलदेव राम मिर्धा
- अध्यक्ष - मंगल सिंह कच्छावा
- प्रारम्भ में इस संगठन ने मारवाड़ लोक परिषद् का विरोध किया।

16. वनवासी सेवा संघ :-

- स्थापना - 1940 ई.
- संस्थापक - 1. भोगीलाल पंड्या 2. भूरेलाल बयां 3. राजकुमार मानसिंह
- यह संगठन माणिक्य लाल वर्मा की प्रेरणा से स्थापित किया गया।
- इस संगठन ने जनजातिय क्षेत्रों में शिक्षा को प्रोत्साहन दिया।

17. सर्व सेवा संघ :-

- संस्थापक - सिद्धराज ढड्डा।

18. महिला शिक्षा सदन :- (1945) ई.

- स्थान - हटूंडी (अजमेर)

19. मित्र मंडल :-

- संस्थापक - साधु सिताराम दास

राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी

1. अर्जुन लाल सेठी :-

- यह जयपुर के रहने वाले थे। इन्होंने महाराजा कॉलेज से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इन्होंने मथुरा की जैन पाठशाला में अध्यापन का कार्य किया था।
- चौमूं के सामन्त देवी सिंह के सचिव के रूप में कार्य किया था।
- जयपुर महाराजा माधोसिंह द्वितीय इन्हें प्रधानमंत्री बनाना चाहते थे लेकिन इन्होंने कहा था कि "यदि अर्जुनलाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को देश से बाहर कौन निकालेगा ।"
- 1905 ई. में इन्होंने जैन शिक्षा प्रचारक समिति की स्थापना की।
- 1907 ई. में जयपुर में वर्धमान पाठशाला की स्थापना की। यह क्रांतिकारियों की पाठशाला थी।
- 1912 ई. के दिल्ली षडयंत्र (बमकाण्ड) मुकदमे से जुड़े हुये थे।
- 1913 ई. के नीमेज हत्याकांड (आरा) में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था तथा वैलूर जेल भेज दिया गया।
- इन्होंने जेल में भूख हड़ताल की थी।
- इन्होंने गाँधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया था।
- राजपूताना तथा मध्यभारत में इन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया था।
- अपनी अजमेर यात्रा के दौरान गाँधीजी ने इनसे मुलाकात की थी।
- इन्होंने प्रसिद्ध क्रांतिकारी अशफाक उल्ला खाँ को जयपुर में शरण दी थी।
- अपने अंतिम दिनों में अजमेर की एक दरगाह में अरबी व फारसी पढ़ाया करते थे।
- मृत्यु के बाद इन्हें दफनाया गया था।
- पुस्तकें - 1. स्त्री मुक्ति 2. शूद्र मुक्ति
- नाटक :- महेन्द्र कुमार, मदन पराजय, पार्श्व यज्ञ

☑ **नीमेज हत्याकाण्ड के अन्य आरोपी :-**

- मोतीचन्द (फाँसी की सजा)
- विष्णुदत्त (काला पानी की सजा)
- जोरावर सिंह, जयचन्द - फरार
- माणिकचन्द, शिवनारायण - सरकारी गवाह

2. केसरी सिंह बारहठ :-

- जन्म स्थान - देरावरपुरा खेड़ा, शाहपुरा
- इन्होंने मेवाड़ तथा कोटा रियासतों में कार्य किया था।
- इनके कहने पर श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भी मेवाड़ रियासत में कार्य किया था।
- 1903 ई. में गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन ने दिल्ली दरबार का आयोजन किया था।
- मेवाड़ महाराणा फतेह सिंह इसमें भाग लेने के लिए दिल्ली जा रहे थे।
- इस समय केसरीसिंह बारहठ ने 13 दोहे लिखकर भेजे थे जिन्हें **"चेतावनी रा चूंगट्या"** कहा जाता है। इसे पढ़ने के बाद फतेह सिंह ने दिल्ली दरबार में भाग नहीं लिया था।
- कोटा रियासत में इन्हें सुप्रीडेन्ट ऑफ एथनोग्राफी बनाया गया था।

- 1912 ई. के कोटा के महन्त प्यारेलाल हत्याकांड में इनको गिरफ्तार कर लिया गया था तथा हजारीबाग (झारखण्ड) जेल भेज दिया गया था।
- महन्त प्यारेलाल हत्याकांड में अन्य आरोपी :- रामकरण, सोमदत्त लहरी, हीरालाल जालौरी, लक्ष्मी लाल भटनागर (सरकारी गवाह)
- कालान्तर में गाँधीजी के पास वर्धा (महाराष्ट्र) चले गये थे।
- **पुस्तकें -**
    1. प्रताप चरित्र
    2. राजसिंह चरित्र
    3. दुर्गादास चरित्र
    4. रूठी रानी चरित्र
    5. श्यामल दास जी की जीवनी
    6. बुद्धचरित का हिन्दी अनुवाद
    7. मैजिनी की जीवनी का हिन्दी अनुवाद (यह इटली का क्रांतिकारी था।)
- केसरी सिंह बारहठ के शिक्षा सम्बन्धी विचार-
    - अंग्रेजी की बजाय हिन्दी को वरीयता
    - मेयो कॉलेज के स्थान पर - क्षत्रिय कॉलेज
    - इंग्लैण्ड के बजाय जापान जाना चाहिए।
- इन्होंने 1910 ई. में वीर भारत सभा की स्थापना की।

3. जोरावर सिंह बारहठ :-

- यह केसरी सिंह बारहठ के छोटे भाई थे।
- यह दिल्ली षड्यंत्र (बमकाण्ड) मुकदमा तथा **नीमेज हत्याकांड** से जुड़े हुए थे लेकिन अंग्रेज इन्हें गिरफ्तार नहीं कर सके।
- इन्होंने अपना अंतिम समय **अमरदास बैरागी** के रूप में बिताया गया।

4. प्रतापसिंह बारहठ :-

- यह केसरी सिंह बारहठ के पुत्र थे।
- यह दिल्ली षड्यंत्र मुकदमा से संबंधित थे।
- इन्हें बनारस षड्यंत्र मुकदमें में गिरफ्तार किया गया था। (1917 ई. में)
- पुलिस प्रताड़ना के कारण बरेली जेल में इनकी मृत्यु हो गई थी।
- अंग्रेज अधिकारी चार्ल्स क्लीवलैण्ड ने प्रतापसिंह की हिम्मत की प्रशंसा की थी।
- बीकानेर रियासत ने इनके प्रवेश पर पाबंदी लगाई थी।

5. ईश्वर दान आसियां :-

- यह केसरी सिंह बारहठ के दामाद थे।
- यह दिल्ली बमकांड से सम्बन्धित थे।

क्रांतिकारी रासबिहारी बोस ने केसरी सिंह बारहठ के परिवार की प्रशंसा की थी।

6. राव गोपालसिंह खरवा :-

- यह खरवा (अजमेर) के सामंत थे।
- रास बिहारी बोस पूरे भारत में एक साथ सशस्त्र क्रांति करना चाहते थे तथा इसके लिए 21 फरवरी 1915 का दिन तय किया गया था।
- राजस्थान में इसकी जिम्मेदारी राव गोपालसिंह खरवा को दी गई।
- इन्होंने अजमेर तथा जोधपुर के राजपूत सैनिकों को क्रांति के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन अंग्रेजों को इस योजना का पता चल गया था। अतः इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तथा इन्हें टॉडगढ़ जेल (अजमेर) में रखा गया। लेकिन यह जेल से फरार हो गये।
- अंग्रेजों ने इन्हें पुनः गिरफ्तार किया तथा अजमेर जेल भेज दिया। कालान्तर में इन्हें शाहजहाँपुर/तिहाड़ जेल (U.P.) में भेज दिया गया।

7. विजय सिंह पथिक :-

- जन्म स्थान - गुठावली (बुलन्दशहर, UP)
- वास्तविक नाम - भूपसिंह
- रास बिहारी बोस ने इन्हें राजस्थान में क्रांति के लिए भेजा था।
- प्रारम्भ में गोपाल सिंह खरवा के सहयोगी थे।
- अंग्रेजों ने इन्हें गिरफ्तार कर टॉडगढ़ जेल मे रखा। लेकिन यह जेल से फरार हो गये थे।
- इन्होनें ओछड़ी (चित्तौडगढ़) में विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना की।
- इन्हें राजस्थान में किसान आंदोलनों का जनक कहा जाता है।
- इन्होंने वीर भारत समाज की स्थापना की थी।
- **पुस्तकें** - (1) अजयमेरू, (2)What are the Indian states?

8. बालमुकुन्द बिस्सा :-

- जन्म - पीलवा (नागौर) में
- नागौर में 'चरखा संघ' तथा 'खादी भण्डार' की स्थापना की।
- जोधपुर में जवाहर खादी भण्डार की स्थापना की।
- 19 जून 1942 ई. को जोधपुर जेल में भूख हड़ताल के दौरान इनकी मृत्यु हो गई थी।
- इन्हें **राजस्थान का जतिनदास** कहा जाता है।

बालकृष्ण कौल ने अजमेर जेल में भूख हड़ताल की थी।

9. सागरमल गोपा :-

- यह जैसलमेर के रहने वाले थे।
- इन्होंने राजतंत्र तथा अंग्रेजी शासन का विरोध किया था।
- **पुस्तकें** - 1. आजादी के दीवाने, 2. जैसलमेर का गुंडाराज, 3. रघुनाथ सिंह का मुकदमा
- जैसलमेर तथा हैदराबाद रियासतों ने इनके प्रवेश पर पाबंदी लगा दी थी।
- कालान्तर में इन्हें जैसलमेर में गिरफ्तार कर लिया था।
- इन्होंने जवाहरलाल नेहरू, शेख अब्दुल्ला तथा जय नारायण व्यास को पत्र लिखे थे।
- 4 अप्रैल 1946 ई. को इनको जेल में जिन्दा जला दिया गया।
- इस हत्या की जाँच के लिए 'गोपाल स्वरूप पाठक आयोग' बनाया गया।

10. रमेश स्वामी :-

- बेगार विरोधी आंदोलन के दौरान 5 फरवरी 1947 ई. को भुसावर (भरतपुर) में इनकी हत्या कर दी गई थी। (बस द्वारा कुचलकर)

11. शांतिलाल व आनन्दीलाल :-

- 5 अप्रैल 1948 ई. को उदयपुर में पुलिस फायरिंग में इन दोनों की मृत्यु हो गई थी।

12. रामकरण लूणकरण व खूबराम :-

- 20 मई 1948 ई. को मोरीजा (जयपुर) में पुलिस फायरिंग में शहीद हो गये थे।

13. ज्वाला प्रसाद शर्मा :-

- यह अजमेर के निवासी थे।
- यह H.S.R.A.के सदस्य थे।
- इन्होंने कई क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया था।

जैसे - (i) मेयो कॉलेज बमकाण्ड

(ii) डोगरा काण्ड

(iii) अजमेर रेल हड़ताल

14. दामोदर दास राठी :-

- यह पोकरण (जैसलमेर) के निवासी थे।
- इन्होंने ब्यावर में कई संस्थाओं की स्थापना की थी -
  - कृष्णा मिल (सूती कपड़े की मिल)
  - नागरी प्रचारिणी सभा
  - सनातन धर्म विद्यालय
  - होम रूल लीग
- इनके कहने पर अजमेर के कमीश्नर ने कार्यालयों में हिन्दी भाषा के प्रयोग की अनुमति दी थी।
- स्वतंत्रता सेनानियों को धनराशि प्रदान करते थे।

1. दामोदर दास राठी
2. नृसिंह दास अग्रवाल
3. धीसूलाल जाजोदिया

} स्वतंत्रता संग्राम के भामाशाह

15. हरिभाऊ उपाध्याय :-

- 1945 ई. में हटूंडी (अजमेर) में **महिला शिक्षा सदन** की स्थापना की।
- समाचार पत्र - त्याग भूमि
- 1927 ई. में अजमेर से प्रकाशित होता था।
- इसमें गाँधीवादी विचारों को प्रोत्साहन दिया जाता था।
- महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जाता था।

16. जमनालाल बजाज :-

- जन्म स्थान - काशी का बास (सीकर)
- इन्हें **गाँधीजी का पाँचवां पुत्र** कहा जाता है।
- इन्हें **गुलाम नम्बर-4** भी कहा जाता है।
- असहयोग आंदोलन के दौरान तिलक स्वराज फंड में 1 लाख रूपये जमा करवाये थे।
- असहयोग आन्दोलन के दौरान जमनालाल बजाज ने अपनी राय बहादुर की उपाधि लौटा दी थी।
- बजाज ने मुस्लिम लीग को 11 हजार रूपये दिये थे।
- 1927 ई. में बलवन्त सांवलाराम देशपांडे के साथ मिलकर अमरसर जयपुर में **चरखा संघ** की स्थापना की।

17. हीरालाल शास्त्री :-

- 1927 ई. में निवाई (टोंक) में जीवन कुटीर की स्थापना की थी।
- जीवन कुटीर को कालान्तर में वनस्थली विद्यापीठ में बदल दिया गया, जो कि महिला शिक्षा के लिए समर्पित संस्थान है।
- वनस्थली विद्यापीठ अपनी पंचमुखी शिक्षा के लिए जाना जाता है।
- गीत - 'प्रलय प्रतीक्षा नमो नमो'
- आत्मकथा - 'प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र'

18. अंजना देवी चौधरी :-

- जन्म स्थान - श्रीमाधोपुर (सीकर)
- इन्होंने मेवाड़ तथा बूँदी के किसान आंदोलनों में भाग लिया था।
- इन्हें नमक सत्याग्रह में गिरफ्तार कर लिया गया था।
- यह रियासती राजस्थान की प्रथम महिला थी जिन्हें स्वतंत्रता संग्राम में गिरफ्तार किया गया था।

19. रमा देवी जोशी :-

- जन्म स्थान - जयपुर
- पति- लादूराम जोशी (विधवा पुनर्विवाह)
- बिजोलिया किसान आंदोलन के दौरान इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था तब इन्होंने जवाब दिया था कि **"जब तक किसानों पर अत्याचार समाप्त नहीं होगें मैं यहाँ बार-बार आती रहूँगी।"**
- इन्हें सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी गिरफ्तार किया गया था।

20. जानकी देवी बजाज :-

- जन्म स्थान- जावरा (मध्यप्रदेश)
- इन्होंने अपना लम्बा समय वर्धा में बिताया था।
- 1944 ई. में इन्हें जयपुर प्रजामण्डल का अध्यक्ष बनाया गया था।
- इन्हें गौ सेवा आयोग का भी अध्यक्ष बनाया गया था।
- इन्होंने विनोबा भावे के भूदान आंदोलन में भी भाग लिया था।
- इन्होंने 108 कुँओं का निर्माण करवाया था।

- 1956 ई. में इनको पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। (राजस्थान में प्रथम)

21. रतन शास्त्री

- जन्म स्थान- खाचरोद (मध्यप्रदेश)
- जयपुर प्रजामण्डल के सत्याग्रह में भाग लिया था।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान इन्होंने भूमिगत कार्यकर्त्ताओं तथा उनके परिवारों की सेवा की थी।
- 1955 ई. में इन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। (राजस्थान की प्रथम महिला)
- 1975 ई. में इन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

22. नारायणी देवी वर्मा :-

- जन्म स्थान - सिंगोली (मध्यप्रदेश)
- 1944 ई. में इन्होनें भीलवाड़ा में महिला आश्रम की स्थापना की थी।
- इन्हें राज्यसभा का सदस्य बनाया गया था। (1972-76 ई.)

23. शान्ता त्रिवेदी :-

- यह उदयपुर से सम्बन्धित थी।
- इन्होंने कहा था **"आर्थिक अधिकारों के बिना महिलाओं के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।"**
- 1947 ई. में उदयपुर में राजस्थान महिला परिषद् की स्थापना की थी।

24. सुशीला त्रिपाठी -

- जब भरतपुर प्रजामण्डल का पंजीकरण नहीं किया गया था तब इसके खिलाफ आंदोलन चलाया था। इस आंदोलन के दौरान इन्हें जेल भेजा गया था।

25. सावित्री देवी भाटी-	-	**जोधपुर**
26. महिमा देवी किंकर	-	**जोधपुर**
27. रमा कौर	-	**जोधपुर**
28. सिरे कंवर	-	**जोधपुर**
29. कमला स्वाधीन	-	**कोटा**
30. कुसुम गुप्ता	-	**कोटा**
31. प्रकाशवती सिन्हा	-	**अजमेर**
32. दुर्गावती शर्मा	-	**जयपुर**
33. सरस्वती बोहरा	-	**भरतपुर**

राजस्थान के मुख्य समाचार पत्र

1. **मजहरूल सरूर**
    - 1849 में भरतपुर राज्य द्वारा हिन्दी व उर्दू में प्रकाशित।
2. **जोधपुर गवर्नमेंट गजट**
    - 1864 में जोधपुर राज्य द्वारा प्रकाशित।
3. **मारवाड़ गजट**
    - 1866 ई. में जोधपुर राज्य द्वारा प्रकाशित।
4. **मरूधर मित्र**
    - 1866 में जोधपुर राज्य द्वारा प्रकाशित।
5. **उदयपुर गजट**
    - 1869 में मेवाड़ राज्य द्वारा प्रकाशित।
    - 1879 में मेवाड़ महाराणा सज्जन सिंह ने नाम बदलकर **"सज्जन कीर्ति सुधाकर"** कर दिया।
    - पहला साप्ताहिक समाचार पत्र।
6. **सर्वहित**
    - 1890 में बूंदी राज्य द्वारा प्रकाशित।
    - इसमें 'मुद्रण संख्या' लिखी जाती थी।
7. **राजपूताना अखबार (रोजतुल तालीम)**
    - 1856 में कन्हैयालाल द्वारा जयपुर से हिन्दी व उर्दू मे प्रकाशित।
8. **देश हितैषी**
    - 1882 में मुन्नालाल वर्मा द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
9. **राजपुताना गजट**
    - 1885 ई. में मौलवी मुरादअली 'बीमार' द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
    - सरकार की आलोचना करने के कारण इन्हें जेल भेज दिया गया।
    - मोती बेगम नामक महिला पत्रकार भी इससे जुड़ी हुई थी।
10. **राजपूताना हेराल्ड**
    - 1885 में हनुमानसिंह द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
    - यह अंग्रेजी का पहला समाचार पत्र था जिसने राजनीतिक चेतना का संचार किया था।
    - इसने A.G.G. पॉलेट तथा जोधपुर के प्रधानमंत्री सर प्रताप की आलोचना की थी।
11. **राजस्थान समाचार**
    - 1889 में मुंशी समर्थदान चारण द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
    - पहले यह साप्ताहिक समाचार पत्र था लेकिन 1904 में इसे दैनिक कर दिया गया।
    - पहले यह आर्य समाज का समाचार पत्र था लेकिन बाद में यह राजनीतिक खबरें भी प्रकाशित करता था।
    - 1896 में अंग्रेजों ने झालावाड़ के शासक जालिमसिंह-II को हटा दिया था अतः इस समाचार पत्र ने इस घटना की आलोचना की थी।
12. **राजस्थान केसरी**
    - अक्टूबर 1920 में विजयसिंह पथिक द्वारा वर्धा से।
    - नामकरण - केसरीसिंह बारहठ के नाम पर
    - जमनालाल बजाज - वित्तीय सहायता
    - सम्पादक - विजयसिंह पथिक

- उपसम्पादक – रामनारायण चौधरी
- जब विजयसिंह पथिक अजमेर आ गये थे तब सत्यदेव विद्यालंकार ने इसका प्रकाशन किया था।
- कालान्तर में इसे अजमेर से भी प्रकाशित किया गया था।
- 1922 में इसे बन्द कर दिया गया।

13. नवीन राजस्थान

- 1922 में विजयसिंह पथिक द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
- सम्पादक – किशोरसिंह वर्मा
- **ध्येय वाक्य –**

  यश वैभव की चाह नहीं,
  चाह नहीं जीवन रहे न रहें।
  चाह है तो वह यह है,
  जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।।

- यह राजस्थान सेवा संघ का मुख्य समाचार पत्र था।
- 1923 में इस समाचार पत्र पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसलिए इसे तरूण राजस्थान नाम से प्रारंभ किय गया।

14. तरूण राजस्थान

- 1923 में रामनारायण चौधरी, शोभालाल गुप्त द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
- इसमें किसान आन्दोलनों की खबरें प्रकाशित।
- मदनसिंह व नयनूराम शर्मा भी इससे जुड़े हुए थे।
- इसे जयनारायण व्यास ने ब्यावर से प्रकाशित किया था।

15. यंग राजस्थान

- 1929 में रामनारायण चौधरी, शोभालाल गुप्त द्वारा अजमेर से प्रकाशित।

16. आर्य मार्तंड

- 1923 में रामसहाय शर्मा अजमेर से।
- इसमें विधवा विवाह के लिए निःशुल्क विज्ञापन प्रकाशित।

17. राजस्थान/राजस्थान वीकली

- 1923 ई. में ऋषिदत्त मेहता ब्यावर से प्रकाशित करते थे।
- यह साप्ताहिक समाचार पत्र था, जो हाड़ौती क्षेत्र में जागरूकता के लिए चलाया गया था।

18. लोकवाणी

- 1943 ई. में।
- देवीशंकर तिवाड़ी जयपुर से प्रकाशित थे।
- जमनालाल बजाज की याद में शुरू किया गया।

19. त्याग भूमि

- 1927 में हरिभाऊ उपाध्याय, क्षेमानन्द राहत द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
- गाँधीवादी विचारधारा को प्रोत्साहन।
- इसमें 64 में से 16 पृष्ठ महिलाओं के लिए (आधी दुनिया)

20. नवज्योति

- 2 अक्टूबर 1936 – रामनारायण चौधरी – अजमेर से।
- कालान्तर में कैप्टन दुर्गाप्रसाद चौधरी (भाई) द्वारा

21. नवजीवन
- 1939 में नारायणसिंह, कनक मधुकर द्वारा अजमेर से प्रकाशित।

22. प्रजासेवक
- 1940 में अचलेश्वर प्रसाद शर्मा - जोधपुर से

23. जयभूमि
- 1940 गुलाबचंद काला - जयपुर से

24. जयपुर समाचार
- 1942 श्यामलाल शर्मा - जयपुर से

25. राजस्थान हेराल्ड
- 1942 केसरलाल जैन - जयपुर से

26. प्रचार
- 1942 प्रियतम कामदार - अजमेर से
- ध्येय वाक्य - चोर, पापी तथा उल्लू अंधेरा चाहते हैं
  लेकिन प्रचार पब्लिक की सर्चलाइट है।

27. रियासती
- सुमनेश जोशी - जोधपुर से
- इसने जोधपुर के पाकिस्तान में विलय की खबर को प्रकाशित किया था।

28. वैभव
- जगन्नाथदास

29. विश्वामित्र
- फूलचंद अग्रवाल - कलकत्ता से
- समाजसुधार से संबंधित खबरें प्रकाशित।

30. विजय
- जैसलमेर से

31. जयहिन्द
- कोटा से